(१५३)

महोपाध्याय

श्रीवीरविजयजी महाराजनुं

जीवन चरित्र.

संशोधक—मुनिश्री रामविजयजी.

छपावी प्रसिद्ध कर्ता बीकानेर निवासी

बाबुजी सुमेरमलजी सुराना.

आवृत्ति १ ली. सन १९२१.

विक्रम संवत् १९७७

वीर संवत् २४४७. आत्म संवत् २५.

किंमत अमूल्य.

महोपाध्याय

श्रीवीरविजयजी महाराजनुं

जीवन चरित्र.

संशोधक-मुनिश्री रामविजयजी.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता बीकानेर निवासी

बाबुजी सुमेरमलजी सुराना.

आवृत्ति १ ली. प्रत १५००.

विक्रम संवत् १९७७.

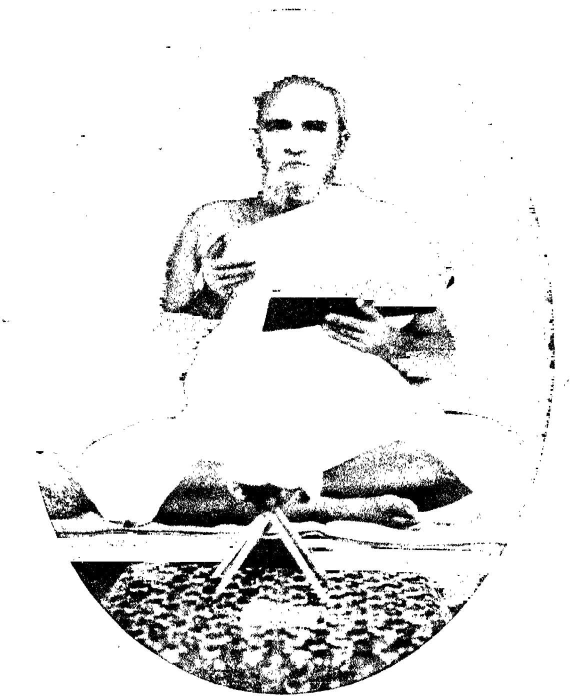
वीर संवत २४४७. आत्म संवत २५.

श्रीजैन विद्याविजय प्रीन्टीग प्रेसमां शा. पोपटलाल

अमथाशाहे छाप्युं, रीचीरोड-अमदावाद. नं. ११६

किंमत अमूल्य.

न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरशिष्य-



महोपाध्यायजी श्रीवीरविजयजी.
महाराज.

श्रीमद्-वीरवाचक-गुणस्तुत्यष्टकम् ।

"शिखरिणीवृत्तम्"

भवोदन्वन्मज्जद्भविजनतते रक्षणकृते,
श्रियोपेतं जन्माश्रयत विबुधासेव्यचरणः ।
गजाभ्राङ्केद्वब्दे (१९०८) हरिरिव मुनिर्यः क्षितितल,
उपाध्यायं वन्दे तमनुदिवसं वीरविजयम् ॥१॥

यदीयं सौभाग्यं शुभमकथनीयं च वचसा,
यदीयं वैराग्यं त्रिभुवनजनाश्चर्यजनकम् ।
यदीयं सद्भाग्यं भवजलधिनिस्तारचतुर-
मुपाध्यायं वन्दे तमनुदिवसं वीरविजयम् ॥२॥

गृहं कारागारं मनसि युवतिं बन्धनमिव,
विभाव्याशु त्यक्त्वा कनकनिकरं लोष्ठमिव यः ।
व्रतं लेभेऽङ्काऽग्न्यङ्क शशि (१९३५) शरदि प्रोज्ज्वलतपा,
उपाध्यायं वन्दे तमनुदिवसं वीरविजयम् ॥३॥

कलाकेलिस्थानं सुमतिनिलयं क्षान्तिसदनं,
प्रतापस्य स्थानं वसतिममलां धर्म्मनृपतेः ।
गृहं सन्तोषस्याऽमलगुणततेर्वासभवन-
मुपाध्यायं वन्दे तमनुदिवसं वीरविजयम् ॥४॥

प्रबोधं भव्यानां ददद्मृतगुर्योऽमलकला,
निवासस्तेजस्वी जगति विचरन् शुद्धहृदयः ।
हयाङ्गाङ्केद्वब्दे (१९५७) ऽलभत पदवीं नष्टदुरित,
उपाध्यायं वन्दे तमनुदिवसं वीरविजयम् ॥५॥

पटिष्ठं सिद्धांते मुनिजनगरिष्ठं च विदुषां,
वरिष्ठं श्रीश्रेष्ठं विमलगुणजुष्टं सुमनसम् ।
हरन्तं द्राघिष्ठां भवजलधिभीतिं भवभृता
मुपाध्यायं वन्दे तमनुदिवसं वीरविजयम् ॥६॥

विहायाङ्गस्नेहं सकलजनता क्षामणविधिं,
विधायानन्दाप्तो विमलत[illegible] यो गुणनिधिः ।
शराश्वाङ्कक्षोणिप्रमि[illegible] [illegible]७५[illegible] [illegible]रदि स्वर्गमगम-
दुपाध्यायं वन्दे तमनु[illegible] [illegible] ॥७॥

यदीया नर्नर्तोन्दुकिरणसमूहातिविमला,
जगत्यां सत्कीर्त्तिर्भविजनहृदानन्दकरणी ।
गुणाम्भोधिं विद्यालयममृतवाचं मुनिपति-
मुपाध्यायं वन्दे तमनुदिवसं वीरविजयम् ॥८॥
" अमरविजयपादाम्भोजभृङ्गायमान,-
श्चतुरविजय एतत् पौषकृष्णस्य षष्ठ्याम् ।
रसमुनिनिधिचन्द्रे (१९७६) ऽब्दे,छ्रकं वैक्रमीये,
दिनकरदिवसे सद्भक्तिरागाच्चकार ॥९॥ "

" शार्दूल विक्रीडित "

" श्रीमद्विजयानन्द वंद्य वसुधा जे धर्मधुरंधरा,
पुण्यात्मा प्रतिभा प्रभावकधरा साहित्यना साक्षरा ।
प्रांते शासनद्योत श्रेष्ठ करीने स्वर्गे सिधाव्या सूरी,
ते सूरीश्वर पादपंकज नमो आनंदकंदे करी ॥१॥
" ते सूरीश्वर शिष्य वीरविजया जे वाचका साक्षरा,
सादा शांत सुदांत क्षांति गुणथी शोभे सदा जे धरा ।
भक्ति देव गुरु तणी अति करी जे शिष्यने उद्धरे,
स्वर्गे तेह सिधावीया नमुं सदा जे पाप तापो हरे ॥२॥"

" क-सां-वी. "

उपाध्यायजी महाराजनी स्तुति ।

" शार्दूल विक्रीडित. "

श्री शंखेश्वर पास आश पुरजो स्वामी करुं विनती,
ज्ञानीने शुभ शांत दांत उवज्झायानी करुं आ स्तुति;
श्रीमद् विजयानंदसूरि उवज्झाया वीर वंदु मुदा,
पापोना परिताप जाय प्रभुता शाता वधे संपदा ॥१॥

" वंसत तिलका छंद "

श्रीवीरशासन विषे समुद्योतकारी,
सादा सदा सरलता समता स्विकारी ।
संसार कानन वटी स्वर्गे सिधाव्या,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ १ ॥

जे सूरि योग्य युवराज समा महंता,
जे शांत दांत अणगार सदा दीपंता ।
राजासु रंक सकळेज अभेद दाया,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ २ ॥

जे सारणादिक सदा गणनी करंता,
सज्झाय ध्यान धरता सुसदा ठरंता
सूत्रार्थ देइ शिष्यने करता सवाया,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ ३ ॥

वादी मतंगज हरी शुभ ज्ञान दाता,
निर्यामका भवजले तरी भ्रात त्राता ।
गुणो पचीश प्रभुता सुखदा निपाया,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ ४ ॥

जेना पसाय नवपल्लव शिष्य थावे,
भूला पड्या भववने शुभ पंथ लावे ।
ते वीरकुंजर महामुनिमां गवाया,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ ५ ॥

मीठा पिता सुकुळ भाण सुराम माता,
ते वीरजी तनय जे जगमां गवाता ।
पूर्वाश्रमे गुरु रह्या पडवा सुठाया,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ ६ ॥

संगीत जाण प्रतिभा सुर ताल साधे,
मीठा स्वरे ललित गाय प्रमोद वाधे ।
सोना समान जसवान सदा सवाया,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ ७ ॥

एवा सुवाचक तणा गुणग्राम गातां,
पापो अमाप भव ताप मटे अशाता ।
जेनी न जोड जगमां धन्य गुरुराया,
श्रीवीरविजय नमो गुरु ऊवज्झाया ॥ ८ ॥

—" कवि–सांकलचंद "



बाबूजी सुमेरमलजी सुराणा-बिकानेर.

॥ ॐ ॥

॥ प्रकाशक महोदयका टुंक परिचय ॥

प्रिय पाठको !

आप इस ग्रन्थके प्रारम्भमें जिन दो चित्ताकर्षक चित्रोको निहार रहे हैं उनमें पहला चित्र हमारे इस चरित्र के नायक महोपाध्याय श्रीवीरविजयजी महाराजका है। उन महात्माश्रीका परिचय आपको इस चरित्र द्वारा मिलेगा और दूसरे चित्रवाले महानुभावका हम यहां टुंक परिचय देते हैं। आपका नाम जैनसमाजमें अपने उच्च-आदर्शनीय कर्तव्योंके कारन बहुत ख्याति पा रहा है। आप सुराना-ओसवाल जातिमें बीकानेर के एक प्राचीन माननीय धनाढ्य, स्वर्गस्थ शेठ धरमचन्द्रजीके पौत्र है। आपके पिता श्रीमान् शेठ श्रीचन्द्रजी साहिब बहुत विशाल अवस्थामें योग्य पुत्र द्वारा सारे सुखोंको पाये हुवे धर्म क्रियामें अपना समय लगा रहे है। श्रीमान् बाबू सुमेरमलजीका जन्म विक्रम संवत् १९३१ के मागशीर्ष कृष्ण ९ को शुभ समयमें हुवा है। आपने इस भूतलपर जन्म लेकर अपने तन मन द्वारा न्यायसे द्रव्यो-

पार्जन किया है और उसमेंसे लक्षोंही रुपये सद्कार्योंमें खरच किये हैं। वर्तमानमें आपकी दानवीरताका गुण बहुत विशाल होगया है उत्तरोत्तर वृद्धिही पानेका निश्चय है आप हर समय " आत्माकी भलाई किस तरह हो " इस फिक्रमें लगे रहते हैं। धन, तन और मन तीनोंको आत्महित के लिये भोग देनेको तैयार रहते हैं।

आपको धर्मके प्रति असाधारण प्रेम हैं आप तीर्थयात्रा और गुणिजन ऋषि मुनियोंके दरशन और समागमके लिये हर समय पिपासु बने रहेते हैं। अवसर पातेही तुरत मुनि समागम और तीर्थ दरशनका लाभ लेनेको निकल पडते हैं! आपको ज्ञानसे बहुत प्रेम हैं, आप ज्ञान प्रचारके लिये तन मन और धनसे सदा सहायता करते रहते हैं * आप हमारे इस चरित्रके नायक महोपाध्याय

---

* नोट आपने बीकानेर जैन पाठशालाके फण्डमें २१०००) इकीसहजार रुपये भरे हैं, आपकी मददसे ओसीयाका बोर्डिंग चल रहा है, कइ संस्थायें चल रही है कहाँतक गिनायें अवसर आयातो विस्तृत जीवन लेकर आवेंगे और पाठकोंको तृप्त करेंगे!

श्री वीरविजयजी महाराजके परम भक्त हैं, जहां २ पर हमारे चरित्र नायक विराजतेथे आप वहीं जाते थे और तन, मन, धनसे गुरु भक्ति कर अपना जीवन सफल करनेथे ! हमारे श्री चरित्रनायकभी इन्हे योग्य पात्र समझकर खूब प्रेमके साथ चुन चुन कर उपदेश देते थे और यह उसे हंसकी तरह झट चुगलेते थे जो अभी इनके पास व्याज द्वारावृद्धि पा रहा है। इन्हेभी अगर कोइ योग्य पुरुष मिल जाता है तो यहभी उसे प्रेम पूर्वक वह चुने हुवे उपदेश रुपी मोती देने लगते हैं आपके पास कोईभी आता है उसे आप पहले "सामायक करतेहो या नहीं जिन दरशन पूजा करतेहो या नहीं रात्रि भोजन तो नहीं करते हो?" इत्यादि बातें पूछते है और उसे यथायोग्य प्रतिज्ञा करवाकर अपना और परका कल्याण करते हैं। आपके उपदेशका, प्रेरणाका, बेहद प्रभाव पडता है। आप शुद्ध अन्तकरणसे उपदेश करते है इस लिये वह श्रोताके दिलपर स्थाई मुकाम पाजाता है इस तरह आपने इस लेखक जैसे कईयोंको सदूमार्ग पर लगाया है! आप चतुर्थ व्रतधारी—आदर्श ब्रह्मचारी है। आप एक

क्रिया शील सज्जन है । आप क्षमावंत, संयमी, सदाचारी, धर्मात्मा दानवीर, ज्ञानप्रेमी, क्रियानिष्ट सज्जन और जैनसमाजमें एक प्रभावशाली अमूल्य रत्न है । आपको गरीबोंकी, स्वधर्मीयोंकी और आत्माकी सेवा करनेका भारी व्यसन है । आपको गृहस्थ सम्बन्धी सर्व प्रकारका सुख है जिससे धर्म मार्ग निष्कंटक है । आपके एक आज्ञाकारी पुत्र है जिनका नाम बाबू मेघराजजी है । मेघराजजी के दो पुत्र और एक पुत्री है पहेले पुत्रका नाम वृद्धिचन्द्र दूसरेका तेजकरण और तीसरी पुत्रीका नाम बाई लक्ष्मी है । वृद्धिचन्द्रपर हमारे इन टुंक परिचित महानुभावका अधिक स्नेह है और आशा है यह बालक भविष्यमें गुणोसे इनका स्थान पावेगा । आपको "बुद्धिका फल तत्वका विचार करना, देह पायेका सार व्रतधारन करना, द्रव्य पायेका सार सद्पात्रमें दान करना, और जिव्हा पायेका फल सुशब्दो द्वारा आत्म हित करना है" इन वाक्योंपर असीम प्रेम हैं । आपने समझ लिया है कि "लक्ष्मी अस्थिर है यदि दान या भोगमें काम न लीजायगी तो नाश अवश्य होगी" आपने

समझ लिया है कि " शरीर अनित्य है यदि इससे आत्म हितमें सहायता न लीजायगी तो यह एक दिन उल्टा आत्माको भारी कर नाश हो जायगा " आपने जान लिया है कि मनका वेग हर समय विचार करनेमें ही घूमता रहता है तो फिर बुरे विचार कर आत्माकी भलाईमें बाधा क्यों पहुंचानी " इन बातों पर अधिक विचार रखने के कारण आप इतनी उच्च स्थितिको प्राप्त हुये हैं। आशा है हमारे पाठक भी कुछ ध्यान देंगे। हम शासन देवसे प्रार्थना करते हैं कि जैनसमाजमें ऐसे नर रत्न बढ़ें।

ले. रूपचन्दजी सुराना-कलकत्ता.

॥ आदर्श-साधु-जीवन ॥

यानें

महोपाध्याय-श्रीमद्--वीरविजयजी महाराजनुं जीवनवृत्तांत.

"श्रीमते धर्मवीराय, ज्ञानवीराय योगिने ।
नमो वाचकवीराय, वीरभक्तिविलासिने ॥१॥"

जीवनचरित्रहेतु.

आ भारतभूमि रत्न प्रसविनी छे, अनेक नररत्नोनी जननी छे. प्रतिभाशाली, ज्ञानशाली अने शौर्यशाली अनेक नरसिंहोए पोताना पराक्रमनी गर्जनाथी आ भूमिने गजावी छे. स्वर्गीयसुखना आनंदने अनुभः

वनारा विमानवासी आत्माओ पण आ मानवभूमिने उच्चमार्गे थइ मुक्तिपुरी तरफ वळी शके छे. मनुष्यशक्तिना अविनश्वर कीर्तिस्तंभो आ भरतक्षेत्रनी भूमि उपर रोपाया छे. एवी आ भारतभूमि उपर प्रगट थयेला महान् उत्तम पुरुषोना जीवनचरित्रो अनेकांशे आलोक तथा परलोकना परमउच्चमार्गोने दर्शावनारा थइ पडे छे. एक सामान्यजातिना कुलमां अवतरण करी अनुक्रमे जीवननी घटना केवा उच्चप्रकारनी बनावी शकाय छे ? अने मनुष्य जीवनना उच्च हेतुओ सिद्ध करवामां अने छेवटे आत्मसहायी थइ समाजसेवानां कार्यो साधी आत्मकल्याणना सन्मार्ग तरफ केवी रीते वळाय छे. ? इत्यादि कृतकृत्य पुरुषरत्नोना जीवनचरित्रो उपरथी अनेक प्रकारना शिक्षासूत्रो मेळवी शकाय छे तेथी ते सर्व मनुष्योए अंतरमां धारणीय, अने सुखप्रद छे; कारण के ते आत्मानी गुणसंततिना उत्पादक छे. माटेज कविओ कहे छे के—

" तज्जीवनं भवति यद्विलसत्प्रभावं,
सद्धर्मसाधनपरोपकृतिप्रचारैः ।

सच्छास्त्रबोधविमलात्मगुणप्रकाशं,

संपादितोच्चतरमानवजन्महेतु ॥ १ ॥"

"जे जीवन सद्धर्मना साधनरुप एवा परोपकारोना प्रचार करवाथी प्रभावक होय, जे जीवन सारा शास्त्रोना बोधथी निर्मल एवा आत्माना गुणोने प्रकाश करनारुं होय अने जे जीवन मनुष्यजन्मना उंचा हेतुओने संपादन करनारुं होय तेज खरुं जीवन गणाय छे."

जीवन चरित्रनो आवो उपयोग लक्षमां लइ आ जीवनवृत्तांतनी योजना करवामां आवी छे.

" " " " "

जन्मभूमिनी भूमिका

आ जीवनवृत्तना नायक जे देशमां प्रगट थया अने तेमना जीवनवृक्षनुं बीज ज्यां रोपायुं, उछर्युं अने पल्लवित थयुं, ते देश भारतक्षेत्रनुं आभूषणरुप गणाय छे अने भारतना सर्वराष्ट्रोमां

शुभ होवाथी ते सुराष्ट्रनी पदवीने प्राप्त थयेल छे, ते सुराष्ट्र-देश उपर जैनधर्मना महात्माओ विचरी मोक्ष भूमिना पथिक बन्या छे. जेमां सिद्धगिरि अने रैवतगिरि जेवा पवित्र पर्वतो मोक्षना मेहेल उपर चडवाने सोपान रुपे देखाय छे. विमानना जेवा अने गगनचुंबी शिखरोवाळा मनोहरचैत्योथी जे देश जगतमां सर्वदेशोनुं साम्राज्यपद भोगवे छे. एक समये भगवान् तीर्थंकरोए, गणधरोए अने मुनिवरोए पोतानी गंभीर-देशनाथी जे देशनी भूमिने गजावी मुकी हती, महान् शक्ति-वाळा विद्याधराए ज्यां अद्भुत दिव्यशक्ति दर्शावी हती. ज्यां प्रतापी पांडवोए भारतनी विजयमाळ धारण करी भारतनुं साम्राज्य छोडी समतानुं साम्राज्य स्वीकार्युं हतुं. महर्षि नमि, विनमि जेवा प्रभावक अनेक कोटी नरवीरो ज्यां आवीने समतारुप सुधासागरमां मग्न थया हता, ज्यां विचरीने अनेक जैनसूरिवरो सूक्ष्मथी सूक्ष्म तत्त्वज्ञान दर्शावी मानवबुद्धिनुं आश्चर्यकारक दृष्टांत देखाडी गया छे, टुंकामां एक समय एवो हतो के, जैनधर्मथी अंकित एवो आ समग्र भारतनो गौरवरवि जे देशमां मध्यान्हरुपे झळकतो हतो.

शत्रुंजय जेवा पवित्र गिरिवरो अने शत्रुंजया जेवी पवित्र

सरिताओथी विभूषित एवा ते सौराष्ट्रदेशमां गोहिलवंशना नाम उपरथी गोहिलवाडनामनो एक विशाळ प्रांत आवेलो छे. ते प्रांतमां इतिहास प्रसिद्ध अनेकस्थळो अद्यापि श्री जैनधर्मनी प्राचीनताने सिद्ध करी रह्यां छे. ते प्रांतमां आवेलुं वल्लभिपुर जे हाल वळाना नामथी ओळखाय छे. ते स्थळ एक वखते आर्हत धर्मरुपी रविना उदयगिरि रुप हतुं, ज्यां महान् न्याय-चक्रवर्त्ती श्रीमल्लवादी आचार्ये राजसभामां बौध्धपंडितो साथे वाद करी श्रीवीरधर्मनी विजयपताका फरकावी हती. श्रीवीरशासनना प्रभावक देवर्धिगणी विगेरे पंडितकेसरी-ओए देशनानी गर्जना करी ते स्थळनी भूमीने गजावी मुकी हती. तेओए जैन विद्वान् मुनिवरोनी रसना उपर आरुढ रहेनारा आगमो ते स्थळमांज पुस्तकारुढ कर्यां हतां. भारतना महान् राजाओना मानगिरिनुं मर्दन ते स्थळना राजाओए कर्युं हतुं. ते प्रांतमां समुद्रना तीर उपर पाछळथी बीजा पण केटलाएक कशबाओ वसेला छे. तेओमां गोघाना नामथी प्रख्यात एक बंदर अत्यारे आवेलुं छे, तेनाथी चार कोश दूर पडवा नामे एक नानुं गाम वसेलुं हतुं, पाछळथी सीहोरना गोहिल रजपूतोए ते प्रांतनो कबजो लइ ते गामनी नजीक

एक मोटुं शहेर वसाव्युं, जे हाल भावनगरना नामथी प्रख्यात छे. हाल आ शहेर सौराष्ट्रदेशमां मोटामां मोटुं सुशोभित अने समृद्धिमान् बन्युं छे.

जैन प्रजानो मोटोभाग तेमां आवीने वस्यो छे. शेहेरनी नजीक वडवा गाम हतुं, ते हाल शेहेरना परा रुपे बनी गयुं छे अने तेनी अंदर एक सुशोभित जैनमंदिर स्थापित थयुं छे. जेनी व्यवस्था करवामां वडवाना अग्रणी श्रावकोनी सत्ता रहेली छे.

जन्म अने बाल्यावस्था.

पडवा गामनी अंदर परंपराथी भावसार ज्ञातिना केटलाएक कुटुंबो वसेलां छे. भावसार ज्ञातिनी मूल उत्पत्ति वैश्यजातिमांथी छे, अने ते ज्ञातिनो म्होटो भाग जैन धर्मना संस्कारवाळो छे, परंतु पाछळथी तेमना आचार विचारमां फेरफार थवाथी ते ज्ञाति भोजनव्यवहारथी भिन्न पडी गइ, तथापि ते

मांहेला केटलाएक कुटुंबो व्यापारकलामां आगळ वधी धर्ममां उच्च संस्कारी जोवामां आवे छे, तेथी तेमनी गणना चतुर्विध संघमां गणाती आवी छे. ते ज्ञातिनो शब्दार्थ एवो छे के, भाव-भावनाथी **सार**-श्रेष्ठ ते **भावसार** एटले श्रेष्ठभावनाने धारण करनारी जे ज्ञाति ते भावसार ज्ञाति जो भावसारने बदले **भवसार** शब्द लइए तो भव एटले संसार तेमां सार रूपे रहेनारो जे ज्ञाति, ते **भवसार** ज्ञाति आ शब्दार्थज ते ज्ञातिनी उच्चता अने संस्कारिताने दर्शावी आपे छे

पडवामां वसती भावसारज्ञातिमां **मीठाभाइ** नामे एक गृहस्थ हता. तेमनी पत्नीनुं नाम **रामबाइ** हतुं, आ बंने दंपति धार्मिकहृदयनां अने सुशील हतां. तेमनो गृहस्थाश्रम सद्वर्त्तनथी सुशोभित हतो. कोइ पूर्वना नैसर्गिकधर्मना संस्कारने लइने तेमना हृदय उपर सारी भावना जामी रहेती हती. ते भावनाना बळथी ते दंपतिना वर्त्तन उपर आ प्रचंड कलिकाळनी शक्ति चाली शकी न हती. आ कलिकाळनी शक्ति कोना उपर नथी चालती ? तेने माटे श्रीयुत **पद्मानंद** कविराज नीचे प्रमाणे कहे छे—

> " हृदयं सदयं यस्य, भाषितं सत्यभूषितम् ।
> कायः परहितोपायः, कलिः कुर्वीत तस्य किम् ? ॥१॥"

" जेनुं हृदय दयाळु छे, जेनुं भाषण सत्यथी विभूषित छे अने जेनी काया सदा पारकुं हित करवामां तत्पर छे. तेवा पुरुषने आ कलिकाळ शुं करी शकवानो छे ? "

जैन मुनिओना अप्रसंगने लइने पूर्वकाले पडवामां वसनारां भावसार कुटुंबोमां अन्य धर्मना संस्कारोए प्रवेश करी दीधो हतो. काठीआवाडमां केटलीएक ग्राम्य--सामान्य-जातिना लोको उपर स्वामिनारायणनो संप्रदाय सारी असर करतो अने तेमना वाचाळ साधुओ नाना नाना कशबाओमां उपदेश आपवाने वधारे फर्या करता हता, तेथी मीठाभाइना कुटुंबमां स्वामिनारायणना उपदेशनी छाप पडी हती.

विक्रम संवत् १९०७ नुं वर्ष वीशमी सदीना आरंभ-समयनुं हतुं. आ शुभोदयवाळा वर्षमां सौराष्ट्रमां आवेला गोहिलवाडप्रांतना 'पडवा' गाममां रहेला मीठाभाइनां धर्मपत्नी रामबाइना उदरमांथी एक पुत्र रत्ननो जन्म थयो. आ महान् आत्मा भविष्यमां केवो थवानो छे ? तेना जीवन-नी घटना केवी घडावानी छे ? अने तेना जीवननुं पर्यवसान केवुं आववानुं छे ? ए उज्जवळ भावी कोइना जाणवामां न हतुं. तेथी ते जन्मोत्सव ते कुटुंबनी स्थितिना प्रमाणमां थयो, तथापि तेना उज्जवळ भावीए मातापिताना अने संबंधीओना

हृदयमां कोइ अद्भुत आनंदभावना प्रगटावी हती. सूतिकागृहमां जननी ते प्रभावकपुत्रनुं मुख जोइ हर्षितमुखी थइ गइ. भविष्यमां ते बालक हृदयना संगीतनो ज्ञाता अने प्रभुनी संगीतभक्तिनो कर्त्ता थवानो हतो, ए सूचना तेणे पोताना प्रथमना बालरुदनमां प्रदर्शित करी हशे पण भावीना तिमिरनो पडदो आडो हतो, तेथी कोइना जाणवामां आवी शक्युं नहीं. ते समये तो आ पुत्रना लाभने माटे स्वामीनारायणना देव सहजानंद प्रभुने सर्व कुटुंबे अभिनंदन आप्युं हशे परंतु ते अभिनंदन सहजआनंदस्वरूपी श्रीवीरपरमात्माने प्राप्त थइ गयुं. चालता युगमां शिथिलपणाना भयनी शंकावाळी चारित्रलक्ष्मी अने ज्ञानलक्ष्मीने आ आत्माना जन्मथी पूर्ण आश्वासन मल्युं अने श्रीवीरप्रभुनी शासनदेवीए अदृश्यरूपे अंतरीक्षमां रही जयध्वनि कर्यो.

श्रीमीठाभाइने प्रथम विठ्ठलदास नामे एक पुत्र हतो* अने आ बीजा पुत्रना लाभथी तेमनी सांसारिकवासनाने सारी पुष्टि मळी, माता पिता सहजानंदी हता, छतां भाविष्यना योगथी पुत्रनुं नाम वीरजी पाडी दीधुं, ते नामनी

*आमने पीतांबरदास नामना पुत्र थया जे हाल विद्यमान छे.

स्थापनानी साथेज श्रीवीरप्रभुनी भक्तिनी स्थापना दैव-योगे थइ गइ.

वीरजीभाइ अनुक्रमे जेम जेम वयमां वधता गया, तेम तेम तेमनामां उच्चसंस्कारो पण वधता गया. तेमनी बाल्यावस्था चपळ हती, तो पण तेनी साथे गांभीर्यनी छाया पडती हती. बाल्यवयनी चपळताने तेओ अमुक वखते काबुमां राखी शकता हता. सत्संगी मातापिता तेमने पोताना संप्रदायनी छाप पाडवा अनेक उपायो करता तथापि ते विचारशील सुपुत्र तेने क्रियामां मुकतां विचार करतो हतो. कोइ कोइवार सत्संगी साधुओ त्यां टोळाबंध आवी चडता अने सर्व कुटुंबने उपदेश आपता त्यारे माताना उत्संगमा बेठेलो ते भविष्यनो महापदवीधारी मुनि ते उपदेशमांथी ग्राह्याग्राह्यनो विचार करतो हतो. ते सुविचारी बालके नीचेना श्लोकनो भावार्थ पोताना सुकोमळ हृदयमां आरूढ कर्यो हतो.

"देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १ ॥"

" जेम प्राणीना आ देहने कुमारअवस्था युवावस्था, अने जरावस्था आवे छे, तेवीज रीते ते प्राणीने बीजा देहनी प्राप्ति

थवानी, एम समजी धीरपुरुष तेमां मोह पामता नथी. आ श्लोकनो उपदेश ते सुविचारी बालक बरावर समजी गयो. पूर्वना पुण्ययोगे प्रतिभाना संस्कारोने साथे लइ आवेला श्रीवीरजी-भाइ बाल्यवयमांथी मुक्त थइ कुमारअवस्थामां आव्या तरतज ते चतुरबालकने पिताए गामठीशाळामां बेसार्यो. भविष्यमां भारतना अनेक पुरुषोना गुरुपद उपर आवनार ते सहृदय बालकने गुजरातीभाषाना विद्यागुरुए प्रियशिष्यपद आप्युं अने त्यां पोते उत्साहथी अंकगणित वगेरे व्यवहारी ज्ञान संपादन कर्युं. हवे तेमनो पौगंड वयमां प्रवेश थयो, देशनी मातृभाषानुं उपयोगी ज्ञान लइ तेओ पितानी गृहव्यवहारनी धुरा ग्रहण करवाने तत्पर थया. तेमना ज्येष्ठबंधु विठ्ठलदासे पितानी गृहधुरा लगभग उपाडी लीधी हती, छतां पण पोताना कर्त्तव्यने बजाववानी खातर ते गृहराज्यना फटायारूपे रह्या हता.

गृहस्थावास अने धर्मविकाश.

ते समये प्रतिष्ठित कुटुंबोमां बाळविवाहनी प्रवृत्ति विशेष हती. मुग्धबाळकोनी भविष्यनी दशा तरफ विचार करवामां आवतो नहि. तेथी माता पिताए वीरजीभाइनो तरतज विवाह करी दीधो. संसारनी दृढशृंखला साथे तेमने बांधी लीधा, तथापि ए शृंखलाना बंधनने शिथिल करवानुं सामर्थ्य धरावनार ते वीरनर उपर मोहराजनुं सामर्थ्य लांबो काल चाली शक्युं नहि. मीठाभाइ सत्संगी हता तेथी वीरजीभाइ कोइ कार्य प्रसंगे भावनगर जता त्यारे भजन कीर्त्तनमां सारो भाग लेता हता अने पोताना स्वरमाधुर्यथी श्रोताओने अति आनंद उपजावता हता.

अन्य संप्रदायनी छायामां उछरेला वीरजीभाइनी मनोवृत्ति बदलावानो हवे समय आव्यो, तेमनुं उज्ज्वळभविष्य विकाश पामवा तैयार थयुं, पूर्वनो पुण्यराशि प्रगट थवा

उन्मुख थयो तेथी तेओ पडवानी जन्मभूमि छोडी व्यापार-
ने माटे भावनगरमां पोताना मोशाळमां आवी वश्या. तेमना
मामा मूळजीभाइ भावनगरना वडवानामक परामां रहेता
हता ते कुटुंब जैनधर्मनुं उपासक हतुं. मूलजीभाइना पवित्र-
हृदय उपर सम्यकृत्वनी सारी छाप पडी हती. मूलजीभाइ
देवगुरुना परम उपासक हता. विविध जैनमुनिओनो समागम
करता अने सदा धर्मोपदेश सांभळवा तत्पर रहेता हता.
आवा सम्यक्त्वधारी मामाना सहवासथी वीरजीभाइने जैन
मुनिओनो योग थवा लाग्यो, तेथी तेना हृदयनी भावनामां
एकाएक फेरफार थइ गयो. शुद्ध देव, गुरु अने धर्मनुं सत्य स्वरुप
तेमना जाणवामां आव्युं. तेथी तेओने अमुल्य चिंतामणिरत्न
जेवा जैनधर्मना प्राप्ति थइ. पछी तेओ पूजानी विधि, सामा-
यिक, प्रतिक्रमणादि श्रावकने योग्य एवो सर्वविधि पोताना
मामानी पासे शीख्या. पोताना मोशाळमांथी शुद्ध धर्मनो
वारसो तेमणे प्राप्त कर्यो त्यारथी वीरजीभाइए आ मनुष्य
जीवनने मात्र आहार निद्रादि पामरव्यापारमय न मानतां,
कोइ उच्च अने सर्वग्राही उद्देश सिद्ध करवाना साधनरूपे
स्वीकार्युं अने आ कर्मभूमिमां अवतरी परमपुरुषार्थ सिद्ध-

करवाना भव्य प्रसंगरूपे मान्युं.

श्री वीरजीभाइनुं लग्न भावनगरना वतनी भावसार रघा मांडणनी पुत्री बाइ जवल साथे थयुं हतुं अने ते सद्‌गुणी स्त्रीनी साथे तेमनो गृहस्थावास शांतिमय बन्यो हतो. तेओ सांसारिक कार्योमां निवृत्तिपूर्वक प्रवृत्ति राखता अने ते प्रवृत्तिमां पण तेमना अनासक्तहृदयमां संसारनी अनित्य भावनाज रह्या करती हती. संवत् १९३० ना वर्षमां तेमना संसारवृक्षना फलरूपे एकपुत्रीनो जन्म थयो हतो. तेणीनुं नाम केशर पाडयुं हतुं. ते पछी संवत् १९३४ ना वर्षना अशाडमासमां एक पुत्रनो जन्म थयो जेनुं नाम *भाइचंद पाडवामां आव्युं हतुं.

वीरजीभाइ गृहस्थ श्रावक बन्या पछी केटलोक वखत आर्थिकव्यवसाय माटे धोलेरा बंदर गया हता. ज्यां तेमणे पोतानुं श्रावकत्व साचवीने सारो व्यवसाय कर्यो पछी तेओ पाछा भावनगर आव्या हता.

---

*भाइचंदने पण संवत् १९५५ मां हरिचंद्र नामे एक पुत्र थयो जे हाल विद्यमान छे अने ते महात्मानी भक्तिथी सदा भावित रहे छे.

आ अरसामां वीरजीभाइना मामा मूळजीभाइना हृदय उपर एक विलक्षण अने उच्च भावना प्रगट थइ आवी पोताना जीवननी सार्थकता करवाने माटे तेओए संयम-मार्ग ग्रहण करवा प्रवृत्ति करी संवत् १९३० ना वर्षमां मूळजीभाइए महान् परमपूज्य श्रीमान् मुक्तिविजयजी (मूळचंदजी) गणीनी पासे दीक्षा लीधी अने भाग्य विजयजी नाम धारण कर्युं. पोताना प्रेमी मामानी आ प्रवृत्ति जोइ वीरजीभाइना पवित्र हृदयमां वैराग्यना अंकुरो प्रगट थइ आव्यो. कर्मनो अने आत्मानो संबंध, उदय क्रिया वखते जीवने थतो क्लेश, सुख दुःखना जुदा जुदा कारणो, मोहनीय आदि कर्मोनुं स्वरुप, तेओनी प्रेरणाथी रमातो आ संसारनो खेल, पौद्गलिकपदार्थोनुं अस्थिरपणुं अने सगासंबंधीओनुं अशरणपणुं वगेरे वगेरे अनेक उच्च विषयोना विचारो वीरजीभाइना हृदयमां स्फुरवा लाग्या. उदार उन्नत अने भव्य उद्देश राखी पोताना जीवितने पर-मार्थ साधवामां तत्पर थया, शृंगाररुपी वृक्षमां मेघ समान एवा यौवनने तेमणे धीक्कारवा मांड्युं, कामरसना प्रसरता प्रवाहने अटकावी दीधो अने मोहराजानी प्रबळसेनानो पराजय

करवा कटीबद्ध थइ गया. तेओ करुणाभावने अमृतरस जेवो मानवा लाग्या, संसारने विषमय जोवा लाग्या, चारित्रने कल्पवृक्ष मानवा लाग्या, कषायोने शत्रुसम जाणवा लाग्या, संतोषने प्रियमित्र गणवा लाग्या; अने संवेगने खरो सहायक लेखवा लाग्या. महाशय वीरजीभाइना हृदयमां आवी तीव्र-भावना जागृत थइ, परंतु कोइ अनिवार्य कारणोने लइने तेओ गृहस्थावासना कारागृहमांथी मुक्त थइ शक्या नहिं. तेओ चारित्ररुपी निर्मल नावनी राह जोइने आ संसारसमु-द्रनी वच्चे उभा रह्या. अने पोतानी धारणा सफळ करवानो दृढताथी निश्चय कर्यो.

चारित्र-स्वीकार

आ समये हालनी जेम रेलवेनुं साधन काठीआवा-डमां प्रसरेलुं नहतुं. दूरदेश जवामां अनेक जा-तनी अडचणो भोगववी पडती हती. महाशय वीरजीभाइ समय मेळवी घरथी एकाएक नीकळी पड्या. प्रथम गोघाबंदरे गया, त्यांथी डाकना मछवामां बेठा.

समुद्र मार्गे मक्कामां जतां जतां घणा जोखम भरेला बनावो बन्या हता. परंतु पूर्वना पुण्ययोगे अने धर्मना दिव्यप्रभावथी तेओ ते सर्व संकटोमांथी बची गया हता. आ संसाररूप महासागरने उतरवा तत्पर थयेला ते धर्मवीर वीरजीभाइने ए लौकिकसागर उतरवो मुश्केल केम थाय ? तेओ समुद्र मार्गे सहीसलामत सुरतबंदरे उतर्या त्यांथी जबलपुररेलवे द्वारा तेमणे पंजाब तरफ प्रयाण कर्युं. आ समये पंजाबना लुधीयाना शहेरमां वर्षाऋतुमां एक जैनधर्मनो प्रतापी सूर्य पोताना प्रभाथी मिथ्यात्वरूप अंधकारने दूर करवा उदय थयो हतो, पंजाबनी प्रभावक भूमि उपर श्रीवीरधर्मनी जयघोषणा थइ रही हती. ते प्रतापी सूर्य कोण ? वाचको अनुमानथी जाणी शक्या हशे, तथापि ते प्रातःस्मरणीय महात्मानी ओलख आ स्थळे कराववी जोइए. जेओए जैनतत्त्वादर्श, अज्ञानतिमिरभास्कर वगेरे अनेक ग्रंथो लखी भारतनी जैन प्रजा उपर महान् उपकार कर्यो छे, जेमनी अद्भुत विद्वत्ताथी मोहित थइ अमेरिकाना चीकागो शहेरमां भराएली सर्वधर्मपरिषदे जेमने आमंत्रण आप्युं हतुं. जेओनी

अद्भुत विवादशक्ति अने व्याख्यानशक्तिथी भारतवर्षनी सर्व प्रजा मोहित थइ हती अने जेमनुं अद्वितीय पराक्रम जोइ भारतमाताए परम संतोष पामी पुत्राभिमान धारण कर्युं हतुं, ते महात्मा जैनधर्मोद्धारक-शासनप्रभावक, विद्वत्शिरोमणि, न्यायांभोनिधि श्रीमद् **आनंदविजयजी** हता. ते प्रभावी पुरुष **आत्मारामजी** एवा प्रचलित नामथी विख्यात हता. ते सुप्रसिद्ध महाराजना विद्वान् विनेयावतंस श्रीमान् लक्ष्मीविजयजीमहाराज ते समये अंबाला शहेरमां वीराजमान हता, महाशय वीरजीभाइ पण फरता फरता ते अंबाला शहेरमां आव्या अने ते महात्माना शरणे गया. सौराष्ट्रदेशनी दूर भूमिमांथी खास शरणे आवेला अने उच्च भावनाथी भरपूर बनेला ते धर्मवीर श्रावकने जोइ गुरु प्रसन्न थया, अने तेने हृदयथी धर्म लाभनी पवित्र आशीष आपी. संसारना विकट दुःखमांथी मुक्त करवा अने सदा शरणे राखवा ते महाशये गुरुजीने प्रार्थना करी तेमनी शुभेच्छा अने योग्यता जाणी गुरु संतोष पाम्या अने तेमने आ संसारमां अभयदान आपवानो निश्चय कर्यो अने पोतानी पासे राख्या.

अहिं पाछळ कुटुंबी जनोए वीरजीभाइनी शोध करवा मांडी. सर्व सबंधीओना हृदय उपर मोहराजानी चडाइ थइ आवी तेथी सर्वत्र वीरजीभाइनी शोधाशोध थइ पडी, आखरे पंजाब तरफना खबर मल्या एटले तेमना मामाना पुत्र गीलाभाइ ते देशमां आवी पोहांच्या. तेमणे मोह राजानी मदद मेळवी घणो यत्न कर्यो, पण दृढप्रतिज्ञधर्मवीर वीरजीभाइ चलायमान थया नहिं सद्गुरुरुप कल्पवृक्षनी छाया छोडीने संसाररुप विषवृक्षनी छाया लेवा कोण आवे ? आखरे गीलाभाइ निष्फल थइ पाछा फर्या.

आ समये विक्रम संवत् १९३४ नुं वर्ष चालतुं हतुं. ते वर्षनुं चातुर्मास गुरुश्रीए अंबाला शेहेरमां कर्युं हतुं. महाशय वीरजीभाइ श्रावण मासमां ते स्थळे आव्या हता. तेओए गुरुवर्यना चरणकमलनी पवित्रछायामां रही चातुर्मास निर्गमन कर्युं हतुं. विक्रम संवत् १९३५ नो कार्त्तिक मास आव्यो ते मासनो कृष्णपंचमीनो प्रभात काळ मंगळमय हतो, आ मंगळसमयनो पूर्वेज लुधीयाना शहेरमां उदित थयेलो जैनधर्मनो प्रतापी सूर्य पोतानी प्रभाथी विश्वने प्रकाशित करतो पोतानी अस्खलित गति

द्वारा अंबाला शहेरमां उदित थयो हतो, तेथी ते समये अंबाला शहेरनी जैन प्रजा आनंद उत्सव करी रही हती. चारे तरफ जैनधर्मनो गगनभेदी जयध्वनि थइ रह्यो हतो. आ समये महात्मा गुरुश्रीए पोताना विद्वद्वर्य मुख्य शिष्य श्रीलक्ष्मीविजयजी महाराजना नामथी महाशय वीरजीभाइने दीक्षा आपी. अने ' वीरविजय ' एवुं नाम स्थापन कर्युं. प्रतापी पंजाबना चतुर्विध संघे ए धर्मवीरना शिर उपर वासक्षेप नांख्यो अने तेमना चारित्रधर्मनो कल्पवृक्ष ते स्थळे रोपायो.

वैराग्यरूपी खड्ग हाथमां लइ संसारनी रणभूमिमां वीरताने दर्शावनारा महाशय वीरजीभाइ हवे 'वीरविजय' नाम धारण करी वीरमुनि बनी गया. तेनी साथेज परमोपकारी गीतार्थ गुरुवर्य्ये अर्पण करेली ग्रहणशिक्षा अने आसेवनशिक्षाने विनयपूर्वक ग्रहण करी तदनुसार वर्तन करता ते महात्माए उच्च संस्कार अने गुरुभक्तिना योगथी पोताना चारित्ररत्नने विशेष उज्ज्वळ बनाववा मांड्युं. परम प्रभावक गुरु महाराजानी सेवाथी चारि-

मना उच्चगुणो संपादन करवा मांडया. तेओ प्रवचन-माताना उत्संगमां रही पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवा लाग्या, परीषहो सहन करवा लाग्या, अने शीळनुं सेवन करवा लाग्या; परमपवित्र गुरुमहाराजना विद्वान् परिवारमां रहेवाथी तेमनी अंतर्वृत्तिनो पूर्ण विकाश थइ आव्यो. तेमना वर्त्तनमां मन, वचन अने कायानी एकता देखावा लागी. जे उपरथी नीचेनुं प्राचीन पद्य ते मुनिवरे यथार्थ करी बताव्युं हतुं.

" यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः ॥
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ॥१॥ "

" जेवा विचार तेवी वाचा अने जेवी वाचा तेवुंज वर्त्तन, एवी रीते साधुने मन, वचन अने कायानी प्रवृत्तिमां एकीभावज होय छे. "

नवदीक्षित मुनिने चारित्र धर्ममां केवी रीते वर्त्तवुं ? तेना पाठो शीखवा पडे छे. तेमां खास करीने वैराग्य भावनानो पाठ प्रथम शिक्षणीय छे. वैराग्यना शिखर उपर दृढताथी स्थिर रहेनार मुनिज खरा अनगार.

कहेवाय छे. ते वैराग्यना पाठो मुनिश्री वीरविजयजीने स्वाभाविक रीते प्राप्त थया हता. पोते संसारनो कटु अनुभव करी संयम दशामां उतरी पडया हता, तेथी तेमना वैराग्यने सारी पुष्टि मळी हती. पुत्र, प्रिया, धन अने शरीरनो प्रेम शुं छे अने ते केटलो अने केवो लाभ हानि कर्त्ता छे? ए वैराग्यनो विषय तेमना अनुभवमां सारी रीते स्पष्ट थयो हतो. मन अने कर्मग्रहणनो संबंध, चित्त दमननी आवश्यकता, अने तेथी थतो लाभ, कषायोनुं स्वरुप, स्त्रीकथा १ भक्तकथा २ देशकथा ३ राजकथा ४ मृदुकारुणिकाकथा ५ दर्शनभेदिनीकथा ६ चारित्रभेदिनीकथा ७ आ सातविकथानुं स्वरुप तथा तेनाथी थता कटुकफलो, अने विषय प्रमाद वगेरेनी रचना–इत्यादि अनेक विषयो तेमना विचारमार्गमां रमी रह्या हता. जेम जेम तेमना अभ्यासमां वधारो थतो गयो, तेम तेम तेमना हृदयनो विकाश विशेष थवा लाग्यो.

तीर्थ विहार.

मुनि श्रीवीरविजयजी ते पछी अंबालाथी गुरु महाराज साथे विहार करी 'हुंशीयार-पुर' मां पधार्या हता. अने विक्रम संवत् १९३५ ना वर्षनुं चातुर्मास तेमणे ते स्थळे कर्युं हतुं. आ तेमनुं प्रथम चातुर्मास हतुं ते चातुर्मास पूर्ण थया पछी गुरुमहाराजनी साथे विचरी श्रीउद्योतविजयजी साथे संवत् १९३६ ना वर्षनुं बीजुं चातुर्मास पंजाब देशनी राजधानी. रूप 'अमृतसर' मां कर्युं हतुं. ते पछी संवत् १९३७ ना वर्षनुं त्रीजुं चातुर्मास गुरुवर्यनी सेवामां रही 'जीरा' मां कर्युं हतुं. आ प्रमाणे त्रण चातुर्मास पंजाबनी वीर भूमि उपर कर्यां हतां, ते दरमीयान ते महानुभावे विनया-दि प्रतिपत्तिथी प्रकरण, व्याकरण काव्य तर्क आदि शास्त्रनो सारो अभ्यास कर्यो हतो. ते साथे आत्माना गुणोनो

विकाश करनारा पोताना चारित्र रत्नने विशेष निर्मळ करवा प्रवृत्ति करी हती. त्यांथी श्रीकांतिविजयजी अने श्रीहंसविजयजी आदि मुनिवरोने साथे लइ विहार करी कौरवोनी राजधानी श्री दील्ही–इंद्रप्रस्थमां तेओ पधार्या ए महान् नगर भारतवर्षना साम्राज्यनी राजधानी कहेवाय छे त्यांथी श्रीचारित्रविजयजी प्रमुख साधुओनी साथे 'हस्तिनापुर' नी यात्रा करवा पधार्या. भगवान श्री शांतिनाथ, श्री कुंथुनाथ, अने श्री अरनाथ प्रभुना जन्मादि कल्याणको ते महान् नगरमां थयेला छे. ते वीना जैन इतिहासमां सुप्रसिद्ध छे. ते पांडवोनी राजधानीमां महानुभाव श्रीवीरविजयजी केटलाएक दिवसो रह्या अने उच्च भावनाथी त्यांनी पवित्रयात्रा करी त्यांथी पुनः दिल्ही आवी त्यां केटलोएक समय रही '**अलवर**' वगेरे शहेरोमां विचरता '**जयपुर**' मां पधार्या हता. ते स्थळे तेओने खरतर गच्छना मुनि कल्याणसागरजीनो समागम थइ आव्यो महानुभाव सागरजी कोइ पूर्वकर्मना उदयथी व्याधिग्रस्त थया हता तेथी आगमरहस्यना वेत्ता–कोइ पण गच्छ या समुदायना महात्मा बीमार होय तो ते महा-

त्यानी समाधि जेम जळवाइ रहे तेवो बंदोबस्त करवो ए बाबतने सारी रीते जाणनारा ते महात्मा तेमनी वैयावच्च करवाने माटे त्यांज रोकाया छेवटे सागरजी कालधर्मने प्राप्त थतां तेमनी अंत समयनो निर्यामणा तेओश्रीए सारी रीते करावी हती. विक्रम संवत् १९३८ ना वर्षनुं चोथुं चातुर्मास श्रीकांतिविजयजी अने श्रीहंसविजयजीमहाराजनी साथे जयपुरमांज कर्युं हतुं ते समये जयपुरमां **श्रीहीराचंदजी** नामना एक यतिवर्य साराविद्वान् गुणानुरागी हता तेमनी पासे मुनि श्रीवीरविजयजीए केटलाएक शास्त्रोनो अभ्यास कर्यो चातुर्मास पसार थया पछी तेओ पुनः 'दिल्ली' आव्या अने त्यां बिराजता महोपकारी गुरुश्री आनंदविजयजी महाराजनो सेवामां पुनः हाजर थया तेवामां महान गुरुना उपदेशथी दिल्लीवासी भाविक श्रावकोए हस्तीनापुरनी यात्राने माटे एक संघ काढयो तेनी अंदर मुनिश्रीवीरविजयजी पोताना गुरुवर्यनी साथे पधार्या त्यांथी पुनः दिल्ली आवी 'अलवर' 'जयपुर' वगेरे क्षेत्रोमां विचरता विचरता फलोधितीर्थमां पधार्या हता. आ पवित्र तीर्थ फलवर्द्धिना नामथी प्रख्यात छे. उपदेशसप्ततिकामां

ए पवित्र तीर्थना प्रभावनुं दिग्दर्शन कराव्युं छे. वादी कुमुदचंद्रने लीलामात्रमां जीती लेनारा महात्मा वादी श्रीमान् देवसूरिजीना समयमां ए पवित्र तीर्थनी स्थापना थयेली छे. विक्रम संवत् ११७४ ना वर्षमां ए पूज्यपाद महात्मानो जन्म थयो छे. ते महान् समर्थ सूरिजीए चोराशी मोटा वादीओने जीती श्री जैनधर्मनी विजयपताका फरकावी हती. महात्मा श्रीदेवसूरिजी फलवर्द्धिनगरमां आवेला, ते वखते पारस नामनो एक धर्मिष्ट श्रावक त्यां रहेतो हतो, तेना हृदयमां श्री जैनधर्म उपर पूर्ण श्रद्धा हती. एक वखते ते बहिर्भूमि गयेलो त्यां खीलेला पुष्पोना समूहथी मंडित एवो एक ढेखाळानो ढगलो तेना जोवामां आव्यो ते जोतांज ते पारस चित्तमां चमत्कार पामी गयो अने श्री देवसूरिजीनी पासे आवी ते वृत्तांत निवेदन कर्यो. ते सांभळी सूरिजी सानंदाश्चर्य थइ ते स्थळे आव्या. ते जोतांज तेमना हृदयमां स्फुर्युं के, “ आ स्थळे कोइ अतिशयवाळी श्रीअर्हत्प्रतिमा होवी जोइए. ” तरत तेमणे ते स्थळनी तपास करावतां श्री पार्श्वनाथनी सुंदरप्रतिमा प्रगट थइ आवी, पारस शेठे खुशी थइ शहेरमां लावी उत्सवपूर्वक ते

प्रतिमाने एक पर्णकूटीमां बेसारी अने तेनी भावभरित-हृदये पूजा करी. ते फलवर्द्धितीर्थमां नवीन प्रासाद पूर्ण थयेथी बिंब अने चैत्यनी प्रतिष्ठा वादीश्रीदेवसूरिनी पाटे थयेली श्रीमुनिचंद्रसूरिए करेली छे.

आवा आ महान् प्रभावक तीर्थमां मुनिश्रीवीर-विजयजी पोताना सद्गुरुनी साथे पधार्या हता. ते तीर्थना नायक पार्श्वनाथप्रभुनी आगळ ते मुनिवरे पोताना संगीतमय मधुरनादथी स्तवना करी हती अने ते ध्वनिना प्रतिध्वनिथी चैत्यमंडप गजावी मुक्यो हतो.

त्यांथी विहार करी 'नागोर' थइ तेओ 'विकानेर' पधार्या संवत् १९३८ नुं चातुर्मास ते शहेरमां गुरुश्रीनी सेवामांज पसार कर्युं अने ते स्थळे महानुभाव श्रीवीर-विजयजीए गुरुमहाराज पासे केटलाएक सूत्रग्रंथो वांच्या हता. चातुर्मासने अंते त्यांथी विहार करी 'नागोर' 'मेडता' आदि क्षेत्रोनी स्पर्शना करता 'पाली' नगरमां पधार्या आ नगरमां अद्भुत महिमाथी विश्वमां विख्यात थयेला 'श्रीनवलखापार्श्वनाथप्रभु' नी यात्रा करी अने

तेना प्राचीनस्थानने मुनिराज श्रीवीरविजयजीए स्वमुखे गायेला भक्तिमय स्तवनोना संगीतथी गजावी मुक्युं अने तेने श्रवण करनारा श्रोताओना हृदयोने भावथी भरपूर करी दीधां.

त्यांथी केटलाएक मुनिवरोने लइ धूलेवाजीमां विराजता 'श्रीकेशरीआनाथजी' नी यात्रा करवाने पधार्या. आ प्रभावकप्रतिमा भारतना घणा प्रदेशमां विख्यात छे. भारतनी सर्ववर्णोनी प्रजा ते प्रभावक प्रभुप्रतिमाने माने छे अने तेना चमत्कारी महिमाने मुक्तकंठथी वखाणे छे. तेथीज केसरीआजीनुं पवित्र नाम भारतनी सर्व प्रजामां विख्यात थयुं छे. ते यात्रा पूर्ण करी मुनिमंडळ साथे श्रीवीरविजयजी 'राणकपुर' नी यात्रा करवा पधार्या हता. आ स्थळे 'श्रीऋषभदेवभगवान्' नी मनोहर प्रतिमा छे. ते प्रतिमाथी युक्त एवुं ते चैत्य विक्रम संवत्-१४९६ ना वर्षमां पोरवाड धनाशाहे पुष्कल द्रव्य खर्ची बंधावेलुं छे. ते अद्यापि भव्यात्मा धनाशाहना अमर नामने दर्शावनारा कीर्त्तिस्तंभना जेवुं उभुं छे. त्यांनी यात्रा

करी मुनिश्रीवीरविजयजी मुनिमंडळ साथे ' सादडी '–' घाणेराव '–नाडलाइमां श्रीऋषभदेव प्रमुख एकादश मंदिरो, नाडोलमां श्रीपद्मप्रभु अने वरकाणामां वरकाणा पार्श्वनाथ वगेरे पंचतीर्थीनी यात्रा करता करता ' सीरोही ' नगरमां पधार्या हता. ते नगरमां श्रेणीबंध रहेलां सुंदर चौदमंदिरोनी यात्रा करी जैन इतिहासमां अनेक पराक्रमशाळी जैन राजाओ अने मंत्रीओनी धर्मकीर्त्तिथी मंडित एवा अर्बुदाचळ (आबुजी) मां पधार्या हता. अहि पोताना दीक्षा गुरु श्री लक्ष्मीविजयजी महाराज पालीमां स्वर्गवास थयाना शोककारक समाचार सांभल्या हृदयनी मार्दवताथी अने ते स्वर्गवासी गुरुना उपकारगुणोना स्मरणथी मुनिश्रीवीरविजयजीनी मनोवृत्तिमां क्षोभ थइ आव्यो अनित्य भावनाना उच्चबळथी ते महानुभावे क्षोभने शमावी दीधो अने ते स्वर्गवासी गुरुमहाराजने उद्देशीने देववंदन कर्युं. पोताना मुनिधर्मथी अने उच्चचारित्र वर्त्तनथी ते स्वर्गवासी मुनिवर्य **श्रीलक्ष्मीविजयजी** महाराज महात्मा श्रीविज्यानंदसूरिना परिवारमां आभूषणरुप बन्या हता क्षमा, शांति अने सरळ-

ताना ते स्थानरुप हता. तेमना अनेक उच्चगुणोने लइ वरिष्ठगुरु तेमनी तरफ सारी ममता धरावता हता. अनेक गृहवासी आत्माओए तेमना ते गुणोथी आकर्षी आ संसारनी दृढ शृंखळा तोडी तेमनुं शिष्यपद स्वीकार्युं हतुं. आ जीवनचरित्रना नायक पण ते गुणोने लइनेज तेमना दीक्षाशिष्य थया हता.

गुजरात अने मारवाडनी मर्यादारुपे आवेलो 'अर्बुदाचल' भारतभूमिना सृष्टिसौंदर्यनो खरो नमुनो छे. ए पवित्र गिरि प्राग्वाट् (पोरवाड) वंशना मंडनरुप श्री गुर्जरपति भोळाभीमदेवराजाना मुख्य मंत्री विमळशाहनी धर्मकीर्त्तिनो रमणीय कीर्ति स्तंभ छे. मंत्री विमळशाहे अगणित द्रव्यनो व्यय करी भारतनी उच्चकारीगरीना नमुनारुप श्री ऋषभदेवादि प्रभुनां चैत्यो ते पवित्रगिरिमां प्रतिष्ठित कर्या छे. जेणे पश्चिमना कलापरीक्षक पुरुषोना हृदयोने हलावी दीधां छे अने तेओने अद्यापि भारतना प्राचीन कलाचातुर्यनी मुक्तकंठे प्रशंसा करवी पडे छे. ते मंत्री विमळशाहना अजरामर नामने जैनविद्वानो पोताना धर्म लेखमां सानंदहृदये स्थापित करी गया छे. महानुभाव उप-

देशसप्ततिका. विमलप्रबंधादि ग्रंथकार आदि महापुरुषो तीर्थना अपूर्वरसपोषक वर्णननी साथे ते धर्मधुरंधर मंत्रिराजना यशने सानंद हृदये विस्तारी गया छे.

आ इतिहास प्रसिद्ध पवित्रतीर्थमां मुनिवरश्रीवीरविजयजी पधार्या हता अने त्यां मुनिमंडळनी साथे श्रीयुगादिप्रभुनी भक्ति करी हती. अर्बुदाचळनी कुदरती शोभा अने मनोहरता जोइ मुनि श्रीवीरविजयना भक्त हृदयमां अत्यंत प्रसन्नता प्रगट थइ आवी अने ते पवित्र स्थळना महिमानुं संगीत तेमणे उच्चस्वरे उच्चार्युं अने पोताना अने बीजा मुनिवरोनां हृदयमंदिरमां भावप्रदीप प्रगट कर्यो.

ते पछी महानुभाव मुनिमंडळ तेज पवित्र गिरि उपर मंत्रीश्वर वस्तुपाळ तेजपालना अमर नामने टकावी राखनारा श्री नेमिनाथ प्रमुख जिनेश्वरोना आरसपाणना नकशीदार मंदिरोना दर्शन करवाने पधार्या. आ मंदिरोनी अद्भुत कारीगरी भारतनी शिल्पकळाना कीर्त्तिने दर्शावनारी छे. यूरोप, अमेरिकाना चतुरप्रेक्षको ते जोवाने माटे खास आवे छे अने तेने जोइ सानंदाश्चर्य थइ भारती शिल्पकळाना विद्वानोनी भारे प्रशंसा करे छे.

अनेक पाश्चिमात्य पुरुषो आ मंदिरोना फोटा लइ जाय छे अने तेने स्वदेशमां कळाकौशल्यना प्रदर्शनोमां मूके छे.

जैन इतिहासकार आ चैत्योना निर्माणनो वृत्तांत आपतां जणावे छे के, मंत्रिराज वस्तुपाळ तेजपाले बार करोड अने तेपन लाख द्रव्यनो व्यय करी आ अर्बुदाचळ उपर पोतानी धर्मकीर्त्तिनो महान स्तंभ आरोपण कर्यो छे. तेने माटे उपदेशसप्ततिकाकार नीचेनुं पद्य लखी ते प्रातःस्मरणीय उभय मंत्रिओना नाम जैन इतिहासमां सुवर्णाक्षरे लखी गया छे.

“ एवं रसाष्टरविसंमितवत्सरे तं
प्रारभ्य नेत्रनवयुग्मरसामितेऽब्दे ।
सपूर्णतां जिनगृहं नयतः स्म हर्षात्
तौ मंत्रिणौ सकलधर्मधुराधुरीणौ ॥१॥ ”

“सर्व धर्मनी धुराने धारण करवामां धुरीणरूप एवा ते वस्तुपाळ अने तेजपाळ मंत्रीश्वरोए संवत् १२८६ ना वर्षमां जिनचैत्यना निर्माणनो आरंभ करी संवत् १२९२ ना वर्षमां संपूर्ण कर्युं हतुं.

आ पवित्र अने अद्भुत तीर्थनी यात्रा करी महानुभाव श्रीवीरविजयजी त्यांथी सुमारे त्रणकोस उपर आवेला 'अचळगढ' नी यात्रा करवा पधार्या. ते स्थळे एक महान् जिनचैत्य उभेलुं छे. तेनी अंदर १४४४ मण सुवर्णमय १४ मूर्त्तिओ विराजमान छे. तेओना दर्शन करी महानुभाव श्रीवीरविजयजो प्रसन्न हृदय थया हता. त्यांथी पुनः देलवाडे आव्या. गुजरात अने राजपूतानाना संधीरूप अने तेमना इतिहासमां अगत्यनो भाव भजवी प्रसिद्ध थयेला अने पवित्रअद्भुतजिनचैत्योनी स्थापनाथी भारतना अमूल्य शृंगाररुपे रहेला अने सृष्टिनी शांतलीलाना अनुपमदृश्य तरीके उपयोगी बनेला आबुपर्वतनी यात्रा करी धर्मवीरमुनिवरश्रीवीरविजयजीना हृदयमां प्रगटेली भक्तिमय उच्चभावना विशेष उल्लास पामी हती अने पुनः ते स्थळे आववानी क्षेत्रस्पर्शनाने माटे आकांक्षा राखी हती. त्यांथी विहार करी तेओ अणादरा 'पालणपुर' 'सिद्धपुर' 'उंझा', 'मेसाणा'वगेरे स्थळे थइ 'भोयणीजी'पधार्या हता. आस्थळे मनोहर चैत्यमां विराजमान थयेला 'श्रीमल्लिनाथस्वामी' ना दर्शन करी पोताना पवित्र हृदय उपर भावनारुप सु-

धानुं सिंचन कर्युं हतुं ते साथे श्रीमल्लिनाथप्रभुना विलक्षण अने चमत्कारी चरित्रनुं हृदयमां मनन करी तेवो पोताना आत्मानो निर्मलभाव भावित कर्यो हतो.

चारित्र गुणना उत्कर्षनो आरंभ

विक्रम संवत् १९४० ना वर्षनो आरंभ ते महात्मा श्रीवीरविजयजीना चारित्रगुणना उत्कर्षना आरंभरुप हतो, ते वर्षमां तेओश्री पोताना वरिष्ठ ज्ञानीगुरुमहाराजनी साथे 'राजनगर' (अमदावाद) मां पधार्या हता. विविध श्रीजिनचैत्योथी बिराजीत एवा राजनगरमां ते समये श्रीमान् मुक्तिविजयजी गणी (मूलचंदजी) बीराजता हता. तेओनी पासे योगोद्वहन करी महात्मा श्रीवीरविजयजीए श्रीआनंदविजयजी महाराजना नामनो वासक्षेप ग्रहण कर्यो. अर्थात् छेदोपस्थापनचारित्रनो स्वीकार कर्यो अने

ते वर्षनुं चातुर्मास पण त्यांज कर्युं, ते प्रसंगे महात्माश्रीए गुरुमहाराजानी पासे केटलाएक आगमोनो अभ्यास कर्यो हतो.

अज्ञाननो नाश करी, प्रकाश पाडनार, समताने वधारनार, कषायोने चूर्ण करनार, धर्मने विस्तारनार, अने पापनो प्रलय करनार एवा ज्ञानना अद्भुतबळथी महात्मा श्रीवीरविजयजीनुं चारित्र विशेष निर्मल थइ प्रकाशमान थवा लाग्युं. सम्यग्दर्शन अने सम्यग्ज्ञानना बळथी पापक्रियानी त्रिविधविरतिरुप चारित्रे ते महात्माना हृदयमां अनुकंपा अने सहनशीलता प्रगट करी. तेमनी अडग अने प्रचंड आत्मशक्तिनो विकाश करनार सर्व जीवोनुं पालन करवामां समर्थ अने कर्मोना आश्रव द्वारनो निरोध करवामां उपयोगी एवी पांच समितिओथी तेओ अलंकृत थया, सर्वदोषो अस्तपामीगया अने संतोषरुप सुधाना सिंचनथी तेमनुं निर्मळ हृदय एक विलक्षण आनंदने अनुभववा लाग्युं, ते महात्माना चारित्र गुणनुं वर्णन एक कविए नीचे प्रमाणे करेलुं छे, ते आ स्थळे आपवुं उचित गणाशे—

शिखरिणी.

"समर्थं संपूर्णं सकलजनकल्याणकरणे,
कषायैः प्रोन्मुक्तं सकलशशिकान्तं शिवकरम् ।
विदोषं चारित्रं विमलतरबोधामृतमयं,
विशेषज्ञैश्चीर्णं भुवि मुनिवरैर्वीरविजयैः ॥१॥"

" सर्वजनोनुं कल्याणकरवामां समर्थ, संपूर्ण, कषायोथी रहित, पूर्ण कलावाला चंद्रना जेवुं सुंदर, शिव-मोक्ष करनार, निर्दोष अने अतिनिर्मळ एवा ज्ञानरूपी अमृतथी भरपूर एवुं चारित्र आ पृथ्वी उपर विशेषज्ञ श्री वीरविजयजी मुनिवरे आचरेलुं छे."

महात्मा श्रीवीरविजयजी राजनगरमां चातुर्मास कर्या पछी 'मातर' मां पधार्या हता. ते स्थानमां साचादेवना नामथी प्रसिद्ध एवा 'श्रीसुमतिनाथस्वामी' नां दर्शन करी 'खंभात' मां पधार्या हता. खंभात ए 'स्तंभतीर्थ' ना नामथी प्राचीन इतिहासमां प्रख्यात छे, अने अनेक जिनमंदिरोथी अलंकृत छे. ते प्राचीनस्थळमां 'श्री स्तंभन पार्श्वनाथजी' नी प्राचीनचमत्कारी प्रतिमा रहेली

छे. जैनइतिहास जणावे छे के, ते प्रतिमाना स्नात्रजलना प्रभावथी श्रीमद् अभयदेवसूरिनो कोढ नाश पाम्यो हतो अने ते महानुभावे नवांगी वृत्तिनी रचना करी हती. ते प्रभावशाळीप्रभुना दर्शन करी मानव जन्मने पवित्र करता महात्मा श्री वीरविजयजी कावीमां पधार्या हता. त्यां सासू वहूना नामथी कहेवाता बे मोटा जिनालयोमां विराजमान थयेला 'श्री धर्मनाथ' अने श्री ऋषभदेवजी'नी प्रतिमानी यात्रा करी जंबूसर थइने 'गंधार' मां पधार्या हता.

आ गाम पहेलां म्होटुं शेहेर हतुं एम तेनी आसपास आवेला खंडेरो उपरथी समजी शकाय तेम छे अने ते शहेरनुं प्राचीनकाळनुं गौरव अद्यापि देखाइ आवे छे. ते स्थळे आवेली 'श्री पार्श्वनाथजी' अने 'श्रीमहावीरस्वामी'नी दर्शनीयप्रतिमानी यात्रा करी तेओ भरुचमां पधार्या हता. गुजरातमां उत्तमविख्याति पामेलुं आ शहेर पूर्वकाळे भृगुपुरना नामथी ओळखातुं हतुं. जैनपंडितोए एक समये ए शहेरमां जैनतत्त्वज्ञाननी जयघोषणा करी हती. ते शेहेरमां आवेला दश जिनमंदिरो पोताना सौंद-

येथी यात्राळुओना हृदयने आकर्षे छे. तेओमां एक सुंदर मंदिरनी अंदर वीशमा तीर्थंकर 'श्री मुनिसुव्रतस्वामी' नी प्राचीन प्रतिमा आवेली छे. आ प्रतिमानुं चैत्य समवसरण-ने स्थाने आवेलुं छे अने देवपति इंद्रे तेनी अंदर श्रीमुनि-सुव्रतस्वामीनी प्रतिमा स्थापेली छे, अने ते अश्वावबोधक तीर्थना नामथी प्रख्यात थयेलुं छे. जेनी कथा सुदर्शना-चरित्र आदि ग्रंथोमां आपेली छे.

महानुभाव श्रीवीरविजयजीए आ प्राचीन स्थळे प्र-भुनी प्रतिमाना दर्शन करी उच्चभावना भावी हती अने पोताना चारित्रजीवनने विशेषउपयोगी बनाव्युं हतुं. चा-रित्रजीवननी उच्चभावनाओ एवा कोइ प्राचीनतीर्थ स्थळे जेवी प्रगटे छे तेवी अन्य स्थळे प्रगटती नथी. ते स्थळे अमुक दिवस रही तेओ विहार करता अनुक्रमे 'सु-रत' मां आवी पोहोच्या हता. सुरत ए ऐतिहासिक सूर्य-पुरना नामथी ओळखाय छे. विक्रम संवत् १९४१ ना वर्षनुं चातुर्मास ते महात्माए पोताना गुरुवर्यनी साथे सुरतमांज कर्युं हतुं. सुरती जैनप्रजाए ए महामुनिओना मंडळने आनंदपूर्वक आवकार आप्यो हतो. तापी नदीना

तीर उपर जैनधर्मना जयनादना प्रति शब्दो संभळाता हता, आ चातुर्मासमां ते महानुभावे गुरुनी पासे केटलोएक शास्त्राभ्यास करी उच्चअभिग्रहो ग्रहण कर्याहता. तेओ-मां पकवान्न, लीलोतरीनो सर्वथा त्याग अने हमेशां एकाशनना अभिग्रहो मुख्य हता. आवा वखतो वखत स्वीकाराता अभिग्रहोना प्रभावथी महात्मा श्रीवीरविज-यजीनुं चारित्र तेम भावना दिवसानुदिवस शुद्ध कंचनवत् विशुद्ध बनतां हतां.

ते चातुर्मास पूर्ण थया पछी पोताना पवित्र महात्मा सद्गुरुनी सेवारुप छायानो आश्रय करी तेओए त्यांथी विहार कर्यो अने ते सुरतजील्लामां आवेला नवसारी, दम्मण वगेरे स्थळोमां विचरी केटलोएक समय प्रसार कर्यो हतो. ते पछी पुनः भरुच, मीयागाम, अने डभोइ थइ वडोदरे पधार्या हता.

महात्मा श्रीवीरविजयजीनी वाणीनुं माधुर्य अनुपम हतुं. तेओनुं संगीत हृदयनुं संगीत हतुं. तेमनी मनोवृत्तिनुं चित्र अद्भुत हतुं. ते चित्रनी अंदर आध्यात्मिक अनुभवनुं संपूर्ण पोषण थतुं हतुं अने प्रकृतिना स्वरुपनुं उत्तम भान

थइ आवतुं हतुं तेथी ते वाणीना श्रवणथी श्रोताओना हृदय आकर्षातां हतां वडोदरामां गुरुवर्यनी परिचर्याना प्रेमी श्रीवीरविजयजीना उपदेशथी सुरतना निवासी कस्तूरचंद नामना एक श्रद्धालु श्राद्धना हृदय उपर सारी असर थइ गइ, महात्मा गुरुवर्य श्री आत्मारामजी महाराजना पंडित परिवारनो अनुपम आनंद मेळववानी तेने तीव्र इच्छा थइ आवी तेथी तेने तेज स्थळे दीक्षा दान करवामां आव्युं अने तेमनुं नाम कुंवरविजयजी राखवामां आव्युं.

त्यांथी विहार करी ते महात्मा 'छाणी, उमेटा, बोरसद, पेटलाद' आदि शेहेरोमां विहार करता मातरमां पधार्या. त्यां 'श्रीसुमतिनाथस्वामी' नी अपूर्वयात्रा करी 'खेडा, अमदावाद, कोठ, लींबडी, बोटाद, वळा, सीहोर, थइ गुरुवर्यनी साथे सिद्धगिरिनी पवित्र छायामां रहेला पालीताणा नगरमां पधार्या हता. भारत वर्षना सर्वजैनतीर्थोमां तीर्थाधिराजनी पदवीने पामेला ए महागिरिना दर्शन करी सर्व मुनिमंडळ विशेष आनंदमय बनी गयुं हतु.

आ पवित्र तीर्थशिरोमणिक्षेत्रमां महात्मा श्रीवीरवि-

जयजीनी भावनारूप भागीरथी निर्मळताथी वहेवा लागी. हृदयमांथी धार्मिक भावो स्फुटरीते प्रगट थवा लाग्या. ज्यारे सिद्धगिरिराजना शिखर उपर चडी ते महात्मानी दृष्टिए आदिनाथप्रभुनी प्रतिमा पडी त्यारे तेमना हृदयमां अवर्णनीय भावोल्लास प्रगट थइ आव्यो हतो. तेमनी दिव्यभक्तिनी भावना उभराइ गइ अने प्रभुना धार्मिक गीतोनो नाद कंठमांथी प्रगट थइ आव्यो तेथी आखुचैत्य मधुर ध्वनिथी अने दिव्य वातावरणथी आंदोलित थइ गयुं. ते महात्माना मुखमंडळ उपर दिव्यअपूर्वचारित्रनुं ज्योति-चमकी उठयुं. आ प्रमाणे तीर्थपतिना दर्शनथी भावित थयेला ते मुनिवर सिद्धगिरि उपरथी उतर्या अने गुरुवर्यनी इच्छा प्रमाणे ते वर्षनुं चतुर्मास त्यांज करवा मानसिक निश्चय कर्यो.

गुरुवर्यश्रीने–सूरिपद दान

विक्रम संवत् १९४२ नुं चातुर्मास सिद्धगिरिनी पवित्र छायामां थयुं हतुं. भारतवर्षना मार्तंडरूप गुरूमहाराज श्रीआनंदविजयजीना तीर्थवासना खबर सांभळी केटलाएक गुरु भक्त श्रीमंत * श्रावक गृहस्थो गुरुवर्यनी देशना वाणी-

---

*आ चातुर्मासनी अंदर अने ते वीत्या पछी कलकत्ता निवासी बाबूजी रायबहादूर बद्रीदासजी, भरुचवासी शेठ अनुपचंद मलुकचंद, खंभातवासी शेठ पोपटभाइ अमरचंद, धूलीया निवासी शेठ सखाराम दुर्लभदास, सुरत निवासी शेठ कल्याणभाइ शंकरदास, अने वडोदरावासी झवेरी गोकुल भाइ आदि गुजरात, काठीआवाड, कच्छ, मारवाड, पंजाब, अने माळवा–पूर्व वगेरे देशोना अग्रगण्यनेताओ आदि यात्रालुओनो म्होटोसमूह त्यां एकठो थयो हतो. जेनी संख्या सुमारे पांत्रीस हजार जेटली हती.

रूप जान्हवीमां स्नान करवानी इच्छाथी ते तीर्थमां चातुर्मास करवाने आव्या हता. अने तेओ स्थावर अने जंगमतीर्थनो महान् लाभ मेळवी कृतार्थ थया हता.

विक्रम संवत् १९४३ना कार्त्तिकमासनी कृष्णपंचमीनो दिवस एक धार्मिक अभ्युदयना उत्कर्षने दर्शावनारो हतो. श्रीतीर्थराजसिद्धगिरिनी छायामां ज्ञान धर्मनी उन्नति दर्शावनारो ते महान् दिवस हतो. तेमज श्रीवीरशासनना अद्भुतप्रभावने प्रगट करनारो ते सुवर्णसमय हतो. ते दिवसे आखा भारतवर्ष उपर जैनधर्मनी विजयपताकाने फरकावनारा, अनेक परवादीओना विद्यामदने मर्दन करनारा, अने अर्हद्वाणीना तत्त्वमय दिव्यसत्यने शोधनारा न्यायांभोनिधि श्रीमद् आत्मारामजी महाराजने तेओश्रीनी अपूर्व विद्वत्ता अने देशनाशक्ति प्रमुख अनेक गुणोथी आकर्षाइने भारतवासी चतुर्विधसंघे सूरिपद आप्युं हतुं. त्यारथी ते गुरुवर्य "न्यायांभोनिधिश्रीमद्विजयानंदसूरि" ना नामथी प्रख्यात थया हता, जेने माटे एक कविए नीचेनुं पद्य रचेलुं हतुं.

"अज्ञानतिमिरौघस्य, विनाशे भास्करोपमाः।
जयन्तु धर्मतत्त्वज्ञा, विजयानन्दसूरयः ॥१॥"

"अज्ञानरूप अंधकारना समूहनो नाश करवामां सूर्य समान अने धर्मना तत्त्वने जाणनारा श्रीविजयानंदसूरि जय पामो ॥ १ ॥"

श्रीसिद्धगिरिना पवित्रयात्रास्थळमां चातुर्मास पसार कर्या पछी तेओए गुरुश्रीनी अनुज्ञा लइ त्यांथी विहार कर्यो. प्रथम 'अमरेली' अने 'दीव', थइ 'उना' 'देलवाडा' मां पधार्या. उनाशहेरनी भूमि प्राचीन जैन इतिहासमां प्रख्यात छे, दिल्लीपतिबादशाहअकबरने धर्मोपदेश आपी प्रतिवर्षे छ छ मास अमारी प्रवर्त्तावनारा भट्टारक श्रीहीरविजयसूरीश्वरे एज भूमिमां स्वर्गवास कर्यो हतो, अने जे स्थळे ते महात्माने अग्निसंस्कार थयेलो छे ते स्थळ उपर तेमनी पादुका स्थापन करवामां आवी छे, जे अद्यापि ते प्रातःस्मरणीयमहोपकारी सूरिवरनी अमर, अविचळ धर्मकीर्ति अने परोपकारीतानुं स्मरण करावे छे, ते स्थळनी यात्रा करी महात्मा श्रीवीर-

विजयजी अत्यंत प्रसन्न थया हता, त्यांथी विहारकरी गिरनारपर्वत उपर विराजता श्रीनेमिनाथप्रभुनी यात्रा करी अनुक्रमे 'प्रभासपाटण, पोरबंदर' अने 'मांगरोळ' प्रमुखनी यात्रा करता 'जामनगर' पधार्या हता. जामनगरमां आवेला मोटा भव्यदेवालयोमां विराजमान थयेला धर्मनाथ आदि जिनेश्वरोनी यात्रा करी त्यांथी विचरता अने सद्धर्मना उपदेशथी सोरठीप्रजाना सरळहृदय उपर धर्मनी छाप पाडता अनुक्रमे मच्छुनदीना तीर उपर आवी 'ध्रोळ, मोरवी, अने वांकानेर' थइ 'आडिसर' तथा 'पणासवा' ने मार्गे विचरी राधनपुर पधार्या हता, त्यां तेओए पोताना सद्गुरुवर्यनी साथे संवत् ९४३ ना वर्षनुं चातुर्मास कर्युं अने ते चतुर्मासमां गुरुश्रीनी सेवामां रही भगवती प्रमुख सूत्र ग्रंथोनुं अध्ययन कर्युं हतुं. त्यांथी विहार करी तेओ श्री सद्गुरुना चरणनी सेवामां साथे रही श्रीसंखेश्वरपार्श्वनाथनी यात्रा करवा पधार्या हता. त्यांथी श्री गुरुवर्यनी आज्ञा लइ गुजरातनी राजधानी 'पाटण' मां पधार्या हता. पाटण शहेरनो इतिहास प्रख्यात छे अने जेणे गुजरातना सर्वइतिहास उपर

सारो प्रकाश पाडयो छे. अर्वाचीन काले जैनधर्मने राजधर्म तरीके विख्याति आपनार ए गुजरातनुं पाटनगर श्रीपाटण छे. चावडा वंशना आभूषणरुप वनराजे ए महानगरने वसावेलुं छे विक्रम संवत् ८०२ना वर्षमां श्रीशीलगुणसूरि पासे जैनमंत्रोनी विधिथी ए शहेरनी स्थापना थइ छे. कृतज्ञ महाराजा वनराजे पोताना उपकारी गुरुश्री शीलगुणसूरिना उपदेशथी पंचासरमांथी लइ श्रीपार्श्वनाथनी चमत्कारीप्रतिमा महोत्सव साथे पाटणमां लावी अने एक भव्य देवालय करी ते सूरिवरने हाथेज ते प्रतिमानी. प्रतिष्ठा करावी हती. ते आस्तिक अने धर्मानुरागी महाराजाए पोतानी पण आराधकरुपे मूर्त्ति भरावी तेज भव्य मंदिरमां स्थापित करावी छे. आ प्राचीनशहेर अद्यापि पण तेनी पुरातन नामना धारण करी रह्युं छे. ते शहेरमां विविध रचनावाला एकंदर सो उपरांत जैनमंदिरो आवेला छे अने सुमारे श्रावकोना बेहजारघर छे. ते उपरांत ताडपत्रादि उपर लखेला प्राचीन जैनधर्मनां पुस्तकोना म्होटा भंडारो त्यां रहेला छे. आ प्राचीनशहेरनी यात्रा करी महात्मा श्रीवीरविजयजीना हृदयमां आनंदना

ऊर्मिओ उछल्या हता. अने प्राचीन सूरिवरोना अद्भुतप्रभावोनो ख्याल तेमनी दृष्टि आगळ दृश्यमान थयो हतो. गुजरातमां जैनधर्मने पूरजोसमां चेतन आपनारा अने पोताना चारित्रजीवननी उपयोगिता दर्शावी खरा मुनि तरीके बहार पडेला ते पूर्वज महात्माओना अपार उपकारोनी भावना तेओए त्यां भावी हती. ते भावनानी साथे महात्मा श्रीवीरविजयजीना हृदयमां निश्चय थयो के, " मने प्राप्त थयेला चारित्ररत्नने यथाशक्ति निर्मल बनावी आ जीवनरुप वाहाणने अनेक प्राणीओनो उद्धार करवाना साधनरुप एवा परोपकाररुप महासागरमां वेहेतुं मुकवुं अने समस्त जगत्नी साथे आ जीवनने आध्यात्मिक आनंदमां भाग लेतुं करवुं कारण के मनुष्य पोताना जीवननो उद्देश आध्यात्मिकजीवन गाळीने सरसमां सरस रीते प्राप्त करी शके छे. " धर्मना उच्च संस्कारो तरफ प्रेम राखनारा प्राणीओ तरफथी उच्चसन्मान प्राप्त करी ते महात्माए त्यांथी विहार कर्यो हतो. अनुक्रमे विहारकरता अने भविओनी धार्मिकभावनाने धर्मोपदेशथी जाग्रत करतां तेओ 'तारंगाजी' पधार्या हता.

आ महान् पवित्रस्थळ कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचंद्र सूरिना उपदेशथी प्रतिबोधित थयेला गुर्जरपति महाराजा श्रीकुमारपाळना बंधावेला महान् उच्चमंदिरथी अंकित छे. ते मंदिरनो उद्धार करी इडरनिवासी श्रावक गोविंदशेठे बंधावेला म्होटा मंदिरमां श्रीअजितनाथस्वामीनी प्रतिमा स्थापेली छे ने तारंगाजी तीर्थनी यात्रा करतां महात्मा श्रीवीरविजयजीए महोपकारी श्रीहेमाचार्यना उच्चजीवननु स्मरण-करी पोतानी भावनाने सतेज करी हती. अने तेवा जीवनने माटे उत्सुकता उत्पन्न करी हती.

त्यांथी विहार करी तेओ पुनः राजनगरमां पधारी पोताना गुरु महाराजना दर्शन करी पोताने अहोभाग्य मानवा लाग्या आ पोताना प्रभावक उत्तम विषयनो विनीत भाव अने चारित्र धर्मनो उज्ज्वलप्रकाश वधतो जोइ गुरुश्रीए हृदयथी तेमने अभिनंदन आप्युं विक्रम संवत् ओगणचालीशथी ते संवत् त्रेंताळीश सुधीना पांच चतुर्मास गुरुश्रीनी साथे करवाथी महात्मा श्रीवीरविजयजीए पोताना ज्ञानमां, आचरणमां अने धार्मिक वृत्तिमां म्होटो वधारो कर्यो हतो, तेथी हवे तेओश्रीने भिन्न

चतुर्मास करवानी गुरुश्रीनी आज्ञा थतां तेओ त्यांथी जुदा पडया अने ग्रामानुग्राम विहार करता भरुच निवासी शेठ अनुपचंद मलुकचंद प्रमुख संघना आग्रहथी 'भरुच' मां पधार्या अने श्री कांतिविजयजी तथा श्री राजविजयजी आदि मुनिओ सहित संवत् १९४४ नुं चातुर्मास त्यांज कर्युं हतु. आ चातुर्मासमां सरल अने रसिक चतुर्विंशति जिन स्तवन बनावेल छे, महात्मा श्री वीरविजयजीए पोतानी देशनानो प्रभाव भरुचवासी जैनोने एवो बताव्यो के जे अद्यापि सुधी त्यांना जैन गृहस्थो मुक्तकंठे तेनी प्रशंसा करे छे.

ते चातुर्मास पूर्ण थया पछी तेओ त्यांथी श्री राजविजयजी महाराज सहित 'गंधार' नी यात्रा करवाने पधार्या त्यांथी 'जंबूसर, कावी, खंभात अने धोलेरा' वगेरेनी यात्रा करता अने उपदेशना सुधाजलने वर्षावता पुनः 'पालीताणे' पधार्या हता, जे देशमां पोतानो जन्म थयो छे अने ज्यां चारित्रजीवननो अपूर्वलाभ प्राप्त करवाना उच्चसाधनो प्राप्त थयां छे. ते देशनी महान् तीर्थ भूमिनो लाभ लेवाने तेओए सिद्धगिरिनी पवित्र छायामां

रही नवाणुयात्रा करी पोताना आत्माने विशेषनिर्मल बनाव्यो, त्यांथी पोतानी जन्मभूमिमां पोताना संबंधीओने उपदेशनो महान् लाभ आपवानी अने मनुष्य जीवननी सार्थकता शेमां छे ते सिद्ध करी बतावधानी इच्छा थइ आवतां तेओ विहार करी 'सीहोर' पधार्या हता. त्यांथी 'वरतेज, भावनगर' थइ श्रीनवखंडा पार्श्वनाथनी यात्रा करवाने 'गोघाबंदर' पधार्या. आ समये भावनगरना संघे चतुर्मासने माटे घणी विज्ञप्ति करेली परंतु श्रीनवखंडापार्श्वनाथनी भक्ति करवाना अभिलाषथी अने गोघाना संघना अतिआग्रहथी पोताना गुरुवर्यनी आज्ञा मेलवी संवत् १९४५ नुं चतुर्मास त्यांज कर्युं हतुं.

चतुर्मास वीत्या पछी एक भव्यात्मा जैनयुवक आ संसारनी आधि अने उपाधिमांथी मुक्त थवा तेओश्रीना शरणे आव्यो, ते युवकनुं नाम दीपचंद हतुं अने ते झींझुवाडानो रहीश अने श्रीमाली ज्ञातिमां जन्मेलो हतो, तेना ललाट उपर चारित्रधर्मनी उज्वळतानां किरणो पडतां हतां अने ते उपरथी तेना हृदयनी उच्चभावना देखाइ आवती हती. महात्मा श्रीवीरविजयजीए ते धार्मिक नरनुं

च्चभविष्य जोइ लीधुं अने तेने चारित्रथी अलंकृत करवानो निश्चय कर्यो. संवत् १९४६ ना मार्गशीर्ष मासनी शुक्लपंचमीने दिवसे ते पवित्र पुरुषने दीक्षा आपी अने तेमनुं नाम ' दानविजयजी ' राखवामां आव्युं. ते पछी विहार करी गोघाना संघनी साथे ' तलाजा ' पधार्या हता. आ शहेरनी पासे आवेला तालध्वजगिरि उपर बिराजित थयेला अने साचादेवना नामथी प्रसिद्धि पामेला ' श्रीसुमतिनाथस्वामी ' नी ते महात्माए भावोल्लास पूर्वक यात्रा करी अने तालध्वज गिरिनी गुफाओमां पोताना भक्तिमय संगीतनी प्रतिध्वनि पाडी जन्मभूमिना देशने भक्तिमय बनावी दीधो. त्यांथी विहार करी पुनः सिद्धिगिरिनी भेट लइ ' धोलेरा, खंभात ' वगेरे स्थलोए थइ ' वडोदरा ' मां पधार्या त्यां श्री कांतिविजयजीनो मेलाप थइ आव्यो. आ समये डभोइना संघे आग्रहपूर्वक विज्ञप्ति करवाथी ' श्री जयविजयजी' श्री राजविजयजी' अने श्री दानविजयजी ' नी साथे तेओश्री ' डभोइ ' पधार्या अने संवत् १९४६ नु चातुर्मास त्यांज कर्युं. त्यांथी झघडीयाजीनो संघ नीकल्यो, तेमां सामेल थइ तेओ ' झ-

घडीया ' पधार्या त्यां श्रीऋषभदेव प्रभुनां दर्शन करी पाछा संघनी साथे डभोइ पधार्या हता. डभोइवासी जैनोए महाराजश्रीना मुखनी वाणीनो अपूर्व लाभ मेलव्यो हतो अने तेमना आस्तिक हृदयो ते महात्माना गुणानुरागी बनी गयां हतां. डभोइथी विहार करी तेओ पाछा ' वडोदरे ' पधार्या, त्यां श्री कांतिविजयजी महाराजनो मेलाप थयो. पछी सर्व मुनिओने साथे लइ ' अमदावाद, भोयणी, म्हेसाणा, पालनपुर, ब्रह्माण, जीरावाला, आबूजी, सीरोही, शिवगंज, पाली, ब्यावर ' आदि स्थलोनी यात्रा करता अने अधिकारी जनोने परम उपदेशनी प्रसादी वेहेंचता वेहेंचता अजमेर आवी पहोंच्या.

महात्मा श्री वीरविजयजीनी अजमेर सुधीनी यात्राना मार्गमां आवेला ब्रह्माण नामना स्थळनो प्रसंग जैन इतिहासमां प्रख्यात छे. जीरावल्लीना स्थाननी तीर्थरुपे स्थापना एक चमत्कारी रीते थयेली छे. विक्रम संवत् ११०९ ना वर्षमां ए तीर्थनो महिमा प्रगट थयो छे.

तेनुं वर्णन उपदेश सप्ततिकामां सविस्तर आप्युं छे. ते वांचनाराओए ते पुस्तकमांथी जाणी लेवुं.

महात्मा श्री वीरविजयजी अजमेर पधार्या हता. तेवामां त्यां मुनिश्री राजविजयजीने नेत्रपीडा थइ आवी तेथी तेओने केटलोक समय त्यांज रहेवुं पडयुं. ज्यारे तेमने आराम थयो त्यारे तेओ श्री जयविजयजी, श्री राज विजयजी अने श्री दानविजयजी आदि मुनिओने साथे लइ ब्यावरना संघना आग्रहथी संवत् १९४७ नु चातुर्मास ब्यावर कर्युं. आ स्थळनी जैन प्रजा पोताना धार्मिक कर्त्तव्यथी अज्ञात हती. विद्वान् मुनिओना अप्रसंगथी ते क्षेत्रनो जोइए तेवो धार्मिक विकाश थयो नहोतो. ते क्षेत्रमां महात्मा श्री वीरविजयजीए उपदेशना प्रभावथी सारो विकाश कर्यो हतो. श्री वीरवाणीनो अद्भुत महिमा ते भूमिमां प्रसरी गयो हतो अने त्यांना जैन संघ उपर सारी असर करी. ते महात्माए पोताना चातुर्मासना निवासथी अपार उपकारो करी अने जैन धर्म शुं छे? तेनुं रहस्य प्रगट करी ते देशनी जैन प्रजाने तेमना खरा कर्त्तव्यनु भान कराव्युं हतुं, त्यांथी विहार करी 'श्रीकांतिविजयजीआदि' मुनिओना साथसहित 'जयपुर, दिल्ली' वगेरे स्थळोमां थइ 'अंबाळामां' पधार्या त्यांथी विहार

करी ' लुधीयाना ' वगेरे स्थळोमां थइ ' हुंशीयारपुरमां ' पधार्या हता. आ समये गुरुवर्यसूरिजी संवत् १९४८ ना माघमासनी शुक्लपंचमीए ते नगरमां **'श्रीवासुपूज्यप्रभुनी '** प्रतिष्ठा करावता पधार्या हता. हुंशीयारपुरना उत्साही गुजरमल नामना श्रावके म्होटो समारंभ कर्यो हतो. त्यां श्रीगुरुमहाराजना चरण कमळनी सेवानो अपूर्वलाभ लइ तेओश्रीनी आज्ञाथी ते महात्मा ' श्रीवल्लभविजयजी ' वगेरे मुनिओने साथे लइ त्यांथी विहार करी ' जलंधर ' ' पट्टी ' आदि ' स्थळोमां थइ ' अमृतसर ' पधार्या हता. पंजाबनी राजधानीरुप ते शहेरमां पंजाबी जैन प्रजाए तेओश्रीने सारो आवकार आप्यो अने श्रीवीर धर्मना प्रभावने दर्शावनारो उत्साह प्रगट कर्यो. आ वखते श्रीवल्लभविजयजीनी गुजरात तरफ विहार करवानी इच्छा थवाथी तेओ त्यांथी विहार करी जुदा पड्या अने महानुभाव श्रीवीरविजयजी 'श्रीदानविजयजी ' नी साथे ते देशना ' झंडीयाळा, वेरोवाळ' क्षेत्रोमां विचरी अने जैनवर्गमां अनेक उपकारो करी पुनः अमृतसरमां पधार्या अने संवत् १९४८ नुं चातुर्मास पण तेज क्षेत्रमां कर्युं.

आ चातुर्मासमां पंजाबी जैन प्रजामां जैनधर्मनो सारो उद्योत कर्यो अने पोताना मधुर उपदेशथी त्यांनी जैन प्रजानां हृदय आकर्ष्यां हतां. ते चातुर्मास, पूर्ण थया पछी विहार करी ' नारोवाळ ' ' सनखतरा ' आदि क्षेत्रोमां विचरी त्यां श्रीगुरु महाराजे रोपेला श्रीवीरधर्मरुपी वृक्षने श्रीवीरवाणीरुपसुधाजलनुं सिंचनकरी नवपल्लवित करता जंबूमां पधार्या हता त्यां श्रीकांतिविजयजीप्रमुख मुनिओनो समागम थइ आव्यो पछी ते सर्वमुनिमंडळ श्यालकोट थइ गुजरांवालामां आवी पोहोच्युं अने छेवटे संवत् १९४९ ना वर्षनुं चातुर्मास पण त्यांज कर्युं चातुर्मास वीत्याबाद त्यांथी विहार करी 'सनखतरा' 'नारोवाल' 'अमृतसर' अने 'झंडीयाला' प्रमुख क्षेत्रोमां विहार करता अने पंजाबी प्रजाने पोतानी वाणीरुप सुधानुं पानकरावता पट्टीमां आव्या अने संवत् १९५०ना वर्षनुं चातुर्मास ते क्षेत्रमांज कर्युं आ चातुर्मासमां तेओश्रीए उपदेशद्वारा जैनप्रजा उपर महान् उपकार कर्यो हतो. त्यांथी विहार करी जीरामां पधार्या हता. त्यां गुरुमहाराजानी अलभ्य चरणसेवानो लाभ संपादन कर्यो पछी गुरुश्रीए पट्टी तरफ विहार कर्यो अने महा-

त्मा श्रीवीरविजयजीए ते स्थळे संवत् १९५१ ना माघ मासनी वसंतपंचमीने दिवसे भावनगरना रहीश भावसार नथुभाइने दीक्षा आपी अने तेमनुं 'नयविजयजी' नाम स्थापित कर्युं आ समये तेओश्रीनी शरीरसंपत्तिमां फेरफार थवाथी केटलोक वखत ते स्थळे रोकावुं पडयुं अने संवत् १९५१ ना वर्षनुं चातुर्मास पण त्यांज कर्युं. चातुर्मास वी-त्यापछी विहारकरी 'लुधीयाना' वगेरे क्षेत्रोने श्रीवीर-वाणीरुप सुधाप्रवाहथी नवपल्लवित करता पोताना महोप-कारीमहात्मागुरु महाराजश्रीनी सेवामां पुनः 'अंबालामां' हाजर थया त्यांथी विहार करी पटीयाला, समाणा, नाभा अने लुधीयाना थइ हुंशीयारपुरमां पधार्या त्यां संवत् १९५२ ना वैशाख कृष्णदशमीने दिवसे भावनगरना रहे-वासी मोहनलालने दीक्षाआपी अने तेमनुं 'मुक्तिविजयजी' नाम स्थापित कर्युं.

विक्रम संवत् १९५२ ना वर्षना ज्येष्ठमासनी शुक्ल सप्तमी अने मंगलवारनो दिवस एकविलक्षणबनावने प्रगट करनारो थइ पडयो एटले के 'ते दिवसनी' रात्रिए आ जगत्मांथी भव्य ज्योतिने 'प्रगट करी' प्रजाना अज्ञान

तिमिरने दूर करनारो पोतानी भव्य प्रतिभानो 'प्रसाद आपी' भारतीय जैन प्रजाना धार्मिकअभ्युदयने वधारनारो, अने चारित्ररत्ननी निर्मळता वधारी तेना चळकाटने चमकावनारो आ भूमंडलनो एक महान् आत्मा सदाने माटे अदृश्य थइ गयो. भारत वर्षरूप गहन गुफामांथी आगळ गर्जना करी कुमत मृगोने नसाडनारो एक पराक्रमी पंडितकेसरी परलोकवासी बनी गयो. एटले महात्मा न्यायांभोनिधि श्रीमद् विजयानंदसूरिजी ते दिवसे काल धर्मने प्राप्त थइ गया. ते महात्माना वियोगथी भारतभूमिने म्होटी खोट पडी छे. आभारतगगनमांथी एकप्रकाशमान ज्ञानसूर्य अस्त थइजवाथी आखा आर्यदेशमां निस्तेजता प्रसरी गइ. ते महात्मानी अद्भुत उपदेशशक्ति, चमत्कारी वाद्शक्ति, प्रतिभानी उच्चता, दृढ मनोनिग्रहता, अध्यापन चतुरता, अनुपम लेखनशक्ति अने शुद्ध संयमता वगेरे गुणोनुं स्मरण करी भारतनी सर्व जैन प्रजाए घणो अश्रुपात कर्यो. गुरुधर्मना सर्व लक्षणोने धारण करनारा अने गुरुतत्त्वनी शुद्धिने समजनारा ते महात्मा गुना वियोगथी सर्व शिष्यपरिवारना भक्तहृदयोमां का-

गणी थइ आवी अने तेओए मळी ते उपकारीमहात्मानी उत्तरक्रियारुप देव वंदना करी तेमना परलोकवासी आत्माना विमानवासी स्वरुपनी भावना करी. भारतवासी भव्यजनोने खरा धर्मनुं स्वरुप समजाववा माटे जैनतत्त्वादर्श तत्त्वनिर्णयप्रासादआदि ग्रंथरत्नोने योजनारा, स्याद्वादना खरा सिद्धांतनी साबीती करवा अनेक लेखोने प्रगट करनारा, अने मिथ्यात्वनी मलिनताने नाश करवा अज्ञानतिमिरभास्करने उदय आपनारा ते महात्माश्री विजयानंदसूरिजीना अमर अने प्रातःस्मरणीय नामनो महिमा अद्यापि आ भारतवर्ष उपर गवाय छे अने गवाशे, अनेक कविओए ते महात्माने माटे अनेक संस्कृतकाव्यो रचेलां छे. आ स्थळे ते महात्माना महिमानो एक श्लोक आपवो उचित लागे छे.

मन्दाक्रान्ता.

"यैः सद्बोधामृतजलनिधिर्वाहितो भारतेऽस्मिन्,
येषां वाणीसुरवरसरिज्जन्तु जातं पुनाति ।

येषां शिष्या विशदचरणा ज्ञानबोधप्रवीणा,
वन्दे नित्यं सुगुरुविजयानन्दसूरीश्वरान् तान्॥"

" जेओए आ भारतवर्ष उपर सद्बोधनो सागर वेहेवराव्यो छे, जेमनी वाणीरुपी गंगानदी सर्व प्राणीओने पवित्र करे छे अने जेमनो शिष्य परिवार उज्जवळ चारित्रवालो अने धर्मोपदेशआपवामां प्रवीण छे एवा सद्गुरु श्रीविजयानंदसूरिने वंदना करुं छुं. १ "

महात्माश्री विजयानंदसूरि स्थूल शरीरे अदृश्य थया छे, तथापि तेमनुं आंतर स्वरुप भारतना महापीठ उपर ग्रंथरुपे चिरंजीवी रह्युं छे. ते महात्मानी मनोहरप्रौढप्रतिमा अद्यापि तेमना भक्तोनी दृष्टिआगळ तरी रहे छे. अने तेमना उपदेशनी गर्जनाना प्रतिध्वनिओ भारतना महान् क्षेत्रोमांथी हजु पण आव्या करे छे. ते महात्मानुं चारित्रजीवन अद्भुतबन्युंछे. तेओनी वाणीए भारतीय अने यूरोपीयन प्रजाना महान् हृदयो हलाव्यां छे अने अनेक आत्माओना मनोमंदिरना उंडा द्वार उघाडयां छे.

आ चरित्रना नायक महात्माश्री वीरविजयजी ते सूरिवरना घणाप्रसादपात्र बन्या हता. तेओनी गुरुभक्तिए सद्‌गत सूरिवरना हृदय उपर प्रसन्नता प्रसरावी-दीधीहती. तेसद्‌गतमहात्मा आचरित्रना नायकने वीर नामथी क्षणेक्षणे बोलावता हता अने तेमनी शिष्यवृत्तिनी उच्च भावना जोइ सदा आनंदमग्न रहेता हता. सद्‌गत सूरिवरे भारतीय जैन प्रजानी साथे इतरधर्मनी प्रजामां पण सारी ख्याति मेळवी हती अने तेओश्रीनी उपदेश वाणी सांभळवाने माटे जैनेतरो पण श्रेणीबंध आवताहता. ते महात्मासूरिवरना सहवासरुप कल्पवृक्षना मधुर फल चाखवाने माटे तत्पर रहेनारा शिष्यप्रशिष्योमां आचरित्रना नायक पण गणत्री तरीके हता. महात्माश्रीवीरविजयजीए ते सद्‌गतगुरुना चरणकमळमां भ्रमर बनी गुरुतत्त्वना मधुर रसनुं पान सारीरीते कर्युंहतुं. ज्ञान उपर सतत प्रेम, धर्मोपकरण उपर अमूर्छा, परीषहसहन, शुद्धभक्ति, संयमनी दृढता, प्रमादनो त्याग, उच्चविनय, समता, सर्व तरफ दया, हृदयनी विशाळता, अक्षुद्रवृत्ति अने प्रभुभक्तिमां तल्लीनता इत्यादि गुरुना सद्‌गुणोनो अमूल्य वारसो

मेळववाने आ चरित्रना नायक संपूर्णभाग्यशाळी बन्या हता. जे वारसो ते महात्माए पोताना चारित्रजीवनना अंतसुधी भोगव्यो हतो.

श्रीमानमहात्मागुरुश्रीना वियोगथी गुरुभक्तश्रीवीरविजयजीना हृदय उपर शोकाघात थयो हता, तथापि वैराग्यरूप तीक्ष्ण खड्गने धारणकरनारा ते वीरमुनिए पोताना हृदयमां अनित्यभावनानुं बल धारणकरी हृदयने आश्वासन आप्युंहतुं ते विरक्त महात्माना हृदयमां प्रसरेला शोकतिमिरनो उच्छेद करवाना अनेकशास्त्रीयदृष्टांतो तेओनी विचारश्रेणीमां आप्रमाणे आरुढ थयां. काळ ए अनंत शक्तिधारीछे. श्रीतीर्थंकरो, चक्रवर्त्तीओ अने देवेंद्रो पण तेनी अमोघशक्तिने वश थयेलाछे. काळरुपी गरुडपक्षी संयोग अने वियोगरुपीपांखो फडफडावतो आविश्वनी सपाटी उपर उड्याकरेछे अने ते बंने पांखोनो प्रभाव सर्वप्राणीओमां प्रसरावेछे. मोक्षना दरवाजासुधी तेकाळरुपीमहान् योद्धा सज्जथइ उभोरहेछे. तेनी महानउग्रशक्ति वज्रमयशरीरवाळा महापुरुषोनी उपर पण वेगथी चालीशकेछे, तोपछी को-

मळमनुष्य शा हीसाबमां ? ते उपर शास्त्रकारे नीचेनुं पद्य उच्चार्युं छे.

" वज्रकायशरीराणामर्हतां यद्यनित्यता ।
कदलीगर्भसारेषु का कथा शेषजन्तुषु ॥२॥ "

" वज्रऋषभनाराच संघयणवाळा ' श्रीअरिहंत भगवानोना शरीरनी अनित्यता छे तो पछी कदलीना गर्भ जेवा कोमळशरीरवाळा बाकीना जंतुओनी तो शी वात करवी ? ॥ १ ॥ "

आवाविरक्तभावनावाळा विचारोथी हृदयने शांतकरी महात्मा श्रीवीरविजयजीए संवत् १९५२ ना वर्षनुं चातुर्मास हुंशीयारपुरमांज कर्युं ते पछी लुधिआना, अंबाला आदि पंजाबीक्षेत्रोमां विहारकरता अने धर्मोपदेशथी आस्तिक आत्माओने सन्मार्गे दोरता दील्ली पधार्या त्यांथी श्रीसंघनी साथे हस्तिनापुरनी यात्रा करी संवत् १९५३ ना वर्षनुं चातुर्मास हींदनी राजधानी दिल्लीमां कर्युं. दिल्लीना मयूरासन उपर आवेला यवन शेहेनशाहोने पण प्रतिबोधआपनारा पूर्वज सूरिवरोनुं स्मरणकरी हृदयथी तेमने

अभिनंदन आपी महानुभावश्रीवीरमुनिए ते स्थळनी यात्रा-करतां भावोल्लास प्रगट कर्यो हतो. ते चातुर्मास पूर्णकर्या पछी तेओ ' अलवर ' वगेरे शहेरोमां विचरी मध्यहिंद-वासीओ उपर धर्मोपकारकरता 'जयपुर' पधार्या अने संवत् १९५४ ना वर्षनुं चातुर्मास त्यांज कर्युं त्यां चातुर्मास पूर्ण थतां जयपुरनो संघ केसरीआजीनी यात्रा करवा नीकळतां तेमनी साथे विचरी 'अजमेर' 'नसीराबाद ' 'भीलाडा ' वगेरे स्थानोमां थइ उदयपुर पधार्या हता. यवनोनी शेहेन-शाहीना समयमां खरीक्षत्रिवटराखनार महाराणा प्रताप-सिंहजीनी ते राजधानीमां आवेला बत्रीश जिनमंदिरो अने महाशयश्रेणिक राजानो जीव के जे आवती चोवीशीमां श्री पद्मनाभनामे पहेला तीर्थंकर थनार छे तेमनी म्होटी मू-र्त्तिनां दर्शन करी ते महानुभावना हृदयमां अपूर्व प्रसन्नता प्राप्तथइ हती.

तेस्थळनी यात्रा कर्यापछी धूलेवाजीमां भारतना म्होटाभागमां श्रीकेसरीआजीना नामथी प्रख्याति पामेला ' श्रीऋषभदेव ' प्रभुनां दर्शनकरी ' इडर ' 'तारंगाजी' ' वडनगर ' अने ' विसनगर ' थइ ' म्हेसाणे पधार्या. ते

स्थळे जेओ हाल श्रीविजयकमलसूरिना नामथी प्रख्याति पामेला छे, तेश्री कमलविजयजी महाराजनां दर्शननो महानलाभ तेमने प्राप्तथयो पछी तेओनी साथे 'भोयणी' थइ 'रांतेज' गया अने त्यां प्रतिष्टा महोत्सव पूर्ण थये 'श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथ'नी महान् यात्राकरवा पधार्या हता.

श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनुं तीर्थ प्राचीन मनाय छे. आ प्रतिमानी स्थापना शंखपति कृष्णवासुदेवने हाथे थइछे. एक आपाढी नामना श्रावके गत चोवीशीना नवमातीर्थंकर 'श्रीदामोदरप्रभु'ना मुखथी श्रीपार्श्वनाथ प्रभुना शासनमां पोतानुं मुक्तिगमन सांभळी तेप्रतिमा भरावीहती. ते प्रतिमा केटलोकवखत भूलोकमां अने पछी जुदा जुदा देवलोकमां पूजाती श्रीधरणेंद्रनी पासे आवी हती. ज्यारे शंखपति कृष्णवासुदेवे प्रतिवासुदेव जरासंघ उपर चडाइकरी अने बलवान जरासंघे पोतानी जरा विद्याथी कृष्णना सैन्यने जर्जरित करी नांख्युं, त्यारे कृष्ण महाराजे धरणेंद्रनुं आराधनकरी तेप्रतिमामेळवी अने ते प्रतिमाना स्नात्रजलना छंटकावथी जरा विद्या पराभूत थइ अने सैन्य सावधानथइ गयुं अने कृष्णे जय मेळव्यो, त्यारबाद कृष्णे

'शंखेश्वर' नामे गाम वसावी तेमां म्होटुंमंदिर करावी तेनो अंदर ते प्रतिमानी स्थापना करी त्यारथी ते तीर्थ 'श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथ' ना नामथी प्रसिद्ध थयुं छे.

ते प्राचीनतीर्थनी यात्राकरी महानुभावश्रीवीरविजयजी 'झींझुवाडा' पधार्या हता. आगामना भव्यमंदिरमां विराजता 'श्रीशांतिनाथप्रभु' नी यात्राकरी त्यांना संघना अग्रेसरश्रावकसुंदरजीभाइवगेरेने चतुर्थव्रत उच्चरावी गृहस्थ—श्रावकोना खराधर्म—कर्त्तव्यनुं रहस्य प्रगट करी बताव्युं हतुं. आसमये श्रीकमळविजयजी म्हेसाणा पधार्या अने आचरित्रना नायक, श्रीदानविजयजी अने श्रीनयविजयजी आदिमुनिओनी साथे विहारकरी 'वढवाण' 'चूडा' 'बोटाद' आदिस्थानोनी यात्रा करता अने पोतानी उपदेशवाणीनो अनुपमलाभ आपता श्रीतीर्थाधिराजसिद्धगिरिनी छायामां पधार्या. ते महान् तीर्थनी यात्रा करी त्यां विश्रांतथया, तेवामां गोघाना संघ तरफथी चातुर्मासनी आग्रहपूर्वक विनति थतां ते महानुभावे तेनो स्वीकार कर्यो. त्यारे ते महात्मा पोतानुं वचनपाळवाने तत्परथया, तेसमये पालीताणाना संघे अतिआग्रहथी चातुर्मास रहेवा विनंति करी.

श्रीवीरमुनिनी वाणीरुप सुधापानथी अने तेओश्रीनी भावनाभरेली संगीतपूजाना अलभ्यआनंदथी वशीभूतथयेला श्रीसिद्धगिरिना संघे ते महात्माने राखवा महानयत्न कर्यो परंतु तेमां तेमने निष्फळता मळी. छेवटे ते भद्रिक श्रावकोए विहारकरवाने दिवसे उपाश्रयना द्वार उपर ताळां वास्यां हतां. महात्माश्री तैयारथइ नीचे उतरतां द्वार बंध जोइ आश्चर्य पामीगया अने लोकोनो तेवो भक्तिभरेलो आग्रह जाणी तेओए मुखपर आनंदना अंकुरो प्रगटकरतां जणाव्युंके, "गोघाना संघने आपेला वचननो भंग माराथी थइशकशे नहि." तेजवखते लोकोए विनीतभावे कह्युंके, "आप तैयारथइ चाल्या, तेटला उपरथी आपना वचननुं पालन थइचुक्युं, तोहवे कृपा करी अमारी नम्रविनति उपरआपे ध्यान आपवुं जोइए." तेना उत्तरमां महाराजश्रीए पोते आपेला वचननुं प्रतिपालन करवानी पोतानी दृढता दर्शावी जेथी लोकोए निरुपाये द्वार उघाडयां एटले तेओश्रीए विहारकर्यो.महात्माश्रीनो वचनपालनकरवानो आ महानगुण जोइ सर्वलोको आनंदाश्चर्यबनी तेमनी प्रशंसा करवा लाग्या. तेमहात्माश्रीनोआ महानगुण तेमना चारित्रजीव-

नने उज्जवळ बनावनारो थयोहतो. अने तेथी तेओ खरे-खरा श्रीवीरप्रभुना संतान कहेवाया हता.

पछी संवत् १९५५ नुं चातुर्मास गोघामां कर्युं हतुं. तेओश्रीना निवासथी गोघाना जैनसंघमां घणो धार्मिक उत्साह जागृत थयो हतो. चातुर्मास पूर्ण थयापछी गोघारी जैनोए सिद्धगिरिनी यात्राने माटे एकसंघ काढ्यो हतो, जेमां महाराजश्री साथे पधार्या हता. तीर्थाधिराजनी पवित्रयात्रा करी त्यांथी तेओश्री भावनगर पधार्या हता. त्यांथी 'श्री-संभवनाथस्वामी 'नी सुंदर प्रतिमाथी अलंकृत एवा वरते-ज गाममां आवी संवत् १९५६ ना ज्येष्ट मासनी शुक्र द्वितीयाने दिवसे सीहोर पधार्या हता. सीहोर ए गुजरा-तना इतिहासमां सिंहपुरना नामथी प्रख्यात छे. ते प्राचीन भूमिमां घणा धार्मिकसिंहो थइ गया छे. तेथी कांइ पण कारण मळतां तेनुं वातावरण अद्यापि धार्मिकउत्साह जा-गृतकरनारुं थाय छे महात्माश्रीवीरविजयजीना आगमनथी सीहोर खरेखरुं सिंहपुर बनीगयुं महान आडंबरथी तेओ-श्रीनो प्रवेशोत्सव करवामां आव्यो अने सीहोरी पर्वतोनी श्रेणीमां जैनशासनना जयध्वनिना प्रतिध्वनि पडी रह्या.

आ प्रसंगे सीहोरक्षेत्रमां एक अद्भुतप्रसंग बन्योहतो महात्माश्रीवीरविजयजीना चारित्रनो चमत्कार अने तेमना अनगारधर्मनी अद्भुतता ते प्रसंगमां देखाइ आवी हती. महात्मापुरुषोनुं हृदयबळ अद्वितीय अने चमत्कारी थइ शके छे. ज्यां उज्ज्वळचारित्र, तप अने उच्चभावनानुं बळ वृद्धि पामतुं होय त्यां धर्मना अधिष्ठायक देवताओनुं सानिध्य थाय छे. तेवा अनेक चमत्कारीप्रसंगो प्राचीन जैनइतिहासमां अनेकस्थळे वर्णवेलाछे. अवार्चीनकाले पण जो पुरुषो पोताना आत्मिकबळने वधारे अने योगींद्रवृत्ति धारण करे तो अधिष्ठायकदेवताओ तरफथी चमत्कारी प्रसंगो बन्यावगर रहेता नथी.

महात्माश्रीवीरविजयजी शुद्धहृदयबलने धारणकरनारा अने अढारसहस्र शीलांगना स्वरुपने जाणी तेने संयममार्गमां योजनारा हता. ते साथे तेओनी प्रभुभक्ति भावोल्लासथी भरपूर अने संपूर्ण श्रद्धावाळी हती. एवा ते महात्मानो प्रभाव कोइकाळे प्रगट थया वगर रहेतोनथी. तेनो एक दृष्टांतरुप प्रसंग सीहोरमुकामे बनी आव्यो हतो. लिंबडीनोवतनी पोपटलाल नामनो एक वणिक्पुत्र निर्वाहने अर्थे

सीहोर आवी रह्यो हतो. ते तद्दन बेहेरो अने मुंगो हतो. जाणे कोइ पूर्वना कर्मनी प्रेरणा थइ होय, तेम ते महाराजश्रीनी मूर्त्ति जोइ पूर्णानुरागी बनी गयो अने तनमनथी तेओश्रीनी भावनापूर्वक भक्ति करवालाग्यो. ते वणिक्पुत्रनी शुद्ध लागणीवाळी भक्ति अकस्मात् सफल थइ गइ. तेथी ते सांभळतो अने बोलतो थइ गयो. तेनी श्रवणेंद्रिय अने रसनेंद्रिय स्वस्थ बनी गइ. आ अद्भुतचमत्कारनी वार्त्ता शहेरमां प्रसरीगइ. अने श्रीमानमहाराजजीना योगबळनी भारे प्रशंसा थवालागी. सीहोरवासी जैन अने जैनेतरप्रजा ते धर्मवीर श्रीवीरमुनिना दर्शनकरवाने श्रेणीबंध आववा लागी शेहेरना राज्याधिकारीओ पण तेथी शंकित बनी महाराजश्रीनी पांसे आव्या अने ते वृत्तांत प्रत्यक्ष जोइ निःशंक-बनी ते महात्माने अभिनंदन आपवा लाग्या. सीहोरनी शौर्यभरेलीभूमिमां जैनधर्मना संयमनो महिमा उच्चस्वरे गवायो अने महाराजश्रीनो यशोराशि चारे तरफ छवायो हतो.

उपरना चमत्कारनी अद्भुतवार्त्ता चोतरफ फेलातां आसपासना आस्तिकलोको महाराजश्रीना दर्शन करवाने

आव्याहता. अने ते अद्भुत बनावनी खरी प्रतीति थतां मुनिश्रीवीरविजयजीने श्रीवीरशासनना एक प्रभावक तरीके मानताहता. आ समये सिद्धक्षेत्रना संघना अग्रेसरो महाराजश्रीने चातुर्मासनी विनति करवा आव्या अने महाराश्रीना चमत्कारी महिमानी कीर्त्ति सांभळी तेओना हृदयमां विशेष आग्रह बंधायो श्रीतीर्थाधिराजनी पवित्रयात्रा करवानी मनोवृत्ति वधवाथी महाराजश्रीए श्रीसिद्धगिरिना संघनी विज्ञप्ति स्वीकारी अने सीहोरथी विहारकरी तेओ पालीताणे आवी पोहाच्या, पालीताणाना उत्साही संघे महानआडंबरथी ते महात्मानो प्रवेशोत्सव कर्यो हतो. ते महोत्सवना जयध्वनिथी सिद्धगिरिनी गुफाओ गाजी उठी हती.

आ प्रसंगे ' चोटीला ' निवासी लालचंद नामना एक तपस्वी श्रावक त्यां आवेल तेना हृदयमां महाराजश्री तरफ पूर्णभक्तिभाव हतो. अने चारित्ररत्नथी अलंकृत थवाने तेनी तीव्रइच्छा हती, आथी ते उपकारी महात्माए संवत् १९५६ ना अषाढ शुक्लदशमीए तेमने दीक्षा आपी अने तेमनुं ' रुपविजयजी ' नाम स्थापित कर्युं. ते वर्षनुं चातुर्मास ते पवित्र गिरिराजनी छायामां कर्युं हतुं. आ

चातुर्मासमां महाराजश्रीए अनेक धार्मिक कार्यो करी श्री-वीरशासननी ' महान् ' उन्नति करी.

आ अवसरे अमरेलीथी गोंडळ समुदायना वीरजी स्वामी नामना ढुंढक साधुए महाराज श्रीनुं नाम, विद्वता अने तेमनी समाधानशक्ति सीहोरमां बनेल चमत्कार विगेरे विगेरे गुणो श्रवणगोचर करी पोताना हृदयमां प्रादुर्भूत थयेला " मूर्ति मानवानुं प्रयोजन शुं ? तेनी पूजा करवामां दोषापत्ति खरी या नहि ? मुनिओ मुहपत्ति हस्तमां राखे तेमज वंदन करनार गृहस्थने धर्मलाभ आपे एवो कोइ शास्त्रमां उल्लेख छे? " इत्यादि बावीस प्रश्नोना समाधान माटे महाराजश्री उपर एक पत्र लख्यो अने उत्तर आपवा विज्ञप्ति करी महाराजश्रीए पण पत्रद्वारा युक्तिपूर्वक शास्त्राधारोनी साथे प्रत्युत्तर आपी समाधान कर्युं अने तेनाज प्रभावे वीरजीस्वामिने प्रतिमा उपर संपूर्ण श्रद्धा थइ.

आ चातुर्मासमां महानुभाव श्री वीरविजयजीनी उपदेशवाणीरुप सुधासरिताना प्रवाहोए श्रोतृवर्ग उपर घणी असर करी हती. संसार भावनानी खरी भव्यता भव्या-

त्माओना हृदय उपर सारी रीते पडी हती. आ संसार एक अटवीना जेवो भयंकर छे. तेनी एक बाजु दुरंतदावानळना जेवो लोभ सळगी उठेलो देखाय छे. तेनी भयंकर ज्वालाओ तीव्र रुपे चारेतरफ प्रसरेली छे. तेवा ते प्रचंड अग्निने शमाववाने माटे वृद्धि पामतुं लाभरुप जल रेडवामां आवे छे छतां ते महान अग्नि शमावी शकातोनथी. बीजी तरफ विषयतृष्णारुप मृगतृष्णा अनेक प्राणीओने पीडा करी रही छे. तेवी भयंकर भवाटवीमां आवेला प्राणीने स्वस्थता क्यांथी प्राप्त थाय? तेवा संसारमांथी मुक्तथवाना साधनो वैराग्यनी उच्चभावना शिवाय प्राप्त थता नथी. ते उच्चभावना प्राप्तकरवाना साधनोमां सर्वथी श्रेष्ठसाधन सद्गुरुनुं शरणज छे. ते भयंकर भवाटवीमां पगले पगले आपत्तिओना उंडा खाडा आवे छे. तेनी अंदर प्राणीओ वारंवार पडया करे छे अने चिंताओना कंटकमय जाळाओमां अथडाया करे छे. अने तेथी मन वचन अने काया मां विषय विकारो स्फुरी आवे छे. जे विकारोने वश थयेलो प्राणी अनेक कर्मो बांधे छे तेथी तेने ए भवाटवी अनंतगणी वधती जाय छे. तेनो अंत आववो अशक्य थइ

पडे छे. पूर्वना कोइ सत्कर्मनो उदय आवे तो ते भवाट-वीने ओलंघीजवानुं साधन प्राप्त थइ आवे छे. नहिंतो ते अनंत अटवीनो अंत कदिपण आवतो नथी.

माताना अशुचिमय उदरमां अनेकसंतापने सहन करतो अने गर्भरूप कारागृहमां अनेक कष्टो भोगवतो प्राणी आ संसारमां क्षणिक अने कल्पितसुखो जोइ दुःखनो अंत आव्यो माने छे अने पोताना संसारने सफळ थयेलो गणे छे. तेवामां मृत्युनी सखीरूप जरावस्था आवीने उभी रहे छे. ते जरारूपी राक्षसी अकस्मात् कायानो कोळीओ करी जाय छे.

हवे आ संसारमां देखाती चित्ताकर्षक वस्तुओ तरफ दृष्टि नाखो. रत्न, हीरा, माणेक, सुवर्ण अने रूपानी पौद्-गलिक आभा—केवी खोटी छे? वस्तुताए तेमां कांइपण सार नथी. छतां मोहनी अंधताथी अंध थयेलो प्राणी ते तरफ अत्यंत प्रीति धारण करे छे अने तेने मेळववाने माटे अनेक अनर्थो उपजावे छे. वादळनी छाया जेवी ते वस्तु-ओनी अनित्यतानो अंतरमां विचार करवो जोइए. जेना हृदय उपर अनित्यतानी उच्चभावना आरूढथाय अने वैरा-

ग्यनी दिव्यज्योति प्रगटे, ते प्राणी आ संसारनी वासना-
मांथी मुक्त थइ शके छे.

आ संसारमां ज्यारे संबंधिओ तरफ दृष्टिपात करीए-
छीए त्यारे तेनी अंदर स्वार्थ शिवाय बीजुं कांइ पण जोवा-
मां आवतुं नथी. स्वार्थने वश थयेला संबंधीओ जुदी जुदी
आशाओ धारण करीने ममत्वने बंधावे छे. ने ममत्वनी
शृंखलाओ संसारी प्राणीने दृढबंधनथी बांधी ले छे. प्रथम
स्त्रीममत्वनी शृंखला ए महान् विषम छे. महात्माओ तेने
गळे बांधेली शिला कहे छे. स्त्रीनुं पौद्गलिक सौंदर्य रम-
णीय लागे छे, छतां ते वस्तुताए अरमणीय छे. मोहांधक-
विओए तेना अपवित्रपदार्थोने विविधउपमाओ आपी आ-
कर्षक वर्णव्या छे, पण ते वास्तविक रीते प्राणीने अधः
पात करवाना साधनरुप थाय छे. अने आभव 'अने'
परभवमां तेनां झेरीफळो भोगववा पडे छे. बीजी संतान
ममत्वनी शृंखला घणी मजबूत छे. ए शृंखलामां बंधाएलो
संसारी जीव जरा पण शांति मेळवी शकतो नथी. तेना
लालनपालननी आसक्तिथी पराधीन थयेलो संसारी तद्दन
अंध बनी जाय छे. ते पोताना खरा कर्तव्यने भुली जाय

छे अने ते संबंधी अनेकचिंताओ कर्या करे छे. ते चिंताओना विकट जाळमां गुंथाएला अने तेमनुं कल्पित श्रेयः करवानी आशाओमां मशगुलरहेनारो संसारी तद्दन आत्मसाधनना मार्गमांथी भुलो पडी जाय छे.

महानुभाव श्री वीरविजयजीनी रसनामांथी झरता आवा उपदेशनी अमृत धारामां स्नान करवाथी केटलाएक भव्यात्माओ निर्मल बनी गया अने तेमना हृदय उपर वैराग्यभावनानी छटा प्रसरीगइ. तेओमांथी केटलाएक संयमनुं महानसाम्राज्य मेळववाने उत्सुक थइ गया हता.

चातुर्मास वीत्या पछी संवत् १९५७ना कार्तिक कृष्ण छठने दिवसे पींडवाडा वगेरे स्थानोना निवासी प्रेमचंद प्रमुख चार श्रावकोने दीक्षा आपी अने तेमना अनुक्रमे 'प्रेमविजयजी' 'चंद्रविजयजी,' 'सौभाग्यविजयजी' अने 'हेतविजय जी' नाम स्थापित करवामां आव्यां त्यांथी विहार करी ते महानुभाव सर्वमुनिमंडळ साथे 'अणहिल्लपुर पाटणमां' पधार्या हता. आ समये श्रीकमलविजयजी महाराज त्यां बिराजता हता. तेमनां दर्शन करी पोताना आत्माने आनंदमग्नकरता तेओ त्यां रह्या हता.

पदवीप्रदान.

विक्रम संवत् १९५७ ना माघमासनी पूर्णिमानो दिवस आचारित्रना नायकना चारित्रजीवननी उच्चस्थितिनो हतो जेम ते दिवसनी रात्रे चंद्र पोतानी पूर्णकलाथी आ विश्वने आल्हादित करवा उदय पामवानो हतो. तेम तेज दिवसे महात्मा श्रीवीरविजयजी रूप पूर्णचंद्र सद्गुणोनी पूर्ण कलाओथी खीली रहेवा एक महान पदवी धारण करी आ भरतक्षेत्र रूप गगनमां उदय पामवानो हतो. गुजरातनी राजधानीमां आजे आनंद उत्सव थइ रह्योहतो. धर्मना पूर्णप्रेमी पटणीओ नवरंगितपोषाक पेहेरी गुरुमंदिरनी भूमि उपर फरता हता. अने पूर्णउत्साहथी मुखवडे जयध्वनि करता हता. आ दिवसे विविध गामोना सर्व संघ समुदायनी संमतिथी प्रथम श्रीकमलविजयजीने स्वर्गवासी न्यायांभोनिधि श्रीमद्विजयानंदसूरिना पट्ट उपर स्था-

पित कर्या एटले तेओश्रीने सूरिपद आपवामां आव्युं. त्यारथी ते महात्मा श्रीमद्विजयकमलसूरिना नामथी प्रख्यात थया छे. सांप्रत काले तेओ स्वर्गवासी श्रीविजयानंदसूरिजीना सर्वपरिवारना नेतारुपे रहेला छे अने उच्च गुणोथी तेओ सूरिपदने दीपावी रह्या छे. तेपछी आ चारित्रना नायक महात्मा श्रीवीरविजयजीने तेमना तेवा सद्गुणोथी आकर्षाइने समग्रसंघनी विनतीथी श्री आचार्य महाराजे तेओने उपाध्याय पदवी एनायत करी अने तेमनी साथे श्रीकांतिविजयजोने प्रवर्त्तक पदवी अर्पणकरी आ पदवी धारी महात्माओना योगथी भारतनी सर्वजैनप्रजामां हर्षोल्लास प्रसरी रह्यो अने अनेकदेशोना क्षेत्रोमांथी अनुमोदनना समाचारो श्रेणीबंध आववा लाग्या.

आ चरित्रना नायक हवे उपाध्याय श्रीवीरविजयजीना नामथी अंकितथया अने त्यारथी तेमना गौरवमां म्होटो वधारो थइ आव्यो हतो. जैनशास्त्रकार पंचपरमेष्ठीनो गणनामां उपाध्याय पदने चतुर्थकोटीमां मुके छे अने तेमनां उच्च लक्षणो विवेचनकरी आ प्रमाणे दर्शावे छे. जेओ विषयवननी अभिलाषाकरनारा मनरुपी गजेंद्रने शमयमरुपी

शृंखलाथी दृढ बांधीने मननरुप तीक्ष्णअंकुशवडे वश करी शके छे, जेओ निष्ठुर, कटु, दोषोने वधारनार, अनर्थ अने अप्रियवचन बोलता नथी, जेओ शम, यम अने संयम वगेरेमां सदा उद्यत थइ पापोने वधारनारी क्रियाओ कदिपण करता नथी अने जेओ तप, दया, शमादि गुण अने शीलने नाशकरनारा अने प्राणीओने दुःखोना कारणरुप थनारा इंद्रियरुपी शत्रुओने पोताना धैर्यबलथी जीती ले छे. तेवा गुरुओ उपाध्यायनी पदवीना अधिकारी थइशके छे ते उपरांत ज्ञानना उच्चगुणो अने वाचना वगेरेनी शक्ति पण तेओमां विकाश पामेली होय छे. उपाध्याय पदवीना ते गुणो महात्मा श्री वीरविजयजीमां प्रकाशता हता तेओश्री उच्चभावनाने अवलंबी पोताना मुनि धर्मनी प्रवृत्ति करी शकता हता. मनुष्यना स्वरुपनो विवेककरी तेना अस्तित्व अने जीवननो उद्देश स्पष्ट रीते विश्व व्यवस्थामां घटाडी शकताहता. आअमूल्य मनुष्य जीवननो उद्देश केवळ व्यर्थ करी नांखनारा अने अज्ञानना अंधकारमां गोथाखानारा जीवोनो उद्धार करवा तरफ तेमना हृदयमां करुणानो प्रवाह वहेतो हतो. तेओ बाह्यकरतां आंतर उपर, व्यवहारकरतां

परमार्थ उपर, आचारकरतां विचार उपर अने पदार्थकरतां भावना उपर वधारे लक्ष आपवा उपदेशकरता अने तेने माटे मार्गनी योजना साराहष्टांतोथी दर्शावी शकताहता आवा उच्चवर्त्तनथी तेओ श्री यथार्थ उपाध्याय बन्या हता. जेने माटे एक कविए नीचेनुं पद्य रचेलुं छे.

शिखरिणी

" हरत्यज्ञानांध्यं भविकहृदयाब्जानि सततं,
करोत्यन्तर्जातप्रकटसुविकाशानि समुदम् ।
कषायाणामुग्रं जनयति कुतापं ह्यशुभदं,
उपाध्यायो जीयाद् विजयपदयुग् वीरतरणिः ॥१॥

" श्री वीरविजय उपाध्याय रुपीसूर्य हंमेशा अज्ञानरुप अंधकारने हरे छे, भविजनोना हृदयरुपीकमळोने हर्षथी प्रगटविकाशवाळा करे छे अने कषायोने अशुभ अने उग्र एवो परिताप उपजावे छे. "

महात्मा श्री उपाध्यायजीए ते वर्षनुं चातुर्मास पण पाटणमांज कर्युं हतुं. ते अरसामां ते ते ज्ञानरसिक उपा-

ध्यायजीए पाटणना ज्ञानना भंडारो लक्षपूर्वक अवलोकी तेमांथी केटलाएक पुराणाग्रंथोनी शोधकरी अने तेमनी उपयोगी नकलो करावी हती आ समये कुंडलाथी वीरजी स्वामीए महाराजश्री साथे पुनः पत्रव्यवहार कर्यो. परिणाम ए आव्युं के तेमना अंतरमां ढुंढक मतनी असत्यता ठसी अने ते मतनो त्याग कर्यो. त्यार बाद शत्रुंजयतीर्थनी यात्रा करी प्रतिमानी निंदारुप पापनो पश्चाताप करी पाटणमां महाराजश्रीनी सेवामां हाजर थया अने चारित्रनी याचना करी. महाराजश्रीए पण संवत् १९५८ना कारतकमासनी कृष्णदशमीए दिक्षा आपी 'विनयविजयजी' नाम स्थापन कर्युं. त्यार बाद महाराजश्रीए पाटणथी विहार कर्यो. 'चाणस्मा' 'म्हेसाणा' 'वीसनगर' आदि स्थळोने पोताना पवित्र पदन्यासथी ववित्र करता वडनगर स्थळमां के ज्यां सर्वसूत्रशिरोमणी श्रीकल्पसूत्रनी वांचनानो प्रारंभ थयो छे त्यां पधार्या त्यांना श्रीसंघना अत्याग्रहथी १९५८ नुं चातुर्मास पण तेज पवित्र नगरमां पसार कर्युं. चातुर्मास पछी विहार करी निग्रंथशिरोमणी श्रीमद्विजयकमलसूरीश्वरजी महाराज त्यां (वडनगरमां)

पधार्या तेओश्रीनी साथेज त्यांथी विहार करी श्रीतारं-
गाजी तीर्थनी यात्रा करी उंझामां पधार्या त्यां प्रवर्त्तकजी
श्रीमत् कान्तिविजयजी, मुनिराज श्रीहंसविजयजी विगेरे
महात्माओनो मेळाप थयो, त्यां एकत्रित थयेल मंडळे
सूरीश्वरजी महाराजश्रीनी पवित्र छायामां केटलोक समय
आनंदपूर्वक व्यतीत कर्यो. त्यारबाद महाराजश्रीए पोते
गच्छाधिपतिनी आज्ञा लइ संसारना तापथी संतप्त थयेल
भव्यात्माओने उपदेशामृतना सिंचनथी शान्त करता सि-
द्धपुर आदि स्थळोनी स्पर्शना करता करता पाल-
णपुर पधार्या महाराजश्रीना अपूर्व प्रभावथी आकर्षित
थयेला त्यांना दिवान साहेब रा. मंगलजी महेता विगेरे
संघना. आग्रहथी १९५९ नुं चातुर्मास पण त्यांज कर्युं
महाराजश्रीना उपदेशथी श्री पालणपुरना संघे एक अ-
पूर्व लाभ मेळव्यो समाजने छिन्नभिन्न करी नाखनार
धर्मने कलंकित करनार अने धर्मि नामने लजावनार दी-
र्घकालीन कुसंपनो नाश करी आपसआपसमां ऐक्यता
साधी त्यांनुं चातुर्मास शान्तिपूर्वक पसार करी अप्रतिबद्ध
विहारी महाराजश्रीए त्यांथी विहार करी दांता पधार्या,

त्यांना महाराणाजी पण महाराजश्रीना अपूर्व प्रभावथी आकर्षाया अने पोताना दिवान पीताम्बरदासने कही कुंभारीयाजीनी यात्रा माटे पधारता महात्माश्रीने मार्गनी वीकटताने लइने कोइपण जातनुं विघ्न न नडे ते माटे पूरतो बंदोबस्त कराव्यो तथा पालणपुर आदिना जे श्रावको यात्रार्थे साथमां हता तेओनुं मुंडकु पण माफ कर्युं आ समये इडरनो संघ आव्यो अने साथे परमप्रभावक श्रीमद्विजयकमलसूरीश्वरजी महाराजा पण पधार्या, त्यांथी तेओश्रीनी साथेज इडर, सावली, वीजापुर, मगोडी, दहेगाम, कपडवंज, आंतरोली, महुधा, छाणी अने डभोइ वगेरे स्थळोनी स्पर्शना करता करता वडोदरामां पधार्या अने १९६० नुं चातुर्मास पण सूरीश्वरजी महाराजश्रीनी साथे त्यांज कर्युं. त्यांनुं चातुर्मास पण शान्तिपूर्वक पसार थयुं अने विहार करी 'डभोइ' 'छोटाउदेपुर' 'कुक्षी' 'राजगढ' विगेरे विगेरे स्थलोने पवित्र करता रतलाम पधार्या. त्यां श्रीमद् विजयकमलसूरीश्वरजी महाराजसाहेब श्रीजीनो पवित्र मेळाप थयो त्यांथी तेओश्रीनी साथेज लुणीआ डुंगरसीमलजी केसरीमलजीना संघमां 'इन्दोर'

'उज्जयनी' अने मांडवगढ वगेरे तीर्थस्थळोनी यात्रा करी त्यांथी सूरीश्वरजी महाराज साहेब महदूपुर पधार्या अने महाराजश्री तेओश्रीनी आज्ञा लइ ' सहाजानपुर ' 'सारंगपुर' गुनाकी छावणी अने सीपरीकी छावणी आदि स्थळोने पावन करता ग्वालीयर लश्कर पधार्या, अने संवत् १९६१ नुं चातुर्मास पण त्यांज कर्युं. त्यांना श्रीसंघमां कजीआए घणुंज भयंकर रुप पकडयुं हतुं के जेनी शान्ति माटे भारे प्रयत्न सेवया छतां पण श्रीमान् सिंधीआ सरकारने निष्फळताज मळी हती. परन्तु समयज्ञ महाराज श्रीए समयने अनुलक्षी श्रीसंघने समजाव्युं के–

आत्मोन्नति–आत्मानो उद्धार त्यारेज थशे के ज्यारे आखी आलम प्रत्ये आत्मभाव–समानभाव आवशे. ज्यां पोताना साधर्मिओ–धर्मबन्धुओ ते पण पोतानाज शहेरना तेओनी प्रत्ये पण समान भाव नथी त्यां अखिल आलम प्रत्ये ते भाव क्यांथी आववो छे ? परन्तु लक्षमां राखशो के–ज्यां सुधी ते भाव नथी त्यांसुधी उन्नति पण नथी. महानुभावो ! ते भावनी प्राप्ति माटे

साधर्मि प्रत्ये प्रेमभावने खीलववो पडशे. स्नेहभर नेत्रोए तेओने निहाळवा पडशे. तेओने निहाळतांनी साथेज अंतरमां प्रेमनो प्रवाह वहेवो जोइए. ज्यारे ते दशा आवशे त्यारेज धर्म प्रेम जागृत थशे, ज्यां ते दशा नथी त्यां धर्मप्रेम कइ रीतीए होइ शके? आ प्रश्न ओछा विचारनो विषय नथी. भाग्यशालिओ ! धर्मप्रेम विनानी रुक्ष धर्मक्रियाओथी आत्मकल्याणनी आशा राखवी ए रत्ननी प्राप्ति माटे ग्रथिलनी माफक धुमाडामां बाचका भरवा जेवुं छे.

आ उपदेशनुं परिणाम पण इष्टज आव्युं. चिरकालीन कजीआनो विलय थयो अने श्रीसंघमां अनुपम शान्ति प्रसार पामी. त्यांनुं चातुर्मास पण अनुपम शान्तिनी साथेज पूर्ण थयुं अने वाचकपदधारक मुनिमत्तंगजे मुनिधर्मने अनुसरी त्यांथी विहार कर्यो अने 'झांसी' 'कानपुर' 'लखनौ' 'अयोध्या' अने 'बनारस' वगेरे शहेरोमां जीवन साहित्यना मर्मज्ञ, संवेग सुधाना पोषक अने प्रचारक महाराजश्रीए पोतानी विलासिनी वाग्धारा द्वाराए शान्त सुधारसनी रेलमछेल करी मूकी.

त्यांथी आगळ प्रयाण करता महाराजश्रीए श्रीमान् स्थुलीभद्र महाराजा के जेओए वेश्याना विलासभूवनमां विकारवर्धक वर्षाऋतुने व्यतित करवा छतां अहर्निश षड्रसनो उपभोग करवा छतां अने ते वारांगनाना विलासमय संगित, विनोद अने विलापने श्रवणगोचर करवा छतां पण पोतानी प्रतिज्ञाथी पोतानी विरक्त दशाथी लेशमात्र पण विचलित न थतां विलासिनी अने विकारनीज मूर्ति वारांगनाने विरागिणी अने वैराग्यनी मूर्ति बनावी. तेओश्रीनी निवासभूमिमां विकारोनी विरसताने तेना कटुकतर विपाकोने दर्शावनारी वैराग्यनी दृष्टिने वरसावता, अपश्चिमतीर्थपति श्रीमानमहावीरस्वामी महाराजानुं निर्वाणकल्याणक अने जन्मकल्याणक ज्यां थयुं छे ते पावापुरी अने क्षत्रीयकुंड नामना नगरमां प्रभुनी कल्याणक भूमिनुं माहात्म्य तेनी स्पर्शनाथी तेना दर्शनथी अने तेनी चिंतनाथी थता अपूर्वलाभोनुं मनन तथा प्रकाशन करता, अने अनेक लब्धिना भंडार अने प्रभुमहावीरना पट्टधर श्रीमान् इंद्रभूति (गौतमस्वामी) महाराजाना जन्मस्थान गोबरगाममां गणधरपदनी

महत्ताने विचारता अने विस्तारता तेमज प्रभु महा-
वीरना अनन्यभक्त अने क्षायक सम्यक्त्वना स्वामी अने
भावितीर्थपति श्रीमान्श्रेणीकमहाराजा अने मानव-
जीवनमां पण दैविक भोगो भोगववा छतां पण 'स्वामी'-
शब्दना श्रवण मात्रथीज संसारना त्यागनी भावना करी
तेनो त्याग करनार शालिभद्र अने धनाजी वगेरे वगेरे
धर्मसिंहोथी सुशोभित अने परमात्मा महावीरनी पध-
रामणीथी परमपूनित बनेली श्रीमती राजगृही नगरीमां
परमात्मा महावीरनी जीवनघटनाओ तेमनी उदारता
तेमनी सदाचारपरायणता तेमनी सहीष्णुता तेमनी शुभ-
विचारश्रेणी विश्वोद्धार करवानी सद्भावना तेमनी वीरता
अने धीरता आदि अनेक सद्गुणो तेमनो अलौकिक
प्रभाव तेमनी अलौकिक देशना अरे! लोकोत्तर पुरुषनी
लोकोत्तर स्थिति लोकोत्तर भावना अने लोकोत्तर क्रि-
याओनुं उद्बोधन करता तेमज धर्मवीरोनी धर्मवीरतानुं
दर्शन करावता तेमज विपुलगीरि अने वैभारगीरि के जे
पवित्रगीरिओ उपर शालिभद्र अने धन्नाजी वगेरे मुनि-
वरोए अनशन करी अनुत्तर विमान वगेरे देवगतिओ

तेमज शिव (मोक्ष) नगरने स्वाधीन कर्युं छे तेवा परम-पवित्र अने तीर्थरुप गीरिओथी अलंकृत नगरीमां एकांतिक अने आत्यंतिक सुखना स्थानरुप शिव (मोक्ष) नगरनुं स्वरुप बतावबानी साथे तेनी प्राप्तिना उपायो सम्यग्दर्शन—सम्यग्ज्ञान अने सम्यक् चारित्र तेनुं स्वरुप ते त्रिपुटीनी आराधनामांज तेनी प्राप्ति तेमांना एकनी पण विराधना अवज्ञा अरे ! सहजमात्र अरुचि ते पण संसारने वधारनारी छे, इत्यादि वातोनुं स्पष्टपणे विवेचन करता, भव्यात्माओना हृदयोमां ते हकीकतने सारीरीतिए ओतप्रोत करता, वीस तीर्थाधिपतिओनी निर्वाणभूमि श्रीसम्मेतशिखरजी नामक पवित्र तीर्थनी यात्रा करी वर्द्धमाननगर थइ बंगाळानी राजधानी रुप कलकत्ता शहेरमां पधार्या अने १९६२ नुं चातुर्मास पण ते शहेर-मांज व्यतीत कर्युं.

बंगाळदेशमां विचरता महाराजश्री स्थळे स्थळे मांस भक्षण अने मद्यपान रुप अनिष्ट—आत्मघातक कुटेवोनो नाश करवा माटे ते दुष्टव्यसनना पाशमां फसा-

येलाओने तेनाथी छुटा करवा घणीज सरस अने स्पष्ट-
रीतिए समजावता हता के-

प्राणीओना परमप्रियप्राणोनुं अपहरण करीने जे मांस भक्षणनी इच्छा करे छे ते धर्म रुपी वृक्षना दया-नामक मूळनुं उन्मूलन करी नाखे छे. जे माणस अहर्निश मांसनुं भक्षण करवा छतां पण दया करवानी इच्छा राखे छे तेनी ते इच्छा अग्निमां वेलडीने रोपवा जेवी छे. स्मृतिकार मनु पण कहे छे के प्राणीनो नाश करनार, तेना मांसनो विक्रय करनार, ते मांसनो संस्कार कर-नार-पकवनार, ते मांसने लावी आपनार, तेनुं भक्षण करनार अने तेने अनुमोदन आपनार ए सर्वे पण घातकी छे. हिंसक छे अरे! अहिंसाधर्मना परम शत्रु छे. प्राणी-ओनी हिंसा कर्या विना मांस बनी शकतुंज नथी अने प्राणीनो वध ए स्वर्गमां नहि पण नरकमांज लइ जनार छे. माटे मांसनो त्याग करवो ए सर्वथा उचित छे. जे पोताना मांसनी पुष्टि माटे अन्यना मांसनुं भक्षण करे छे तेज खरेखरा घातको छे. जे शरीरनी अंदर नाखेला मिष्टान्नो-विष्टामय बनी जाय छे अने अमृतमय पदार्थो

पण मुत्र–पेशाबरुप थाय छे ते अंगने माटे कोण पापनो आश्रय करे. मांस भक्षणमां दोष नथी एम कहेनाराओ खरेखर दुरात्माओ छे. तेओने गुरु तरीके या पूज्य तरीके माननारा पण मनुष्यो नहि पण हिंस्र पशुओ छे. जे मनुष्योना आकारमां छे तेओ पण हिंसक–घातकनाज उपनामने धरनार छे. खरेखर जेओ दिव्यभोजनोनो त्याग करी मांसनुं भक्षण करे छे तेओ सुधारसनो त्याग करी हलाहल झेरनुंज पान करे छे. केटलाक अज्ञानीओ अज्ञान दशाथी मांसनुं भक्षण करे छे अने देव–पिता अने अतिथिओने माटे कल्पना करे छे अने कहे छे के–पोते खरीद करीने या तो स्वयं उत्पन्न करीने मेळवेलुं या तो कोइना द्वाराए मंगावेलुं मांस जो देवताओने या तो पिताओने धरावीने खानारो मनुष्य दोषने पात्र नथी. तेओने, अहिंसा धर्मनुं प्राणान्ते पण पालन करनारा तेना रहस्यने सारी रीतिए समजनारा धर्मात्माओ कहे छे के– हालाहल–झेरनो एक नानामां नानो कणीओ पण जेम प्राणनाशक छे. तेम अल्प मांसनुं भक्षण पण धर्मघातक छे. अरे! धर्मना नामे करातुं तेनुं भक्षण धर्मि नामने कलंकित

करवानी साथे धर्मने—धर्मशास्त्रने अने तेवा धर्मशास्त्रना प्रणेताने पण कलंकित करे छे. तेना नामस्मरणथी पण धर्मात्माओ महापाप माने छे तो अहिंसा धर्मनो पूजक आत्मिक सुखनो अभिलाषी अने अधर्मना नाम मात्रथी कंपारी खानारो अल्पकालमांज अनेक जंतुओनी उत्पत्तिथी दूषित बननारुं अने नरक गतिमां लइ जनार एवा मांसना भक्षणथी जरूर निवृत्त थाय छे. अने निवृत्त थाय तोज अहिंसा धर्मनुं पालन थाय अने आत्महित साधी शकाय, अन्यथा नहि तो धर्मपालन अने तेथीज नहि आत्मकल्याण माटे आत्मकल्याणना अर्थिओनी फरज छे के तेनाथी सर्वांशे निवृत्त थवुं.

भाग्यशालिओ ! मदिरापान पण धर्मना अर्थिओ माटे त्याज्य छे, तेना पान मात्रथी बुद्धिनो विनाश थाय छे, तेना निशामां चकचुर बनेला प्राणीओ माताने पत्नि तरीके अने पत्निने माता तरीके मानवा मंडी पडे छे. मदिराना पानथी चळचित्त बनेला प्राणीओने स्व या परनी खबर पडती नथी. सेवकने स्वामी तरीके अने स्वामीने किंकर—तरीके मानवा तैयार थइ जाय छे. मद्यपानथी मू-

छित थयेल मनुष्यना खुल्ला थइ गयेल मुखमां विवरनी कल्पना करी श्वानो प्रश्रवण करे छे तेनी पण तेओने खबर पडती नथी. मद्यपानना रसमां निमग्न बनेलो प्राणी यथा जात (वस्त्रविहिन) थइने रस्ता वच्चे शयन करे छे अने गुप्त—अकथनीय एवी पण पोतानी वातने लीला मात्रमां प्रकाशित करी दे छे.

मदिरा पानथी मदोन्मत्त बनेलो प्राणी ग्रहग्रस्त मनुष्यनी माफक नाचतान करे छे शोकग्रस्तनी माफक चीसाचीस करी मूके छे अने दाहज्वरथी प्रपीडित मनुष्यनी माफक भूमि लुंठन करे छे. हालाहाल झेरनी माफक मदिरा पण अंगने शिथिल करी नाखे छे इंद्रियोने शक्तिहीन बनावी मूके छे तेमज प्रबळ मूर्छाने पण आपे छे जेम अग्निना कणीआथी तरणानो समूह बळीने भस्मसात् थइ जाय छे तेम सारासारनो विवेचक विवेक, इंद्रियोने स्वाधीन बनावनार संयम, स्वपरनुं भान करावनार ज्ञान, सर्वत्र जय देनारुं सत्य, मनने विशुद्ध करनारुं शौच, विश्ववल्लभा दया अने सारी आत्मने शान्ति आपनारी क्षमा विगेरे सद्गुणोनो समूह क्षण भरमां वि-

नाश करी नाखे छे. माटे रोग पीडितने अपथ्यनी माफक सर्व दोषोनुं अने सघळी आपदाओना कारणभूत एवा मद्यपाननो पण सर्वथा त्याग करवो जोइए.

आवा आवा रसमय अने हितकर उपदेशनुं परिणाम पण हितकरज नीवड्युं, घणा बंगाळीओए ते दुष्ट व्यसनोनो त्याग कर्यो अने अहिंसा धर्मना सारने तेमज पोताना कर्त्तव्याकर्त्तव्यने भक्ष्याभक्ष्यने तेमज पेयापेयने पण समज्या.

कलकत्ताना चातुर्मासमां त्यांना श्रावकोने महाराजश्रीए पोताना अपूर्व चारित्रथी तेमज उपदेशथी गुरुतत्त्वनुं भान घणीज सारी रीतिए कराव्युं. कलकत्ताना श्रावकोने त्यागी महात्माओनो आ प्रथमज परिचय हतो महाराजश्रीनुं अपूर्व संयम अने वैराग्य दशाने निहाळी तेओ पण घणाज रंजित थइ गया. चारित्रनुं खरुं स्वरुप तेओ समज्या मुनिओनो खरो मार्ग—पंचमहाव्रतोनुं त्रिविधे त्रिविधे धीरता पूर्वक पालन, मधुकरी—वृत्तिथी धर्म रक्षणने माटे शरीरनुं पोषण शत्रु या मित्र प्रत्ये कंचन या काष्ट प्रत्ये पारस या पाषाण प्रत्ये अरे ! आखी आलम प्रत्ये स-

मान भाव तेमज स्व तेमज परना हितमांज प्रवृत्ति तेमांज अप्रमत्तता, स्व अने पर ने अहितकर कथनी श्रवण करवाना प्रसंगे बधिरता, तेवा बनावना दर्शन प्रसंगे अंधता तेमज तेवा प्रकारनी कथनी करवा माटे सदा माटे मूकतानो स्वीकार तेमज एक शाश्वतपदनी प्राप्तिने लक्षमां राखी हरकोइ उचित एटले धर्मसाधक प्रवृत्तिनो उपदेश इत्यादिरुप खरा मुनिमार्गने अनुभव गोचर कर्यो.

महाराजश्रीए त्यांना श्रावकोना अंतरमां प्रभुभक्ति, ज्ञानभक्ति अने साधर्मिभक्ति विगेरेनुं स्वरुप पण सारी रीते ठसाव्युं. ते चातुर्मासमां त्यांना श्रावकोए अष्टाह्निक महोत्सव पाठशाळानुं स्थापन तेमज साधर्मिओना उद्धारने माटे पण घणी सारी उदारता वापरी हती, अधिक शुं कहेवुं त्यांना श्रावको महाराजश्रीना पूनित परिचयथी अमृतमय उपदेशथी परमात्मानी आराधनामां सद्गुरुओनी सेवामां अने सर्वज्ञोक्त धर्मानुष्ठानोमां अत्यंत आसक्त बनी गया हता.

चातुर्मासनी पूर्णतानी साथेज महाराजश्रीए त्यांथी विहार कर्यो अने अजीमगंज पधार्या, त्यां सूरीश्वरजी

महाराजश्री बीराजमान हता तेओश्रीना दर्शननो अपूर्व लाभ मल्यो, त्यांथी पोताना नायकनी साथेज महाराजा बाहादुर बाबुना संघमां विश्ववल्लभ वासुपूज्य स्वामिनो निर्वाण भूमि (चंपापुरी) मां पधार्या, ते भूमिना दर्शन-नो अने स्पर्शननो अपूर्व लाभ मेळव्यो अंतरमां अपूर्व आनंद थयो.

त्यांथी सूरीश्वरजी महाराजा पट्ना अने अहल्ला-वाद विगेरे नगरोमां संसार सारहीन छे तेनो त्याग ए शिवसुखना अभिलाषीओने माटे खास जरुरी छे तेना त्याग सिवाय संपूर्ण सिद्धि थवीज नथी, तेनी साधना माटे विराग भावनाने आदर आपवो पडशे, सांसारिक पदार्थो उपर अनादिकाळथी आसक्त थयेली आसक्तिने छोडवी पडशे, ते छांडवा माटे सांसारिक पदार्थोनी सांसा-रिक सम्बन्धोनी असारता, अस्थिरता अने अनुपयोगिता शास्त्रोद्वारा समजवी पडशे आवी आवी अनुपम रीतिए निवृत्ति मार्गनुं निरुपण करता ग्वालीयर पधार्या अने महाराजश्री तेओश्रीनी आज्ञानो स्वीकार करी आग्रा पधार्या त्यां स्फटिक रत्न वगेरेनी मनोहर प्रभु मूर्तिओनी

अने परमोपकारी पूज्यपाद परमगुरु न्यायाम्भोनीधि सद्गत श्रीमद्विजयानंद सूरीश्वरजी महाराजश्रीनी मूर्त्तिनी अंजनशलाका करावी अने १९६३ नुं चातुर्मास पण त्यांना संघनी विज्ञप्तिथी त्यांज कर्युं.

महाराजश्रीनुं चातुर्मास आग्रामां सांभळी पंजाबना श्रावकोनी पंजाबमां पधारवा घणीज विनंति थवाथी महाराजश्रीए ते देशमां जवानी पोतानी इच्छा जणावी पंजाबी श्रावको पण आनंदित थइ रवाना थया. चातुर्मास बाद सूरीश्वरजी महाराज पण त्यां पधार्या, त्यांथी तेओश्रीनी साथेज मथुरा दील्ली विगेरे विगेरे स्थळोए सर्वज्ञ कथित सन्मार्गनी प्राप्तिनी दुर्लभता, प्राप्ति पछी पण तेना यथार्थ पालनमां रहेली मुश्केलीओ विगेरेनुं सारी रीते स्पष्टीकरण करता अंबाला शहेरमां पधार्या, ते अरसामां गुजरावालामां विक्रम संवत् १९६४ ना वैशाख मासनी शुक्ल ६ ना रोज परमगुरु श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी महाराजश्रीनी स्तुभनुं प्रतिष्ठा मूहूर्त्त निश्चित थवाथी सूरीश्वरजी महाराजश्रीनी साथेज लुधीयाना, जलंधर, जंडीयाला, अमृतसर, लाहोर विगेरे स्थळोए मानव जीवननी दुर्लभता दर्शाववानी

साथे आर्यदेश, आर्यजाति आर्यकुळ तेमां पण शरीरनी संपूर्णता तेनो आरोग्यता, आंतरविशुद्धि तेमज वचन-नी सुंदरता वगेरेनी प्राप्ति पण केटली दुर्लभ छे ते समजाववानी साथे ते दरेकनी सुन्दरताना रक्षणने माटे सानुकुळ सहवासोनी पण तेटलीज नहि बलके तेथी पण अधिक जरुर छे. तेनी सार्थकता तो त्यारेज थाय के ज्यारे कोइ अपूर्व संयमी, तेनी सार्थकताना साधनोने सारी रीतिए समजावनार तेमज तेनी साधना माटे अ-विश्रांत रीतिए तत्पर रहेनारा महापुरुषनो समागम थाय, तेमनी आदरपूर्वक सेवा करवानी सद्भावना थाय, तेने सफळ करवा बनतो प्रयत्न सेवाय, तेनी साथे ते महा-पुरुषोना सदुपदेशनुं श्रवण अने मनन करी तेने यथा-शक्ति पोताना वर्तनमां योजाय. भाग्यशाळिओ ! महा-पुरुषोनो सहवास परिपूर्ण पुन्यना उदये प्राप्त थाय छे. ते सहवासनी अवगणना या उपेक्षा ते खरेखर पोताना पुन्योदयनी अरे ! पोतानी सुखाकांक्षानी अपूर्व आनंद मेळववाना मनोरथनीज अवगणना या उपेक्षा छे. माटे सुखाकांक्षीओनी फरज छे के ते सहवासनी—तेवा अपूर्व

समागमनी अवगणना या उपेक्षा न करतां तेनो पोताथी बनतो लाभ लेवो.

आवी आवी जरुरी बाबतोनुं ज्ञान रसपूर्वक आपता गुजरानवालामां पधार्या, त्यां निश्चित दिवसे मंगळमुहूर्ते परमगुरु श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी महाराजश्रीनी स्तुभनी तेमज पादुकानी प्रतिष्टा सूरीश्वरजी महाराजश्रीनी साथे रहीने करी अने १९६४ नुं चातुर्मास पण सूरीश्वरजी महाराजश्रीना शिरछत्रपणा नीचे त्यां गुजरानवालामां पसार कर्युं. सूरीश्वरजी महाराजश्रीना सहवासनो आनंद तेज जाणी शके के जेणे तेनो स्वाद चाख्यो होय.

चातुर्मास पूर्ण थये त्यांथी विहार करी लाहोर, अमृतसर आदि स्थानोनी स्पर्शना करता पुनः अंबाला शहेरमां पधार्या, त्यांथी त्यांना संघनी साथे श्रीसंघने संघ काढवाथी थता लाभोनुं वर्णन करता, संघ काढनार पुण्यशालिओमां उदारता, सदाचार, सहिष्णुता तेमज सद्भावनानो निवास होवो जोइए. आ चतुष्टयीथीज संघनी सहचारीओने चतुष्टयीवान् बनावी शके छे, तेनाथीज संघ साथे यात्रा करवाथी थता अपूर्व आनन्दनो

लाभ आपी शके छे, सहचारीओना हृदयमां संघ काढवा-
थी थता लाभोने ओतप्रोत करी नाखे छे, अरे ! अन्य
प्रेक्षकोना हृदयमां पण धर्मबीजने वावीदे छे. परिणामे
अनेकने धर्मी-परमात्माना मार्ग प्रत्ये प्रेमवृत्तिवाळा,
ते मार्गनी प्रशंसा करनाराओ अने मार्गानुसारी बना-
वी दे छे. आवा शुभ प्रसंगो हीनभागीओने मळी शक-
ताज नथी. आवा प्रसंगो तरफ अभिरुचिने बदले
अरुचि बतावनाराओने शास्त्रकार महाराजाओ गुरुकर्मी
बहुल संसारी विगेरे विगेरे उपमाओ आपे छे, तेथीज
धर्मात्माओ तेओना तरफ करुणा या तो मध्यस्थ भाव-
नानुं अवलंबन करी पोतानां तेवां शुभ कार्यो तरफ पो-
तानी शक्तिना प्रमाणमां शुभभावनापूर्वक रच्या मच्या
रहे छे, तेनाथीज तेओ पोतानी जींदगीनी सफळता मा-
नता, जींदगीनी सफळता करी जाय छे अने पेला अरुचि
धरावनाराओ, तेवां कार्यो तरफ तिरस्कार बतावनाराओ-
छेवटे अंतरमां न रही शके तो पत्रो द्वाराए ते तिरस्का-
रने व्यक्त करी धर्मि समाजमां अधर्मि तरीकेनी प्रसिद्धि
पामी मळेली जींदगीने निरर्थक गुमावी बोधि-सम्यक्-

त्वरत्ननी प्राप्ति दुर्लभ करी संसारभ्रामक पाथेय–भातुं तैयार करी चिरकालसुधी संसारभ्रमण करनारा थायछे. इत्यादि संघनुं स्वरुप समजावता जगाद्री, साहारणपुर, देववन अने मुजफरनगर आदिनी स्पर्शना करता मार्गमां तीर्थनुं स्वरुप, तीर्थयात्रमां छ 'री'नुं स्वरुप, तेनी तारकतानुं स्पष्टीकरण करतां जणावता के–

तीर्थनुं स्थान ए धर्मिओने माटे एक निवृत्तिनुं खरेखरुं साधनछे. तीर्थभूमिनुं वातावरण घणुंज पवित्र होयछे. ते भूमि अनेक महर्षिओना पादस्पर्शथी पुनित होय छे. ते स्थळोमां अनेक महात्माओनो तेमज अन्य धर्मात्माओना सहवासनो पण अपूर्व लाभ मळी शके छे, तेओना सहवासथी धर्मभावना पण अधिक प्रमाणमां जाग्रत थाय छे. ते स्थानमां तेवी उत्तम सामग्रीओनो सद्भाव होवाथी अंतःकरणनी निर्मळता परिणामनी विशुद्धि–भावनी वृद्धि शीघ्र थइ शकेछे. खरेखर ते स्थान धर्मात्माओ माटे तो अत्यंत उपकारक छे. ते स्थान खरेखरी उदारता, सदाचारिता अने सहिष्णुतानी संप्राप्ति माटे असाधारण साधन छे. यात्रालुओनुं तीर्थस्थानमां आगमन पोतानो

सुलक्ष्मीनो सदुपयोग करवा अनेक प्रकारे तपोनुष्ठान करवा अने जींदगीनी सफळता मेळववा माटेज होय छे, एटले त्यां तेओनी चितवृत्ति प्रायः उदारज होय छे, तेना प्रभावे तेमना अंतःकरणमां तेमना अंतरंग शत्रुओ जेवाके काम, क्रोध मान, माया लोभ विगेरे मंद पडी जाय छे. केटलीक वखते ते स्थाननो प्रभाव जींदगीभर टकी रहे छे. आवी जींदगी निवृत्तिमय बनी जाय छे, प्रवृत्ति-मां पडवा अंतर ना पाडे छे, प्रवृत्ति रुचिकर नथी थती, संसार प्रत्ये साचो विराग आवी जाय छे. भले कदाच जींदगीने माटे तो तेम न बने परन्तु तेटलो समय तो जरुर धर्मात्माओने, आत्मिकगुणोने खीलववामां अने पौद्गलिक वासनाने हठावी आत्मभावनाने जाग्रत कर-वामां सहायक थइ पडे छे, कारण के ते स्थानोमां प्रायः दरेक वस्तुओनी प्राप्ति थइ शके छे. दरेक इंद्रियोना शुभ व्यापारो त्यां मोजुद होय छे. अंतरमां अवारनवार तेना तेज शुभविषयो उपस्थित थया करे छे, तेना परिणामे मन रात्रि अने दिवसे बेसतां अने उठतां खातां अने पीतां तेमां ने तेमां मश्गुल होय छे एटले नाथ (सेनाधिपति)

विनाना सैन्यनी माफक अने माता विनाना बालकनी माफक इंद्रियो रांक जेवी बनी जाय छे, एटले तेनी पासे धारेली धारणाओ खुशीनी साथे पार पाडी शकाय छे. इंद्रियो स्वछंदी छतां पण अंतःकरणनी आगळ ते सीधी ढोर जेवी छे तेनी आगळ तेनुं कंइ पण चाली शकतुं नथी. मननी प्रवृत्ति जे व्यापारोमां होय छे ते व्यापारोमां इन्द्रियोने पण जोडावुं पडे छे. माटेज मानसिक विशुद्धि इन्द्रियोना व्यापारोने विशुद्ध बनावनार छे अने आपणे उपर कही गया ते प्रमाणे मननी विशुद्धि माटे ते स्थान अत्यंत उपकारक छे. माटेज ते स्थाननो महिमा अनिर्वचनीय छे एम आगमवेत्ताओ कही गया छे अने कही रह्या छे अने तेना वास्तविक अनुभव पण धर्मना रहस्यने समजनाराओ करी रह्या छे.

उपरोक्त रीतिए धर्मना रहस्यने समजावता संघमां सहचारी यात्रालुओनी धर्मभावनाने उत्तेजीत करता महाराजश्री ते संघनी साथे खतोली थइ हस्तिनापुर पधार्या. मार्गमां आवेला खतोलीमां दिगम्बरोनी साथे चर्चानो पण प्रसंग पडयो हतो. दिगम्बर समाजमां एवो घणी

मान्यताओ छे के जे विचारकोने हास्य उत्पन्न करावनारी छे. ते बधी मान्यताओमां आ पण एक मान्यतानो प्रवेश थयो छे के जे मान्यताने सांभळी तत्त्ववेत्ताओने अनेक प्रश्नो उपस्थित थायछे. ते प्रश्नोना निराकरणनी साथे ते मान्यता तद्दन निर्माल्य एटले के–प्रमाण शून्य–कपोलकल्पित जणाइ जाय छे. ते मान्यता ए छे के स्त्रीओ पोतानी ते अवस्थामां चाहे तेवी साधना करे तो पण मोक्षसुखने साधी शकेज नहि.

हवे आपणे विचारीए के–स्त्रीसमाजमां एवी कइ वस्तु छे के–जे तेनी इष्टसिद्धि न थवा दे शुं स्त्रीओमां आत्मा नथी ? आ प्रश्नना उत्तरमां ' ना ' कहेनार एक नास्तिकमतानुयायि सिवाय अन्य कोइ पण व्यक्ति आ सृष्टिमां हयाती भोगवती नथी, जो सर्व आस्तिकसमाज स्त्रीओमां आत्मानो स्वीकार करे छे तो पछी जे आत्मा छे ते शा माटे पोताना वास्तविक स्वरुपने प्रगट न करी शके ? कदाच ए आशंका थशे के–आत्माओना भव्य अने अभव्य एवा आ बे प्रकारो छे–भव्य ते कहेवाय छे के जे पोताना आत्मिकस्वरूपने प्रगट करी शके अने

जे ते स्वरुपने प्रगट न करी शके ते अभव्य कहेवाय छे. तो स्त्रीओमां रहेलो आत्मा कदाच अभव्य होय तो ? वात साची छे के–कोइ स्त्रीनो आत्मा कदाच अभव्य पण होय परंतु बधी स्त्रीओना आत्माओ कंइ अभव्य होइ शके नहि कारण के आत्माओ बे भागमां वहेंचायेला छे तेमां पण बीजा प्रकारना एटले जे अभव्य आत्माओ तेनी संख्या प्रथम प्रकारना एटले भव्यात्माओना करतां घणीज ओछी छे, तो दरेक स्त्रीओना आत्माओ अभव्योज होय एम कंइ बनी शके नहि. परन्तु जेम केटलाक पुरुषो पण अभव्यो होय छे तेम स्त्रीओ पण अभव्य होइ शके एटले भव्यपुरुषोनी माफक भव्यस्त्रीओ पण मोक्ष केम न साधी शके ? कारण के तेओ पण पुरुषोनी माफक संसारनी असारता तेनी भयंकरता विगेरे समजी तेना तरफ अरुचिवाळी होय छे एटलेके तेनो त्याग करवा माटे ते पण तेटलीज आतुर होय छे. तेओना अंतःकरणमां निर्वाण–मोक्ष दाता धर्मानुष्ठानो उपर अपूर्व प्रेम पण होय छे. गुर्वादिकनी शुश्रुषा करवानी भावना पण तेओमां होय छे. वात साची छे के केटलाक भव्य आ-

स्त्रीओ पण दुष्कर्मना उदये सम्यग्दर्शनना विरोधिओ होय छे अने तेथीज कोइ स्त्रीओ पण सन्मार्गनी शत्रुओ होय परन्तु तेवी स्त्रीओ मात्र कंइ सम्यग्दर्शननी शत्रुओ नथी होती के जेथी तेओ पोताना आत्माना वास्तविक स्वरुपने न साधी शके, कारण के तेमां सम्यग्दृष्टिनी ओळख करावनार आस्तिक्यादि सम्यक्त्वनां जे सुलक्षणो ते स्त्रीओमां पण स्पष्ट रीतिए दृष्टिगोचर थइ शके छे. भव्यात्माओ सम्यग्दर्शनना विरोधी न होय छतां पण जो तेओ मनुष्ययोनिमां उत्पन्न न थया होय तो पोताना स्वाभाविक स्वरुपने प्रगट नथी करी शकता. आ वात तो त्यारेज लागु पडे के–जो स्त्री मात्रने अमानुषी मानवामां आवे पण तेवी मान्यता काम आवे तेम नथी. कारण के मनुष्यजातिमां उत्पन्न थयेली तेमज विशिष्ट प्रकारना हस्तपादादि अवयवोवाळी संख्याबंध स्त्रीओ आपणा दृष्टिपथमां अहर्निश आवे छे. ए पण खरुंछे के मनुष्यजातिमां उत्पन्न थवा छतां पण अनार्यो आर्यत्वना असद्भावे आत्मकल्याण नथी करी शकता परन्तु कंइ एवुं नथी के बधीज आर्याओ अनार्य देश अनार्य जाति अने अनार्य

कुळमांज उत्पन्न थाय. अने आर्यदेश, आर्यजाति तेमज आर्यकुळ आर्याओथी वंचीतज रहे, कारण के आर्यदेश, आर्यजाति अने आर्यकुळमां उत्पन्न थयेली आर्याओने पण आपणे जोइ रह्या छीए. भव्य होय सम्यग्दर्शननी अविरोधीनी होय तेमज आर्यदेश, आर्यजाति अने आर्यकुळमां उत्पन्न थयेली होय छतां पण असंख्याता वर्षना आयुष्यवाळी होय तो इष्ट वस्तु नज साधी शके पण तेम छे क्यां के ते आपत्ति आवे? कारण के संख्याता वर्षना आयुष्यवाळी आर्याओने माटे आपणे तो कही रह्या छीए तो पछी ए आशंकाने अवकाशज क्यां छे? मानो के संख्याता वर्षना आयुष्यवाळी पण होय परन्तु जो अतिक्रुरमतिवाळी होय तो ते शी रीते समीहित साधी शके? आना उत्तरमां अमारे जणाववुं जोइए के स्त्रीओ पुरुषोना प्रमाणमां ओछी क्रुर होय छे. कारण के पुरुषो ज्यारे पोतानी क्रुरताने आधीन थइ सातमी नरकमां लइ जनार अति रौद्रपरिणामना पाशमां फसाय छे अने त्यां जाय छे. त्यारे स्त्रीओ गमे तेटली क्रुर बने परन्तु ते ते हदे नथी पहोंची शकती के जेना

प्रभावे अति रौद्र परिणामी बने अने सातमी नरके जइ शके. तेनामां अधिकमां अधिक जो रौद्रपरिणाम आवे तो छठ्ठी नरकमां जइ शके पण सातमीमां तो नज जइ शके एटले के सातमी नरकमां गमनयोग्य रौद्र परिणाम नज आवी शके. ठीक, ज्यारे तेओमां सातमी नरकने योग्य अति रौद्र परिणाम न आवे तो पछी मोक्षसाधक प्रकृष्ट शुभ ध्यान पण शी रीते आवी शके ? आ प्रश्नना उत्तरमां अमे एम कहीए छीए के अशुभ परिणामनी साथे कंइ शुभ परिणामनी व्याप्ति नथी एटले के—ज्यां अशुभ परिणाम होय त्यांज शुभ परिणाम होइ शके एम नथी अने जो एम मानवामां आवे तो जे वखते शुभ ध्यानना प्रभावे मोक्षनी प्राप्ति थाय तेनी साथेज सातमी नरकमां जवानो प्रसंग आवीने उपस्थित थाय. कारण के ज्यां मोक्ष साधक शुभ परिणामनी सत्ता त्यां सप्तम नरकसाधक रौद्र परिणामनी पण सत्ता तमे मानो छो एटले पछी परमपुरुषार्थरुप जे मोक्ष तेनो घात ते रुप अनिष्टनो पात थया सिवाय रहेवोज क्यां छे? परमपुरुषार्थना प्रलय जेवुं बीजुं अनिष्ट आ दुनियामां कयुं छे? अमे तो नथी मानता के तेना जेवुं

अनिष्ट आखी दुनियामां हयाति भोगवतुं होय.परमपुरुषार्थ एटले मोक्ष—एकांतिक अने आत्यंतिक सुखनुं स्थान ए दरेके दरेकने इष्ट छे केमके दुनिया आखी तेवा सुखनी अभिलाषी छे. अथवा एवो पण नियम नथी के जेनामां अशुभ परिणामोनी तिव्रता न होय तेनामां शुभ परिणामोनी पण तिव्रता न होय एटले के जे सातमी नरकमां जइ शके तेनामांज मोक्ष जवानो शक्ति होय कारण के भुजपरि सर्पो बीजी नरक सुधी, पक्षीओ त्रीजी नरक सुधी, चतुष्पदो चोथी अने उरपरिसर्पो पांचमी सुधी जइ शके छे. त्यारे उंचे सहस्रार नामा आठमा देवलोक सुधी सर्व जइ शके छे. तेमज मच्छो नीचे सातमी नरक सुधी जइ शके छे, पण उंचे आठमा देवलोकथी उपर जइ शकता नथी. आ उपरथी सिद्ध थाय छे के अधोगति विषयक स्त्री पुरुषोनी अंदर विषमता होवा छतां पण निर्वाण गमनने माटे समानताज छे. ठीक. मानो के स्त्रीओ अति क्रुर न होय परन्तु रतिलालसा—विषयोपभोगमां अत्यंत आसक्त तो होय छेज तोज्यां सुधी रतिलालसा छे एटले के—पौद्गलिक सुखनी अत्यंत अभिलाषा छे त्यां सुधी

शिवसुखनी संप्राप्ति क्यांथीज थइ शके? वात साची छे के ज्यां सुधी पौद्गलिक वासनानो नाश न थाय त्यां सुधी आत्मिक सुखनी साधना नज थइ शके एटले के-जो दरेक स्त्रीओ सदाने माटे विकारवती या तो मोहमुग्धज रहेती होय तो ते स्वसमीहित नज साधी शके परन्तु तेम नथी. बल्के तेनाथी विपरीत एटले महासती सीताजीनुं हरण करनार रावण जेवा केटलाक पुरुषो पण विषयोपभोगमां अत्यंत आसक्त होय छे अने घणी स्त्रीओ निर्विकार दशाने भोगवनारी तेमज विवेकवती सांभळवामां तेमज जोवामां आवे छे. ए उपरथी सिद्धज छे के बधी स्त्रीओ तेवी नथी होइ शकती के जेथी आपणे एम कही शकीए के स्त्रीओ तो आत्मिक सुखनी प्राप्ति नज करी शके कदाच कहेशो के-प्रायः स्त्रीओ अशुद्ध आचारवाळी होय छे. अमे पण ए वातने कबुल करीए छीए परन्तु दरेके दरेक स्त्रीओ अशुद्ध आचारवाळीज होय छे एम तो अमे नथीज मानी शकता कारण के घणी स्त्रीओ परोपकारादि शुभ व्यापारोमां तत्पर होय छे. घणीए उदार हृदया आर्याओ दुनिया उपर

उपकार करवामां पोतानी लक्ष्मीनो सदुपयोग करी गइ छे अने केटलीक करी रही छे. घणांए सदाचारी स्त्रीरत्नो पोताना सदाचारवडे दुनियाने सदाचारी बनाववा माटे प्रतिदिन प्रयत्नशाली होय छे. अरे! तेवी स्त्रीओए पोताना सदाचारनी रक्षा माटे पोताना प्राणोने पण जता कर्या छे तो पछी आपणे एम केम कही शकीए के-स्त्रीओ अशुद्ध आचारवाळीज होय छे? ए बधुंए खरुं. परन्तु सम्यक्त्वनी प्राप्तिमां असाधारण कारणभूत एवा अपूर्व करणनोज ज्यां अभाव छे त्यां वळी क्यां आत्मस्वरुपनी वार्ता? आना उत्तरमां अमारे कहेवुंज पडशेके—आवी आवी कपोलकल्पित कल्पनाओ करवी ए विचारको माटे योग्य नथी कारणके—शास्त्रमां स्पष्ट रीतिए स्त्रीओने अपूर्वकरणंनी प्राप्ति कही छे एटलुंज नहि परन्तु स्त्रीओ क्रमपूर्वक प्रथमथी आरम्भीने चौदमा गुणस्थानक सुधी पण पहोंची शके छे. तेओ पण पुरुषोनी माफक आमर्षौषध्यादि लब्धिओनी धारक पण होइ शके छे. तो पछी शा माटे ते आत्मिक लक्ष्मीनी भोक्ता न बनी शके? तमे कदी एम कहेवा साहस करशो के—स्त्रीओ तो अकल्याणनुंज

भाजन छे तेथी तेओनुं कल्याण थइ शकेज नहि. परन्तु तमारुं ते कथन घणुंज अघटित छे कारण के—आखी आत्म उपर अनुग्रह करनार चतुर्विध संघना संस्थापक अने अर्थरुपे सूत्रना प्रणेता तीर्थंकर देवने पण उत्पन्न करनारी तो स्त्रीजातिज छे. आवी आखी दुनिया उपर अलौकिक उपकार करनारी जाति अकल्याणनुं भाजन बनीज केवी रीते शके? अमे तो कहीशुं के एम कदापि नज बनी शके—एटले के—सम्यग्दर्शननुं आराधन करनारी, संसारथी विराग पामी आत्मिकस्वरुपनी प्राप्ति माटे उचित मार्गे गमन करनारी, क्षमा, मृदुता, सरळता, निर्ममता विगेरे अनेक सद्गुणोनुं सेवन करनारी अने निरन्तर आत्मस्वरुपमांज मग्न रहेनारी एवी स्त्रीओ पण तेज भवमां तेज जातिमां रहीने पण आत्महित साधी शके एटलेके तेज भवमां तेनी पण मुक्ति थइ शके एमां कोइपण जातनो संशय छेज नहि. जेवी रीते उपरनी मान्यता (एटले के—स्त्रीजाति तेनी ते जातिमां आत्मकल्याण नज साधी शके.) प्रमाण विनानी तेमज हास्यने उत्पन्न करावनारी छे तेवीज बीजी पण घणी मान्यताओ छे. जेवी

के स्त्री या पुरुषना अंग उपर एक सुतरनो तांतणो पण होय त्यां सुधी तेनामां साधुपणुं पण न आवी शके तो पछी अपूर्वगुणोत्पादक संयम अने तेना प्रभावे केवळज्ञान अने शाश्वता सुखनी प्राप्ति तो थायज शेनी? विचार करवा जेवी हकिकत छे के आहार विगेरे करे अने आखा शरीरने साथे राखे छतां पण मुक्ति थाय. मात्र तेनी साथे सूतरनो एक तंतु पण जोडाय एटले खलास बधुंए बंध आवी आवी तद्दन अनुचित्त केटलीएक कल्पनाओ उपर दिगम्बरमतानुयायिओनी साथे चर्चा थइ. योग्य रीतिये प्रमाणोनी साथे समाधान करवामां आव्युं.

हस्तिनापुर तीर्थनी यात्रा करी तीर्थभूमिना महिमानो अनुभव कर्यो अने सहचारीओने कराव्यो. यात्राळुओना हृदयमां पण तीर्थस्थाननी महत्ता सचोट रीतिए ठसी महाराजश्रीए वर्णवेली तीर्थनी अद्‌भुत घटनाओनो पण अनुभव थयो. तीर्थयात्रानो अपूर्व लाभ लइ महाराजश्री पण ते संघनी साथेज पुनः अंबाला शहेरमां पधार्या. महाराजश्रीना अपूर्व संयमथी, वैराग्य जनक व्याख्यान शक्तिथी तेमज सभरसोत्पादक संगी-

तना ध्वनिथी आकर्षित थयेला त्यांना श्रीसंघे महाराजश्रीने चातुर्मास माटे अति आग्रह कर्यो महाराजश्रीए पण श्रीसंघना अत्याग्रहथी १९६५नुं चातुर्मास त्यांज कर्युं.

चातुर्मास बाद महाराजश्रीए त्यांथी विहार कर्यो अने समाना, सुनाम आदि गामोनी स्पर्शना करता हनुमागढ थइ विकानेरमां पधार्या, आ समये प्रौढप्रभावसंपन्न पूज्यपाद परमगुरु श्रीमद्‌विजयकमलसूरीश्वरजी महाराज साहेब त्यां विराजमान हता, तेथी तेओश्रीना पवित्र दर्शननो अपूर्व लाभ मल्यो. शेठजी सुमेरमलजी सुराणा आदि सकल संघनी घणीज विनंती थवाथी सूरीश्वरजी महाराज साहेब अने तेओश्रीनी साथे पूज्यपाद महाराजश्रीए पण संवत १९६६ नी सालनुं चातुर्मास विकानेरमांज कर्युं.

आ चातुर्मासमां विकानेरना श्रीसंघने परमात्मानुं वास्तविक स्वरुप परमात्मानी भक्तिनुं स्वरुप अने परमात्मानी भक्तिथी थता लाभोने समजाववा माटे परमात्मा एटले शुं ? परमात्मा कोण थइ शके ? परमात्मानी भक्ति केवी रीतिए थइ शके ? अने ते पद्धती

प्राप्ति माटे शुं शुं करवुं जोइए. इत्यादि बाबतोनुं स्पष्टी-
करण करतां जणावता हता के—

परमात्मा एटले उत्कृष्ट स्वरूपने प्राप्त थयेलो आ-
त्मा. जे आत्मानुं स्वरुप संसारवर्ती दरेक आत्माओना
करतां श्रेष्ठतम होय छे, जेओनुं स्थान पंचपरमेष्ठिमां प्र-
थम छे, तेमज जे आत्मा केवळज्ञाने करीने सूर्यनी मा-
फक अज्ञानरुपी अंधकारनो नाशक होवाथी तत्त्ववेत्ताओ-
प्रकाशमय माने छे, जे आत्माओए कष्टकारी क्ले-
शपादपोने मूळथी उखेडी नाख्यां छे, जे आत्माने
असुरेन्द्रो सुरेन्द्रो अने मनुजेन्द्रो (चक्रवर्तिओ)
पोताना उत्तमांग (मस्तक)वडे नमस्कार करे छे, जे म-
हात्मानुं स्वरुप वचनातीत कहेवाय छे, तेवो जे आत्मा
तेनुं नाम परमात्मा. आवा रागद्वेषादि आंतर शत्रुओथी
रहित अने तेथीज संपूर्ण ज्ञानमय जे परमात्मा तेनी
अंदर तद्दन असंभवित एवा जगत्कर्तृत्व धर्मनो निवेश
करनारा पोतानी अज्ञानताने जाहेर करवानी साथे नि-
रागी परमकृपालु अने स्वतंत्र एवा परमात्माने रागी,
अकृपाळु अने परतंत्र बनाववानोज प्रयत्न करे छे. जो

के तेओना तेवा मंतव्यथी परमात्मामां कांइ तेवा प्रकारना दोषो आवी शकताज नथी परन्तु तेम करवाथी तेओ तो परमात्मामां असद्भूत दोषोनो अज्ञातपणे आरोप करनार बने छे अने तेथी परमात्मानी भक्ति नहि परन्तु भक्तिना बदले आशातना तेओनी खरेखरी विराधना करनार थइ परमात्मानी विडंबना करवाथी थता पापना भागीदार बनी संसारमां तेमां पण अशुभ योनिओमां उत्पन्न थइ पोताना आत्मानो पुरेपुरो अधःपात करनारा थाय छे. माटेज शास्त्रकारो कहे छे के—धर्म करतां ए घणुंज साचववानुं छे के—धर्म करतां पण धर्म मानीने एटले के अधर्मने धर्मरुप समजीने धर्मना नामे अधर्मनुं सेवन न थइ जाय खरेखर आ बाबत तरफ लक्ष्य नहि देनारा घणी वखते धर्मनी इच्छाए अधर्म, हितनी भावनाए अहित अने उपकारनी बुद्धिए अपकार करी बेसे छे. माटे धर्मिओनी हितेच्छुओनी अने उपकार करवानी भावनावाळाओनी फरज छे के ते करवा तैयार थवा पूर्वे तेना साधनोनी सूक्ष्मेक्षिकापूर्वक समालोचना करवी तेम कर्या पछीज तेनो उपयोग करवो

अन्यथा परिणाम ए आवशे के स्व अने परने उन्नतिना मार्गे लइ जवानी भावना तो पडी रहेशे पण उल्टा अवनतिना मार्गे प्रयाण थइ जशे. तेम थवा छतां पण अवनतिनो मार्ग उन्नतिना मार्ग तरीके देखाशे अने तेथी दिवसे दिवसे सद्गुरुओ प्रत्ये तेमनी आज्ञाओ प्रत्ये धर्मग्रन्थो प्रत्ये तेना प्रणेताओ प्रत्ये अने पश्चात् खुद परमात्मा प्रत्ये पण अरुचि अरुचिज नहि परन्तु तिरस्कार जागशे अने तेथी अवनति थशे तो पण उन्नतिज देखाशे अने तेथी करीने सन्मार्गनी प्राप्ति पण दुर्लभ थइ पडशे. माटे धर्मिओए हितचिंतकोए अने उपकारना रसिकोए आंखो मींचीने झंपापात न करतां पुख्त विचार पूर्वक प्रवृत्ति करवी. नहितो धारेली धारणाओ अने मनोरथनी माळाओ परिपूर्ण तो नहिज थाय परन्तु दुःखी थवुं पडशे अने मनमां मुझावुं पडशे.

आटलुं प्रसंगोपात निरुपण करी आपणे आपणा मूळ विषय उपर आवीए के परमात्माने जगत्कर्ता मानवामां परमात्मा रागी, दयारहित अने परतंत्र शा माटे बनी जाय?

सकळ सद्गुणसंपन्न परमात्माने आधि, व्याधि अने उपाधिथी भरपुर एवा आ जगत्ने रचवानी कोइ पण जरुर नथी कारण के जगत् रचना करीने तेमने कंइ नवीन प्राप्त करवानुं रह्युं नथी केमके परमात्मा स्वयं कृतकृत्य छे तेमज तेमनी उपर कोइनी आज्ञा पण नथी के जेथी तेओने जगत्नी रचना करवी पडे.

तत्त्वज्ञानना अभावे बाळभावनो अनुभव करनाराओ केटलाक कहेछेके परमात्मा मात्र क्रिडा करवानी खातर पण जगत्नी रचना करवानी प्रवृत्ति करे. हवे ते बाळभावमां मग्न थयेलाओनुं ते कथन आपणे कइ रीतिए मानी शकीए? सकल सद्गुणसंपन्न अखिल विश्वने करामलकवत् प्रतिक्षण निहाळनारा परमात्मा क्यां अने बाळभावने उचित क्रिडा क्यां? आ उभयनो समागम थवो ए शुं संभाव्य छे? भले जो तेम मानवामां आपत्ति न आवती होय तो आपणे ते असंभाव्य घटनाने पण मानी लइए. परन्तु मोटामां मोटी आपत्ति आवीने उपस्थित थाय छे. ते आपत्ति ए छे के-निरागी एवा परमात्मा बाळकनी माफक क्रिडा करतां पोते रागी

बनी जाय छे कारण के क्रीडा रागविना थइ शकतीज नथी ए वात तो आखी आलमने अनुभवसिद्ध छे अने जो तेम थाय तो आ महा दुःखदायक रागदशाथी उद्विग्न बनेलाओए कोना शरणे जवुं ? कोनी उपासना करवी ? के जेथी रागरहित बनी शकाय ? आ प्रश्नो कंइ ओछा विचारवा जेवा नथी.

कृपाना वास्तविक स्वरुपने नहि समजनारा कृपाना नामे अकृपानी स्तुति करनारा अने तेथीज सारासारने नहि समजी शकनारा एवा वळी कहे छे के परमात्मा कृपानी खातर पण सृष्टिनी रचना करे. खरेखर आ तेमनी अविचारी कल्पना परम कृपालु परमात्माने अकृपालु–कृपाहीन तरीके प्रसिद्ध करवानो कोशीश करे छे. कारण के जो कृपालु परमात्मा जगत्‌नी रचना करे तो अखिल विश्वमां एक पण प्राणी दुखी तरीके आपणी दृष्टिपथमां नज आवी शके. कारणके करुणाना समुद्र परमात्मा कोइ पण प्राणीने दुखी करवामां कोइपण काळे राजी होय ? कोइ पण प्राणीने दुःख देनारने आपणे दयालु–कृपालु–करुणासमुद्र एवां एवां विशे-

वणो शी रीते आपी शकीए ? जो दुःखी करनारनेज दयाळु-कृपाळु वगेरे वगेरे विशेषणो अपातां होय तो पछी निर्दय अने क्रुर वगेरे वगेरे विशेषणो कोने माटे हयाति भोगवे छे ? आ प्रश्नो एटलाज माटे उपस्थित थाय छे के आ दुनियामां एक नहि पण अनेक जन्तुओ-ने आपणे अनेक प्रकारनी यातनाओथी पीडित जोइए-छीए. कोइने लक्ष्मीनुं दुःख तो कोइने स्त्रीपुत्रादि तरफनुं एवी रीतनां अनेक दुःखो तेमज दुर्गतिनां दुर्योनिनां अने ज्यां सुधी संसारमां स्थिति त्यां सुधी जन्म अने मरणना क्लेशो तो दरेके दरेकने माथे बेठाज छे. तो आवी रीते संसारनी रचना करी निरपराधी जीवोने रीबाववा ए शुं परमकृपाळु परमात्मानुं कर्त्तव्य छे ? शुं तेवा प्रकारना परमात्माने आपणे परमकृपाळु तरीके मानी पण शकीए के ?

' परमात्मा जगत्‌ना कर्त्ता होवाज जोइए ते विना जगत् बनी शकेज नहि ' आवी असत्य मान्यताना बळे उपरोक्त आपत्तिगर्भित प्रश्नो सांभळतानी साथेज तेओ गभराइ जाय छे अने तेथीज पूर्वापरनो विचार कर्या

विनाश करी नाखे छे के–संसारवर्ती प्राणिओने परमात्मा पोते पोतानी इच्छाने अनुसारेज कंइ सुख या दुःख आपता नथी परन्तु प्राणीओ जेवां जेवां प्रकारनां शुभ या अशुभ कर्मो करे छे तेवां तेवां प्रकारनां सुख या दुःख ते कर्मोने अनुलक्षीनेज आपे छे. तो पछी पापकर्म करवामां रत बनेला पापी आत्माओने परमात्मा उपरोक्त दुःखो आपे तेमां परमात्माने शु? तेथी परमात्मा अकृपालु शी रीतिए बनी शके? आ प्रश्नोना उत्तरमां प्रथमतो अमे एमज कहीशुं के परमात्मा पोते स्वतंत्र नथी परन्तु प्राणीओए करेला कर्मने आधीन परतंत्र छे कारण के ज्यारे तमारी मान्यता प्रमाणे परमात्मा कोइ पण प्राणीने सुख या दुःख पोतानी मरजी प्रमांणे नथीज आपी शकता किन्तु प्राणीओए करेला शुभ या अशुभ कर्मने अनुलक्षीनेज आपी शके छे. तो पछी तेमां परमात्मानी सत्ता शी? परमात्माने जगत्कर्ता मानो या न मानो तो पण शुं? कारण के सुख या दुःखतो प्राणीओ पोताना शुभ या अशुभ कर्मना योगेज प्राप्त करी शके छे. एटले के विश्ववर्ती

प्राणीओ सारी या नरसी प्रवृत्ति पोताना कर्मने लइनेज करे छ. तेमां इश्वरनी साथे कोइ पण जातनो सम्बन्धज नथी खेर आटलुं छतां पण परमात्माने तमारे जगत्ना कर्ता बनाववाज होय तो आ समाधानतो तमारे जरुर करवुंज पडशे. ते समाधान ए छे के परमात्मा शा माटे पोतानी सत्ता छतां पण प्राणीओने पाप कर्म करवा दे ? शु परमात्मामां ते शक्ति नथी के तेओने पापकर्म करता अटकावी शके ? जो ते शक्ति न होय तो तेवा परमात्माने आपणे सर्व शक्तिमान शी रीते मानी शकीए ?

निष्कलंक परमात्माने कलंकित बनावनार कर्तृत्व धर्मने परमात्मामां स्थापन करनाराओने अमे ए पण पूछीए छीए के—तमारा मानेला परमात्माए शा माटे अमारा जेवाओने एटले के तेमनामां रहेला कर्तृत्व धर्मनो विनाश करनाराओने आ दुनियामां जन्म आप्यो? शुं तमारा परमात्माने एवी खबर न हती के आ लोको मारामां रहेला अपूर्व धर्मनो पण नाश करनारा नीवडशे ? आ प्रश्नना उत्तरमां तमे ‘हा’ तो त्यारेज कही

शको के ज्यारे तमे तमारा परमात्माने असर्वज्ञ मानो अने जो असर्वज्ञ मानो. तो पतीज गयुं कारण के तेवा जगत्ना कर्ता तो बनीज न शके ए वातने तो तमे पण कबुल करो छो कोइ पण एक सामान्य कार्यने करनारो पण ते कार्यनां कारणो तेनां गुण दोषो जाणे तोज ते एक सामान्य कार्यनी पण रचना करी शके ते शिवाय कोइ पण कार्यनी रचना थइज शी रीते शके ? तो पछी जगत्ना कर्ताने संपूर्ण जगत्नुं ज्ञान होवुंज जोइए अने ते ज्ञान तेनेज थाय के जे सर्वज्ञ होय सर्वज्ञ सिवाय अन्य कोइने पण निखिल जगत्नुं ज्ञान होइज न शके अने तेथीज ज्यारे सर्वज्ञ मान्या एटले पाछो तेनो तेज दोष कायमनो कायमज छे. तो पछी शा माटे एवी खेंच पकड करी पोतेज मानेला परमात्माने एक बाळकना जेवी बाळचेष्टा करनार एटले के रागी, कृपारहित, परतंत्र, शक्तिहीन अने असर्वज्ञ बनाववानो प्रयत्न करवो पडे छे. जो युक्तियुक्त वातने मानवाथी निर्वाह थतो होय तो पछी शा माटे पोताना पूज्य परमात्माने अपूज्य बनाववा जेवुं साहस खेडवुं जोइए.

आ उपरथी आपणे जोइ शक्या के-परमात्मामां जगत् कर्तृत्व धर्म कोइ पण रीतिए घटी शकतो नथी. परमात्मा पौद्गलिक घटनाओमां पडेज नहि. परमात्मा तेज कहेवाय छे के जे आत्माए पौद्गलिक स्वरुप छोडी पोताना वास्तविक स्वरुपने प्रगट कर्युं छे. जे आत्मा पोताना वास्तविक स्वरुपने प्रगट करे तेज आत्मा परमात्मा कहेवाय. माटे परमात्मा थवानी इच्छावाळाओनी फरज छे के पोतामां परमात्मा थवा जेटली योग्यता मेळववी जोइए. परमात्मानी भक्ति परमात्मपदनी प्राप्ति माटे योग्यता बनावनारी छे. परमात्मानी भक्ति अनेक प्रकारे थइ शके छे. छतां पण ते भक्तिना मुख्य रीतिए बे विभाग पडी शके छे. एक द्रव्य अने बीजो भाव. जे जे अनुष्ठानोमां द्रव्य अने भावने भिन्न पाडवामां आवे छे त्यां द्रव्य भेदमां सर्वथा भावनी शून्यता मानवामां नथीज आवती कारण के-तद्दन भाव विनानुं अनुष्ठान अकिंचित्कर जेवुं छे. मात्र द्रव्यभेदमां द्रव्यनी मुख्यता अने भावभेदमां भावनी मुख्यता मानवामां आवे छे तो भावपूर्वक द्रव्यभक्ति करनारो अनेक प्रकारना लाभो

संपादन करी शके छे. द्रव्यथी पण परमात्मानी निराशंसभावे भक्ति तेज करी शके छे के जेनामां उदारता पौद्गलिक भावोमां अनासक्ति अने आत्मिकगुणो तरफ अभिरुचि उत्पन्न थइ होय. ते सिवाय परमात्मानी तेवी भक्ति पण नथी थइ शकती तो पछी भावनी वात तो क्यां रही. परमात्मानी भाव पूजा-भक्तिमां द्रव्य भक्तिने परमर्षिओ निमित्तरुपे गणे छे. जेम जेम द्रव्यनी विशुद्धि तेम तेम भावनी विशुद्धि माटे द्रव्यपूजा तरफ अरुचि बतावनारा खरेखर भावपूजा तरफ पण पोतानी अरुचिज व्यक्त करे छे. कदाच आ हकीकत केटलाकना मानवामां नहि आवे कारण के द्रव्यपूजा तरफ अरुचि बतावनाराओ एटले के द्रव्यपूजाने अकिंचित्कर तरीके दर्शावनाराओ एवां विषमिश्रित वाक्योनो प्रयोग करे छे के-जेथी भद्रिक जनो तेमां मधुरताज देखे छे. तेमने ते कटुतानो अनुभव नथी थतो तेओने अमारे जणाववुं जोइए के-महाराजा कुमारपाल प्रतिबोधक कलिकाल सर्वज्ञ भगवान श्रीमद् हेमचंद्र सूरीश्वरजी महाराज वीतरागस्तोत्रमां वीतरागदेवनी स्तुति करतां कहे छे के-'

वीतराग सपर्यायास्तवाज्ञापालनं परं ।
आज्ञाराद्धा विराद्धा च शिवाय च भवाय च ॥

सारांश—हे वीतराग ! आपनी पूजा करतां पण आपनी आज्ञानुं पालन करवुं ए अधिक फलप्रद छे. (कारण के आपश्रीनी जल, चंदन अने पुष्प विगेरे अनेक प्रकारथी करातो पूजा द्रव्यस्तव रुप छे त्यारे आज्ञानुं पालन भावस्तव रुप छे. द्रव्यस्तव अने भावस्तवनी वच्चे सर्षव अने सुमेरुना जेटलुं अंतर छे) कारण के— आराधेली आपनी आज्ञा ज्यारे मोक्षने माटे थाय छे त्यारे विराधेली आज्ञा संसारने वधारनारी थाय छे.

आ उपरथी आपणे समजी शकीए तेम छीए के— परमात्मानी आज्ञानुं पालन एज खरेखरी भावपूजा छे. हवे महर्षिओ कहे छे के—

" सपर्यापि तदधिकारिणामाज्ञापालनरूपत्वेन परम्परया मुक्तिफलकत्वेन वरैव " अर्थात् जल चंदनादिथी करातो एवी द्रव्यपूजा पण तेना अधिकारीओने परमात्मानी आज्ञाना पालनरुप होवाथी परम्पराए मुक्तिसाधक होवाथी ते पण श्रेष्ठज छे.

आ उपरथी समजनाराओ समजी शकशे के द्रव्य पूजा तरफ अरुचि बतावनाराओ पण परमात्मानी आज्ञाना आराधक नहि परन्तु विराधकज छे. आज्ञानी विराधना करनार भावपूजा करवाने योग्य शी-रीतिए बनी शके ? द्रव्यपूजा करनार पण जो भावपूजा तरफ प्रेम न राखे तो ते इष्ट वस्तुने साधी शकतोज नथी. परमात्मपदनी प्राप्ति माटे परमात्मानी आज्ञानुं पालन करवुं ए खास जरुरनुं छे परमात्मानी आज्ञा अमूल्य छे. तेनुं पालन त्यारेज थाय के ज्यारे परमात्मा प्रत्ये साचो प्रेमभाव जागे ते प्रेमभाव पण प्रायः त्यारेज जागे के ज्यारे परमात्मानो शुद्धभावे सेवा करवामां आवे. परमात्मपदनी प्राप्ति माटे आज्ञापालननी आवश्यकता छे तो परमात्मानी आज्ञा शुं छे ते समजवा माटे श्रीमान् हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराजाए बनावेल वीतरागस्तोत्रनो नीचेमूकेलो श्लोकज बस छे—

आकालमियमाज्ञा ते, हेयोपादेयगोचरा ।
आश्रवः सर्वथा हेय, उपादेयश्च संवरः ॥१॥

आश्रवो भवहेतुः स्यात् संवरो मोक्षकारणं ।
इतीयमार्हती मुष्टिरन्यदस्याः प्रपञ्चनम् ॥२॥

सारांश–भगवन् ! हेय उपादेय विषयक आपनी आज्ञा सर्वकाळने विषे एवी छे के–मिथ्यात्व, अविरती, कषाय, योग अने प्रमादरुप जे आश्रव ते सर्वथा त्याग करवा योग्य छे अने पांचसमिति, त्रणगुप्ति, बावीस परिसह, क्षमादि दश प्रकारनो साधुधर्म, अनित्यादि बार भावना अने सामायिक आदि पांच चारित्ररुप सत्तावन प्रकारनो संवर सेवन करवा योग्य छे. कारणके आश्रवनी उपासना ज्यारे संसारने वधारनारी छे त्यारे संवरनी सेवा शिवसुखने देनारी छे एज अरिहंत–वीतराग देवनी आज्ञा छे बीजो बधोए विस्तार तेनोज छे–तेने माटेज छे.

आ उपरथी निश्चित छे के–परमात्मपदना अभिलाषुके–आश्रवना परिहार अने संवरना स्वीकार माटे कटीबद्ध थवुंज जोइए ते सिवाय ते पदनी प्राप्ति थवी अशक्यज छे ए वात निर्विवाद छे. पांच आश्रव पैकी प्रथमनो मिथ्यात्वरुप आश्रव परमशत्रु छे. संसारनी स्थिति जो होय तो तेनाज प्रभावे छे, सत्यासत्यनी स-

मीक्षा करवामां जो कोइ प्रतिबन्धक होय तो तेज छे. तेनुं स्वरुपज ए छे के—सत्य ने असत्य रुपे अने असत्यने सत्यरुपे समजाववुं. ज्यां सुधी आ शत्रुने पहोंची वळवानी ताकात नथी आवी त्यां सुधी सघळुं व्यर्थ छे. जो आ शत्रुनो प्रतिपक्षी एटले के तेने पहोंची वळवानी अगाध सत्ता धरावनार कोइ होय तो ते सम्यक्त्व छे. तेनुं स्वरुप तेनाथी तद्दन विपरीत छे. तेना सहवासनी साथेज पहेलाने भागवुं पडे छे. परन्तु तेनो सहवास थवो एज दुष्कर छे. तेना सहवास माटे एटले के तेनी प्राप्ति माटे अथवा तो तेनी रक्षा माटे अने तेनी निर्मळता माटे परमात्मानी भक्ति करवी जोइए ते भक्तिना परोपकारी परमर्षिओ नीचे बतावेला पांच प्रकारो दर्शावे छे.

" पुष्पाद्यार्चा तदाज्ञा च, तद्द्रव्यपरिरक्षणम् ।
तीर्थयात्राऽभिषेकाश्च, भक्ति पंचविधा जिने ॥१॥

अर्थात्—जे परमात्मानी भक्ति पुष्पादिथी अर्चा—पूजा, तेमनी आज्ञानुं पालन, परमात्मानी भक्ति निमित्ते एकत्रित थयेला द्रव्यनी रक्षा, तीर्थयात्रा अने अभिषेको स्नात्रमहोत्स्व आ पांच प्रकारे थइ शके छे.

आ पांचे प्रकारनी परमात्मानी भक्ति मिथ्यात्वनो नाश करनारी अने सम्यक्त्वने उत्पन्न तेमज विशुद्ध बनावनारी छे. तो परमात्मपदनी आकांक्षा वाळाओनी फरज छे के—आ पांचे प्रकारनी भक्ति करवा प्रयत्नशील थवुं.

विकानेरना चतुर्मासमां आवी रीतना अनेकविध आत्मोन्नतिकारक अनुपम उपदेशो आपी त्यांना श्राद्ध वर्गने धर्मरसिक बनाव्यो. चातुर्मास पूर्ण थये त्यांना श्रद्धाळु श्रावक शेठजी शिवचंदजी सुराणाए सूरीश्वरजी महाराज तेमज महाराजश्रीने पोताना जेसलमेरना संघमां पधारवा विनंति करी सूरीश्वरजी महाराजश्रीए ते विनंतिनो स्वीकार कर्यो अने महाराजश्रीने साथे लइ शेठजी शिवचंदजी सुराणाना संघनी साथे फलोधी थइ जेसलमेर जेवा अपूर्व तीर्थनी यात्रा करी त्यांथी सूरीश्वरजी महाराजश्रीनो आज्ञा लइ पोकरणफलोधी अने मेडता थइ फलोधी पार्श्वनाथस्वामीना दर्शननो लाभ लइ भीलोडा थइ चीतोडगढनी यात्रा तेमज महर्षि सुकोशलना पादस्पर्शथी परम पवित्र बनेली गुहा आदि पवित्र

स्थळोनी स्पर्शना करता ते स्थानने पवित्र बनावनार महात्माओनी वीरता अने धीरतानुं ध्यान करता मंदसोर पधार्या, त्यांथी शेठजी लक्ष्मीचंदजी घीआनी विज्ञप्तिथी प्रतापगढ पधार्या, थोडो समय त्यां स्थिरता करी रतलाम पधार्या अने संवत् १९६७ नुं चातुर्मास पण त्यांज कर्युं.

रतलामना चातुर्मासमां महाराजश्री व्याख्यानमां नंदीसूत्र वांचता हता. महाराजश्री ते सूत्रनी व्याख्या एवी रसीक करता हता के जेथी त्यांना श्रोताओ दरेक क्षणे तेमना श्रवणने माटे उत्सुक रहेता हता. ढुंढक मतना अनुयायिओए पण महाराजश्रीना व्याख्याननो लाभ लेवा मांडयो. महाराजश्रीए पण जीवनी सिद्धि जगत्कर्तानो अभाव अने प्रसंगोपात परमात्मानो मूर्तिनी सिद्धि तेमज परमात्मानी भक्तिनुं स्वरुप एवी रसबोधक शैलीथी वर्णव्युं के जेना प्रभावे ओंकारजी आदि ढुंढक मतानुयायिओ ढुंढक मतनो त्याग करी मूर्तिपूजक बन्या.

चातुर्मास पछी लुणीया डुंगरसी केसरीमलना संघमां मउ, खंडवा, बुरानपुर, बालापुर, खानगाम अने आकोला.

आदि स्थळोनी स्पर्शना करता श्रीपुरमां पधार्यो त्यां अंतरीक्ष पार्श्वनाथ स्वामीनी अद्भुत चमत्कारी मूर्तिनां दर्शन करी आत्माने पवित्र बनाव्यो. त्यांथी पाछा फरी आकोला अने बालापुर थइ येवला पधार्या.

आ दक्षिणदेशमां महाराजश्रीनुं प्रथमज गमन हतुं. ते देशमां साधुओनुं गमन प्रायः नहि जेवुंज होवाथी उपकार सारो थवानी संभावनाने लइने महाराजश्रीने ते देशमां रहेवानी उत्कंठा पण तीव्र हती. त्यांना श्रावको पण साधु दर्शनना घणाज अभिलाषी हता. तेथीज तेओने महाराजश्रीनो सहवास थवाथी तेओ पण आनंदित थया हता. तेओए ए पण निश्चय कर्यो हतो के हवे अमारा देशमां पण धर्मनो प्रभाव झळहळतो थशे अन्यथा आवा महात्मानो समागम अमारा भाग्यमां क्यांथी होइ शके? परंतु तेओनी ते धारणाओ सफळताने न पामी शकी कारण के-आज समये-कोइ खास कारणसर वडोदरा शहेरमां पूज्यपाद परमगुरु श्रीमद् विजयकमल सूरीश्वरजी महाराजश्रीना स्वामित्व नीचे साधुसंमेलन थवानुं निश्चित थवाथी वडोदरा निवासी गोकळदास वगेरेनी विनंति

थवाथी प्रखर ग्रीष्मऋतु छतां पण त्यांथी वडोदरा तरफ विहार कर्यो मार्गमां आवता झघडीयाजी तीर्थनी यात्रा करी मीयागाम पधार्या. त्यांना दरबारे पण महाराजश्रीना दर्शननो लाभ लीधो. महाराश्रीए पण समयोचित सदुपदेश दीधो. त्यांथी विहार करी संवत् १९६८ ना ज्येष्ठ सुदी पंचमीना दिवसे महोत्सवपूर्वक वडोदरामां पधार्या, संमेलननुं कार्य पूर्ण थया पछी दरापुराना श्रीसंघना अत्याग्रहथी दरापुरामां पधार्या अने संवत् १९६८ नुं चातुर्मास पण त्यांज कर्युं.

आ चातुर्मासमां त्यांना श्रीसंघे अट्ठाइ महोत्सव वगेरे अनेक धर्मोन्नतिनां कार्यो करी शासनोन्नति सारा प्रमाणमां करी महाराजश्रीए पण त्यां वसता एक भावसार कुटुम्बने धर्मनुं स्वरुप समजावी शुद्ध धर्मि बनाव्युं. त्यांथी घायजमां पधार्या, घायजमां श्रावकोनी वस्ती घणीज थोडी हती त्यां पटेलोनी घणी वस्ती हती ते गामना मुखी पटेल भवानभइ विगेरे पटेलो महाराजश्रीनी पासे घणी वखते आवता अने धर्मना स्वरुपने समजवा माटे अवार नवार प्रश्नो करता व्याख्याननो पण अह-

र्निश लाभ लेता तेओने महाराजश्रीए मिथ्यात्व अने सम्यक्त्वनुं स्वरुप घणीज सारी रीते समजाव्युं हतुं मिथ्यात्वनी अनिष्टतानो ख्याल घणी सारी रीतिए आप्यो हतो—सम्यक्त्व तेनुं नाम छे के शुद्ध देवने देव तरीके शुद्ध गुरुने गुरु तरीके अने शुद्ध धर्मनेज धर्म तरीके माने अन्यथा नहि तेना स्वरुपने समजावतां कहेता के—जे अज्ञान, क्रोध, मद, मान, लोभ, माया, रति, अरति, निद्रा, शोक, अलीक वचन, चोरी, मत्सर, भय, प्राण वध, प्रेम, क्रीडा अने प्रसंगोपात हांसि रुप अढार दोषोथी रहित होय रागादिना जेता होय तेमज त्रण लोकना पूजित अने यथास्थित वस्तु स्वरुपने जाणनार तथा कहेनारा होय तेज देव कहेवाय.जेओ प्राणातिपात विरमण,मृषावाद विरमण, अदत्तादान विरमण, मैथुन विरमण अने अपरिग्रह रुप पंचमहाव्रतनो त्रिविधे त्रिविधे ग्रहण करनार तेना पालन माटे धीर अने समताभावमां लीन मात्र बेतालीस दोषोथी रहित शुद्धभिक्षाथीज पोतानी आजीविका चलावनार अने मात्र धर्मनोज उपदेश आपे तेओज शुद्ध गुरु कही शकाय. अहिंसा, संयम अने तपरुप धर्म एटले

के-जे धर्मानुष्ठान करवाथी इंद्रियोना विषमय विकारोथी विराग थाय कषायादि चतुष्कनो त्याग थाय अने गुणीजनो उपर अनुराग तेम शुभक्रियाओमां अप्रमाद थाय तेनुंज नाम शुद्ध धर्म कहेवाय बाकी तो नामनाज देव अने नामनाज गुरु तेमज नामनोज धर्म कहेवाय छे. आवी रीतना शुद्ध तत्त्वोना स्वीकारथीज कल्याण थइ शके छे ते सिवाय आत्मकल्याण थइ शकतुंज नथी.

आवी रीते धर्मना रहस्यने समजाववाथी मुखी विगेरे पटेलोने ते तत्त्वत्रयनी उपर शुद्ध श्रद्धा थइ अने तेओए श्रावक धर्मनो स्वीकार कर्यो. तेओने त्यारपछी पण अनेकविध सदुपदेश आपी शुद्ध धर्ममार्गमां स्थिर करी साधी, मानपर आदि स्थळोए विचरी पादरामां पधार्या.

आ अवसरे महाराजश्रीना सुप्रसिद्ध शिष्यरत्न पंन्यासजी महाराज श्रीमद् दानविजयजी गणी के जेओ एक प्रौढवयना अने समर्थ शास्त्रवेत्ता छे तेओ वडोदरामां विराजता हता त्यां ताम्रपर्णी निवासी शास्त्री अनंतकृष्णजी द्वारा श्रीमान् गायकवाड सरकार महाराजा

सयाजीरावनो मेळाप थयो तेज वखते तेओश्री पासे श्रीमान् सयाजीरावे धर्मोपदेशनी याचना करी परोपकार रसिक महाराजश्रीए पण ते याचनानो स्वीकार कर्यो अने भिन्न भिन्न तात्त्विक विषयो उपर पुनः पुनः माग-णीथी दस व्याख्यानो आप्यां ते दश व्याख्यानो प्रथम भागमां तथा आठमा गुणथी पांत्रीस गुण सुधीनुं वर्णन बीजा भागमां आ प्रमाणे बे विभागोमां श्रीमान् महाराजा सयाजीराव तरफथी प्रसिद्ध पण थइ चूक्यां छे. आ वखते खुद महाराजश्रीने पण आमंत्रण माटे श्रीमान् सयाजीराव महाराजा तरफथी पादरे घोडेस्वार मोकल्यो हतो परन्तु शारीरिक स्थिति अस्वस्थ होवाने लइने तेमज पोताना सुशिक्षित शिष्यरत्ननी विद्वत्ता उपर प-रिपूर्ण विश्वास होवाथी पोते त्यां न पधार्या.

थोडोक समय पादरामां स्थिरता करी महाराजश्रीए त्यांथी विहार कर्यो जंबुसर आमोद आदि स्थळोनी स्पर्शना करता गंधार तीर्थमां पहोंच्या त्यां श्री पार्श्वनाथ स्वामीनी यात्रा करी पुनः जंबुसर पधार्या त्यांना देरा-सरनी प्रतिष्ठा करी वणछरा तीर्थनी यात्रानो लाभ लइ

मीयागाम थइ नर्मदा किनारे रहेला सीनोरमां पधार्या अने संवत् १९६९ नुं चातुर्मास पण त्यांज शांतिपूर्वक पसार कर्युं, त्यांना चातुर्मासमां त्यांना श्रावकोने सट्टा आदि कुव्यापारोनुं स्वरुप समजावी तेनो त्याग कराव्यो अने तीर्थयात्राना लाभो समजावी तीर्थयात्राना रसिक बनाव्या घणाए श्रावकोए दरवर्षे तीर्थयात्रा करवाना अभिग्रहो लीधा.

श्रावकोनी फरज छे के–नवकारमंत्र आदिनी शास्त्रोक्तविधिथी उपधाननी तपस्या करी आराधना करवी, त्यांना श्रावको पण महाराजश्रीना सदुपदेशथी पोतानी फरज समज्या अने उपधाननी क्रिया शुद्ध उत्साहपूर्वक करी शुद्ध श्रावकत्वनी प्राप्तिथी थयेलां हर्षने व्यक्त करनार महोत्सव विगेरे शासनने उन्नत बनावनार अने अधर्मिओना हृदयमां धर्मबीजनुं आरोपण करनार शुभ कार्यो कर्यां.

चातुर्मास बाद त्यांथी विहार करी दरापुरा पादरा आदि अनेक स्थळोनी स्पर्शना करता खंभात शहेरमां पधार्या त्यां ' निस्पृहाणां तृणं जगत् ' आ वा-

क्यनो साक्षात्कार करावनार प्रौढप्रभावसंपन्न पूज्यपाद परमगुरु श्रीमद्‌विजयकमलसूरीश्वरजी महाराजश्री विराजमान हता तेओश्रीना पवित्र दर्शननो लाभ मळ्यो. त्यांथी सूरीश्वरजी महाराजश्रीनी साथेज धोळेराबंदर, वळा आदि स्थळोमां सदुपदेशनी प्रासादी वेहेंचतां सीहोरमां पधार्या. चिरकाले आ बंने महात्माओनुं मुनिमंडळ साथे अहिं पधारवुं थवाथी भावनगर प्रमुख घणा क्षेत्रोना लोको तेओश्रीना दर्शनार्थे आवता हता. ए उभय महात्माओना आगमननो उद्योत दर्शावाने अने अपरिमित श्रेयःसंपादन करवाने सिंहस्थळना धर्मसिंहसंघे समवसरणनी रचनानो महान् उत्सव कर्यो अने चतुर्थव्रत वगेरे उच्चव्रतो ग्रहण कर्या. केटलोक समय त्यां उपदेशामृत वर्षावी पछी त्यांथी विहार करी वरतेज, वाळुकड, गोघा, कोळीयाक, त्रापज वगेरे स्थळोमां पूजा, प्रभावना अने साधर्मिवात्सल्य प्रमुख धर्मोन्नतिना कार्यो करावता तेओश्री तालध्वज (तळाजा) तीर्थमां पधार्या. आ समये राज्यना अधिकारीओ साथे ते शेहेरना संघे ते महात्माओने आनंदपूर्वक आवकार आप्यो अने प्रेमपूर्वक

प्रवेश कराव्यो हतो. त्यांथी विहार करी 'दाठा' थइ महुवाबंदरमां म्होटी धामधूम साथे प्रवेश कर्यो. आ शेहेरमां जीवतस्वामीना नामथी प्रसिद्ध एवी वर्त्तमान शासनपति श्रीमहावीरप्रभुनी प्रतिमानी यात्रा करी तेओश्री आनंदमग्न बनी गया हता. महुवा शेहेरना श्रद्धालु संघे आवा भारतविख्यात महात्माओना आगमननो लाभ लेवा त्यां समवसरणनी रचना करी के जे उत्सवमां हजारो मनुष्योनी मेदिनी मळी हती. आ शेहेरना संघमां साथे भोजन लेवानो म्होटो मतभेद केटलाक समय पूर्वे कोइ कारणसर उभो थयो हतो. ते आ महात्माओना उपदेशथी दूर थयो अने साधर्मिवात्सल्यना महाभोजनमां संघना बंने प्रवाहो एकठा थया हता. महुवा बंदरना समुद्रतीरे श्रीवीरशासननी जयघोषणा करावी ते त्रीश मुनिओनुं महामंडळ जेसर, देपला थइ श्रीसिद्धगिरिनी पवित्र छायामां आव्युं हतुं. आ समये भावनगरना संघना अग्रसरो अने सीहोरना संघना अग्रसरो अति आग्रहपूर्वक चोमासानी विज्ञप्ति करवाने आव्या हता. तेओना अतिआग्रहथी विनति स्वीकारी ते महात्माओ

मढडा थइ सीहोर पधार्या. त्यांथी सूरीश्वरजी महाराज-श्रीनी आज्ञा लइ श्री उपाध्यायजी महाराज वरतेज थइ भावनगरमां पधार्या. आ प्रसंगे राज्यनी रहीयासत साथे म्होटा आडंबरथी तेओश्रीनो नगर प्रवेशोत्सव करवामां आव्यो हतो. श्राविकाओ तरफथी गुंहलीओ वगेरे सारो ठाठ करवामां आव्यो हतो. संवत् १९७० नुं चातुर्मास पण पंन्यासजी श्रीदानविजयजी अने श्रीरंगविजयजी आदि १४ मुनिओ साथे भावनगरमांज कर्युं. आ महान् नगरमां ते महात्माना जन्मदेशने लइने लोकोए भारे आनंद प्रवर्त्ताव्यो हतो अने ते महात्माना उपदेशथी उपधान उत्सवो वगेरे धर्मोन्नतिनां घणां कार्यो थयां हतां. चातुर्मास वीत्या पछी कार्त्तिक मासनी कृष्ण षष्ठीने दिवसे त्यां श्रीनयविजयजी के जेओ महाराजश्रीना एक परम भक्त हता तेओश्रीनो स्वर्गवास थयो. ते पछी पोष मासनी शुक्ल पंचमीने दिवसे भावनगरना शाह फतेहचंद झवेरचंदे श्रीसिद्धगिरिनो संघ काढयो तेनी अंदर सामेल थइ पालीताणे पधार्या. त्यांथी आसपासना गामोमां विचरि अनेक धर्मोपकार करी संघना अति आग्रहथी

संवत् १९७१ नुं चातुर्मास श्रीसिद्धगिरिनी पवित्र छाया-मां कर्युं हतुं. त्यां तेओश्रीना उपदेशथी समवसरणनी रचना प्रमुख महान् उत्सवो थया हता.

चातुर्मासना प्रसंगमां ते स्थळनी हवा वगडवाथी श्रावकोना आग्रहथी तेओश्रीए बाकीनो समय सीहोरमां रही व्यतीत कर्यो हतो. आ समये श्रीमान् उपाध्यायजी महाराजश्रीनी इच्छा गुजरात तरफ विचरवानी हती परंतु पोताना गृहस्थावासना बाळमित्र 'शेठ हेमचंद तथा 'भावसार गांडालाळ मानचंद' वगेरे पूर्व प्रेमी अने गुणानुरागी गृहस्थोना आग्रहथी श्रीमान् अल्प समयने माटे 'वरतेज' पधार्या हता. त्यां भावसार गांडालाळ मानचंदे पोतानी गुरुभक्तिनुं गौरव बतावचा अने पोताना आत्माने परम कल्याणनो पात्र बनाववा ते स्थळे एक उत्सव कर्यो हतो. आ समये भावनगरनो भाविक संघ वंदना करवाने आव्यो अने तेओश्रीने पोताना शहे-रने पवित्र करवा विज्ञप्ति करी परंतु गुजरात तरफ जवा-नी क्षेत्र स्पर्शनाना योगथी तेओ विहार करी 'धोलेरा' पधार्या हता. आ स्थळे 'शेठ पोपटभाइ अमरचंद' आदि

खंभातना श्रीमंत श्रावको अने धंधुकाना श्रावको महाराजश्रीने विज्ञप्ति करवा आव्या अने अति आग्रह कर्यो ते उपरथी तेओश्री प्रथम 'धंधुका' पधार्या हता. धर्म निष्णात महाराजा कुमारपाळ प्रतिबोधक कलिकाळ सर्वज्ञ भगवान् श्री हेमचंद्र सूरिनी ते जन्मभूमिमां श्रीमान् उपाध्यायजीए उपदेश वाणीनी मधुर गर्जना करी श्रोताओना हृदय उपर सारी छाप पाडी तेथी त्यां केटला एक लोकोनी धर्मश्रद्धा सतेज थइ हती. त्यांथी विहार करी 'खंभात' पधार्या, त्यां तेओश्रीने श्रीमान् सूरिजीना दर्शननो महान लाभ मळी आव्यो. त्यां केटलोक समय रही तेओ उपकार बुद्धिथी 'वटादरा' नामना एक नाना गाममां पधार्या अने संवत् १९७२ ना वर्षनुं चातुर्मास त्यांज कर्युं. आ स्थळमां आवा महान् मुनिवरनुं आगमन आ पेहेलुं हतुं. तेथी तेनी अंदर धर्मनो विकाश थवा साथे धार्मिक उन्नतिनां कार्यो घणां सारा थयां हतां. त्यां कलकत्ताथी 'बाबुजी सुमेरमलजी' आदि पचवीश गृहस्थो महाराजश्रीने वंदना करवाने आव्या हता. त्यां धार्मिक उत्सवनो म्होटो वर-

घोडो चडयो हतो. जेमां खंभात शेहेरमांथी रुपाना रथ अने इंद्रध्वज वगेरे समृद्धिवाळी सामग्री लाववामां आवी हती. ते गाममां रहेनारा अन्यमति रजपूत लोको महाराजश्रीनी उपदेश वाणीथी दयाधर्मना धारक बनी गया हता. ज्यारे प्रभुनो वरघोडो चडयो त्यारे ते गामना मुखी श्री सामतमलजी प्रभुना रथना सारथि बन्या हता. त्यांथी सुश्रावक मणिलाले कावीनो संघ काढयो हतो, तेमां ते गुरुभक्त रजपूत लोको यात्रा करवा साथे गया हता. पछी कावीथी विहार करी श्रीमान् महाराजाश्री जंबूसर थइ मीयागाम पधार्या त्यां भावनगरना रहीश मावजीभाइने संवत् १९७३ ना माघ शुक्ल त्रयोदशीने दिवसे दीक्षा आपी हती अने तेमनुं ' मणिविजय ' नाम स्थापित कर्युं हतुं त्यांथी विहार करी तेओ भरुच पधार्या हता. आ स्थळे संवत् १९७३ ना वर्षना आषाढ शुक्ल षष्टीने दिवसे 'श्रीमूळचंदजी' (श्रीमुक्तिविजयजी) गणी महाराजना प्रशिष्य' श्रीमोतीविजयजी ' ने पंन्यास पदवीनुं प्रदान कर्युं तेज प्रसंगे भावनगरना प्रख्यात शेठ अमरचंद जशराजने तेमनी पत्नी सहित चतुर्थव्रतमुं

उच्चारण कराव्युं. अष्टान्हिका उत्सव प्रभावना वगेरे सत्कर्मोनी श्रेणी अने तेमां आवेला आसपासना लोकोनी भारे ठठने लइने चारे तरफथी धर्मोन्नतिनो ध्वनि श्रुतिगोचर थतो हतो. संवत् १९७३ ना वर्षनुं चातुर्मास शुभस्थळ ' भरुच ' मांज कर्युं.

आ चातुर्मासना कारतक मासमां वेदनीय कर्मना उदयने लइने तेओश्रीना शरीरने जीर्णज्वर लागु थयो. तथापि शारीरिक स्थितिने क्षण भंगुर समजनारा, अने शारीरिक साधनो वडे आत्म साधन करवा तत्पर रहेनारा ते महात्माए ते ज्वरनी उपेक्षा करी हती. तेओश्रीने शरीरनी स्थितिनी संभाळ माटे कहेवामां आवतुं त्यारे तेओ श्रीमान् नीचेना पद्यनो आशय दर्शावता हता..

ये लोकेशशिरोमणिद्युतिजलप्रक्षालितांघ्रिद्वया,
लोकालोकविलोकिकेवललसत्साम्राज्यलक्ष्मी-
धराः ।
प्रक्षिणायुषि यान्ति तीर्थपतयस्तेऽप्यस्तदेहास्पदं

तत्रान्यस्य कथं भवेद्भवभृतः क्षीणायुषो
जीवितम् ॥ १ ॥

"जेओना बंने चरणो लोकपतिओना मुकुटमणिओनी कांतिरुप जलथी धोवाय छे अने जेओ आ लोकालोकने अवलोकन करनारा केवलज्ञाननी विलास पामती साम्राज्यनी लक्ष्मीने धरनारा छे, तेवा भगवंत तीर्थंकरो पण आयुष्य क्षीण थतां शरीरथी मुक्त थाय छे, तो पछी बीजा संसारी जीवोनुं जीवित—आयुष्यनो क्षय थतां शी रीते रहे ? ॥ १ ॥"

आ महात्माना हृदयमां सदा अनित्यभावना आरुढ रहेती अने तेओश्रीनु मनोबळ सहनशक्तिने प्रकाशित करतुं हतुं. पछी तेओश्री भरुचथी जंबूसर थइ वटादरा पधार्या. त्यां तेओश्रीने श्रीमान् सूरीश्वरजीनां दर्शननो महान् लाभ प्राप्त थयो. ते स्थळना हवापाणी सारां होवाथी तेओश्री केटलोक समय त्यां रह्या हता. आ समये श्रीमान् हंसविजयजी महाराज श्रीसूरिजीमहाराज तथा श्रीउपाध्यायजीमहाराज आदिनां दर्शन करवाने पधार्या हता. तेओनी साथे महाराजश्रीना

शिष्य श्रीविनयविजयजी पण आवेला हता. श्रीविनय-
विजयजीए व्याख्यानसाहित्यसंग्रह नामनुं एक पुस्तक
प्रसिद्ध करेलुं, तेनी अंदर पर्युषण पर्व संबंधी लेखोनो
संग्रह करेलो हतो, के जे उत्सूत्ररुप होवाथी जनसमाज
उपर खराब असर थइ पडे तेम हतुं, तेथी सत्य अने
निष्पक्षपातना खरा हिमायती एवा ते महात्माए पोता-
ना शिष्यने साचा शब्दोथी उपालंभ आप्यो अने एवे
उन्मार्गे पुनः न चालवानी उच्च शिक्षा आपी हती. उ-
पाध्यायजीना आवा सत्य प्रवर्त्तनने प्रत्यक्ष जोइ श्रीमान्
हंसविजयजी चकित थइ गया अने तेओए तेओश्रीना
पवित्र नाममां रहेला वीर शब्दने सार्थक थयेलो मान्यो.
ते महात्मानो अद्वितीय शासनप्रेम अने खरी भवभीरुता
आ समये देखाइ आवी हती. तेओश्री केटलोक समय
ते स्थळे रह्या हता. अने शारीरिक पीडाने अवगणी
स्वधर्मना कर्त्तव्यने आचरता हता.

अवसान.

संवत् १९७४ ना वर्षनुं चातुर्मास संघना आग्रहथी 'खंभात' मां कर्युं आ चातुर्मासमां तेओश्रीना शरीरनी अस्वस्थता वधती गइ. अने तेमां वृद्धावस्थाने लइने ते विशेष उत्तेजित थइ, श्रीवीरशासनना प्रभावने वधारनारुं अने जैन समाजनी धार्मिक भावनाने पुष्ट करनारुं महान पर्युषण पर्व आव्युं. पोताना पूज्य वर्य गुरुश्रीनी शारीरिक अस्वस्थता सांभळी अने पर्युषण पर्वनो लाभ ते गुरुनी सांनिध्ये आराधवानी इच्छा राखी बाबू सुमेरमलजी खास 'खंभात' आव्या अने ते उदार गृहस्थे ते पर्वने अंगे त्यां सारो द्रव्य व्यय कर्यो हतो.

महात्मा उपाध्यायजी पर्युषण पर्वमां तद्दन शिथिल अवस्थामां आवी पडया हता. तोपण नीचेनी सद्भावनाओथी सुवासित होवाने लइने तेओश्री धर्मकर्ममां अशिथिल रह्या हता.

आ मानव शरीर उन्मादनी लीलाथी भरपूर छे;

छतां पण ते पाणीना परपोटा जेवुं नश्वर छे. यौवनवयना सौंदर्यथी सुशोभित बनेलुं, बाह्य अलंकारोना आडंबरे ओपायेलुं अने बळना मदथी मादेलुं पण ते शरीर सनत्कुमार चक्रवर्तीनी जेम अकस्मात् रोगनुं भोग थइ पडे छे अने पराधीन दशाना महादुःखमां आवी पडे छे. तेवा शरीरने माटे मोह धरवो अने यथेच्छ आहारविहार करवामांज तेनो उपयोग करवो, ए केवी मूर्खता कहेवाय ? आ संसार एक इंद्र धनुष्यना जेवो क्षणिक भभकावालो छे. तेनी प्रत्येक वस्तु परिणामी अने अस्थिर छे. पवनना प्रचंड वेगथी चंचळ थयेला तरंगना जेवुं आयुष्य क्षणभंगुर छे. काळरूपी मदमत्त मार्जार उंदरनी जेम प्राणीने पकडवाने माटे सदा तलपी रहेलो छे. संपत्ति अने वैभव विलासो उपर विपत्तिनुं वादळ खडुं थइने रहेलुं छे. संपत्तिनी सुंदर अने शीतळ छायानी साथे विपत्तिनी झेरी छाया मिश्र थईने रहेली छे. इंद्रियोना सर्व विषयो संध्याना रंगनी जेम क्षणस्थायी छे. तेनी अंदर स्वस्थता अने मंदता बंने सहवासिनी थइ रहेली छे.

प्रेमपात्र प्रिया, स्नेहसागर मित्रो अने सहृदय सु-
हृदोना समागमनुं सुख स्वप्न के इंद्रजाळना जेवुं छे.
आवा अस्थिर अनित्य अने दुःखरुप संसार तरफ कया
विद्वान् अने विवेकी पुरुषने भाव के हर्ष उत्पन्न थाय ?
हे आत्मन्! तुं आ शरीर अने संसारनी अनित्यता
तरफ लक्ष राखी तारा जीवननी सार्थकता करवाने सदा
सज्ज रहेजे. ज्यारे तुं प्रातःकाळे जाग्रत था त्यारे आ-
काश तरफ दृष्टि करजे अने कुद्रतनी शोभा निहाळजे. ते
समये सजीव अने निर्जीव पदार्थो तने देदीप्यमान ला-
गशे. क्षणवार पछी ते पदार्थोनी केवी स्थिति थइ जाय
छे ते ध्यानमां राखजे, ते उपरथी तने आ संसारनी
अनित्य भावनानुं पूरेपूरुं भान थइ आवशे. ते वखते
आत्मानुं अमित सामर्थ्य अने पुद्गलोनी रचनानी तु-
लना करवाथी तारामां आत्मभाव विस्तारवानो प्रयास
करवानी तीव्र इच्छा जाग्रत थशे अने आध्यात्मिक आ-
नंद अनुभववाने तारुं मन उत्सुक थशे. एटले तारुं हृदय
आ संसारना रागरंगने छोडवाने माटे संपूर्ण समर्थ थइ
शकशे.

हे आत्मन् ! तुं भगवान् तीर्थंकरोए जे आ जगत्ने अनादि सिद्ध परम हितकारी मार्ग बताव्यो छे, ते मार्गे चालवानी इच्छा करजे अने आ जगतमां शरण करवा लायक वस्तुनी शोध करजे. पोताना अतुल पराक्रमथी आ षट् खंड पृथ्वीने साधनारा अने महान चमत्कारी दिव्यचक्रना प्रभावथी अजेय बनेला चक्रवर्ती राजाओ अने सदा हर्षथी पुष्ट बनी आनंदमग्न रहेनारा दिव्य प्रभावी देवताओ पण निर्दय यमराजना अतिथि बनी गया छे. तेओए अशरण छतां शरणने माटे दशे दिशा-ओमां दृष्टिपात करी यमराजना विकराळ पंजामांथी मुक्त थवाने माटे घणां फांफां मारेलां, तथापि तेमने कोइ शरण आपी शक्युं नथी. चक्रवर्त्तिओना चक्रनी अद्भुत शक्ति अने देवताओनी दिव्य शक्ति पण शरण आपी शकी नथी. जीवनतत्त्वना विघातक एवा मरणनो धसारो कोइनाथी अटकावी शकायो नथी. ज्यां सुधी शरण रहित एवा मानव कीडा उपर यमराजना दुःसह कटाक्षो पडया नथी, अने ज्यां सुधी भयंकर यमराज पोतानो तीक्ष्ण दंड लइ जीवनना तंतुओने तोडवा उठयो

नथी त्यां सुधीज उन्मत्त मनुष्य मदना विलासोथी विलसतो अने गुणोना गौरवथी गाजतो देखाय छे, पण ज्यारे ते उग्र यमराज तेनो कंठ पकडे छे, त्यारे ते परवश थयेला प्राणीनुं रक्षण करवाने कोइ समर्थ थइ शकतुं नथी. यमराजना कबजे थयेला ते मानवकीटनो प्रताप नष्ट थइ जाय छे, तेनुं उदय पामेलु तेज अस्त थइ जाय छे, तेनुं धैर्य अने पुरुषार्थ विनष्ट थइ जाय छे, अने तेनुं पुष्टि पामेलु शरीर शिथिल बनी जाय छे. ते समये तेनुं सर्वस्व स्वाधीन करवाने स्वजन वर्ग प्रवर्ते छे, पण यमराजना मुखमां ग्रासरुप थयेला ते अशरण जीवने छोडावाने कोइ समर्थ थइ शकतुं नथी.

हे आत्मन, तुं गमे तेवा मणिमंत्रना दिव्य उपायो करीश तोपण तने मरण समये कोइनुं शरण मळी शकवानुं नथी. जो तारे खरुं शरण लेवुं होय तो तारा जीवनमां तारे त्रण उपायो करवाना छे. दान, शील, तप अने भावरुप चतुर्विध धर्मनुं सेवन करवुं, समतानो संग करवो अने शांत सुधारसनुं पान करवुं. ए शरणनी

त्रिपुटी तारा आत्मिकभावनी रक्षा करशे, तेथी तने निराबाध शरण प्राप्त थशे.

ज्ञान तथा दर्शन तरंगमां उल्लास पामतो आत्मा ज आराध्य छे. जे अनात्म कल्पित संसारिक भाव छे तेमांथी कदि पण सत्य सुख मळतुं नथी, तेतो बधो प्रपंच केवळ भ्रमजाळ या मोहजाळरूप ममत्वने वधारनारो छे ए ममत्वमां परवस्तु प्रत्येनी लालसाओ केवळ अज्ञानदशाने जाग्रत करे छे. ए अज्ञानदशाने वश थयेलो अबुध जन विषयना आवेशथी पौद्गलिक परवस्तुओमां आत्मिक कल्पना करी ले छे. ज्यां सुधी ममत्वनी मलिन छायाथी आवृत थयेलुं चित्त परभावनी संवृति–संवरणने हरी लेतुं नथी, त्यांसुधी ते सत्य सुखने मेळवी शकतुं नथी. तेथी महात्माओ उद्घोषणा करी जणावे छे के,- प्रत्येक विवेकी आत्माए पोताना चित्तने आत्मविचार रूप चंदन वृक्षना सुगंधी पवननी लेहेरीना शांतरसनो स्पर्श कराववो.

हे आत्मन् ! तारा हृदयमंदिरमां खरा वस्तुस्व-

रुपना विचारने स्थान आपजे. तेथी तुं तारा खरा स्व-
रुपने ओळखी शकीश. तुं पोते देहधारी जीवरुपे एकलो
छे, एकलो आव्यो छे अने एकलोज जवानो छे. तुं तारा
कर्मना फल पण एकलोज भोगववानो छे. जो तुं विविध
प्रकारनी ममतारुपी मदिराथी मत्त थइश तो तुं तारो
स्वभाव चूकी जइश अने परभावना संगमां रंगाइने आ
संसारचक्रमां लोटाया करीश. हे भव्य ! तारा आत्मस्वरुप
रुप कांचननी साथे परभावरुपी अन्यधातुने जोडीश
नहिं. ए अमूल्य कांचनने शुद्धज राखजे. कर्मना संयो-
गथी आत्माने विषे अनेक रुप थाय छे ते वात लक्षमां
राखजे, तारा आत्माने कर्ममळथी दूर राखजे. एटले वि-
शुद्ध आत्मानुं एकज अखंड अविचळ–निर्विकल्प रुप
तारा अनुभवमां आवशे. जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र
गुणथी व्याप्त एवा अनश्वर वीतराग परमात्मा एकलाज
आनंदमय अनुभव मेहेलमां रमण करे छे, ते प्रभुनी
प्रभाविक प्रतिमा तरफ ध्यान लगाडी तारा आत्माने ते-
ओना जेवो बनाववा यत्न करजे. शांतसुधारसनुं प्रेम-

पूर्वक पान करी विषयातीत सुखरसनो स्वाद लेवामां तारी मनोवृत्तिने सदा जाग्रत करजे."

हे आत्मन् ! आत्मा शिवायनो बधो व्यवहार कल्पित छे,–मनुष्यकृत छे अने तेनुं बीज ममत्व छे प्रत्येक पोत पोतानो व्यवहार पोताना मनने अनुसरी जुदो जुदो कल्पे छे. सुख, दुःख, धर्म, मोक्ष, पुण्य, पाप इत्यादि विषयोनां विविध मतो जोवामां आवे छे, तेनुं कारण पण तेज छे. मनुष्य पोताना ममत्वनुं स्वरुप जेवुं बांधी छे, तेवो ते पोतानो व्यवहार कल्पे छे. आवी रीते मानसिक व्यवहारनी कल्पना प्रत्येक व्यक्तिने आधीन छे, तेने शुद्ध करवी ए मनुष्यना पोताना हाथमां छे. ते स्व अने परना भेदनुं यथार्थ ज्ञान थवाथी थइ शके छे.

आत्मिक तत्त्व ए खरुं आत्मीय तत्त्व छे, बाकीनुं सर्व अन्य छे. ते अन्य उपर आत्मीय भाव कदि पण करवो नहिं, जे पर छे ते परज छे. परनो योग करवाथी पोताना आत्मानुं शुद्ध स्वरुप मलिन थइ जाय छे. पर एवा कर्मना परमाणुओ अंदर पेशारो करीने ज्ञानमय शुद्ध आत्मानी केवी दशा करे छे? ते आपणे संसारमां

प्रत्यक्ष अनुभवीए छीए. ममत्वना पाशमां परतंत्र थइ पडेला आत्माने पोताना अनुपम गुण रत्नोनो विचार कदिपण आवतो नथी. एवो अविचारी आत्मा ते परने माटे महान यत्न करे छे, तेमां सदा आनंद माने छे, तेने इच्छे छे, तेनी प्राप्तिथी प्रीतिने वश थइ जाय छे, तेना रसमां रंगाइ जाय छे अने तेना योगथी विविध जातनी इच्छाओ करे छे. पण ते मूर्ख अज्ञानीने खबर नथी, के जेने माटे हुं आवुं वर्त्तन चलावुं छुं, ते माराथी अन्य छे, अने तेना योगथी हुं मारो निर्मळ स्वभाव भुली गयो छुं. आ संसार चक्रनां परिभ्रमण करावी विविध कदर्थनाओ करावनार, नरक तथा तिर्यचनी योनिमां अनेक पीडाओने पमाडनार अने छेदन भेदननां कष्टो उपजावनार पर पुद्गलोनो संगज छे. ते संगे करीने हुं अत्यंत मुंझाइ गयो छुं. हवे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र लक्षण स्वस्वरुप विना बाकीनुं बधुं पर छे, एवो दृढ निश्चय करी हुं मारुं स्वहित साधवाने तत्पर थाऊं हे आत्मन्! आवा विचारो करी तुं तारा स्वरुपने ओलखजे. अने तारा पोताना घरने संभाळजे. हे आत्मन्! जेनो अवश्य वियोग

थवानो छे, एवा संयोगनो त्याग अने दीनबन्धु एवा जिनेश्वर प्रभुनो आश्रय लइ शिवमार्गनो साथी थवाने शांत सुधारसनुं प्रेमथी पान कर.

अशुचि पदार्थोथी भरेला आ शरीरमांथी शुद्धिनी आशा राखवी, ते आकाशकुसुमवत् छे. जे मूढप्राणीओ शुद्धजलथी वारंवार स्नान करे छे अने सुगंधी चंदनथी शरीरने चर्चित करे छे पण ते अशुचि शरीर कदि पण शुद्ध थइ शकतुं नथी. अस्थि, रुधिर, मज्जा, विष्टा, मूत्र अने श्लेष्मथी भरेला शरीरनी शुद्धि शी रीते थइ शके ? कस्तूरी अने कपूरथी वासित करेलु लशण कदि पण सुगन्धी बनी शकतुं नथी. यावज्जिवित उपकारो करो तोपण दुर्जन सज्जन बनतो नथी. हे आत्मन्! तारा हृदय उपर अशुचिभावनानो आविर्भाव थशे एटले तारा समजवामां आवशे के, स्त्री पुरुषना वीर्य अने रुधिरना विकारथी उत्पन्न थयेलो आ देह सदा अपवित्रज छे ते देहना नव द्वारमांथी गटरनी जेम हमेशां मल वह्या करे छे, ते द्वारना मुख बंध करवामां आव्यां छे, तो पण तेमांथी दुर्गंधना स्रोत नीकल्याज करे छे. अशुचिना कूप

जेवा ते देहनो आदर कोण करे? जेना हृदयमां ज्ञान तथा विवेकना किरणो प्रगटयां छे, तेवा सुज्ञ पुरुषो कदि पण आ देहने पवित्र मानता नथी. अपवित्र देहने पवित्र बनाववानो ममत्व करनारा पुरुषो खरेखरा उपहास्यना पात्र बने छे. हे आत्मन्! तुं ए देह उपर पवित्रतानी भ्रांति करीश नहिं, ए पोते अपवित्र छे अने पवित्र होय तेने अपवित्र करनारो छे. मलयुक्त पुद्गलोना पुंजवाळा ए देहनो जो खरो उपयोग करवो होय तो तेने मोक्षनुं साधन बनावी ले, तेनामां मोक्ष साधननुं उदार सामर्थ्य रहेलुं छे. ते देहने प्राप्त करी ते द्वारा निर्मळ सिद्धांत रुप जलाशयना शांत सुधारसनुं पान कर. एथी तने महान् कल्याणनो लाभ थशे.

आ विश्वना प्राणीओने कष्ट आपनारां कर्मो छे. ते कर्म आश्रव रुपे जीवमां आवी भराय छे. जेम आजु बाजुथी पडता झरणावडे तळाव भराइ जाय छे, तेम सतत आवता कर्मोना आश्रवथी जीव भराइ जाय छे. ते पापरुपी कादवथी चीकणो थयेलो जीव चंचल अने आ-कुल-व्याकुळ बनी जाय छे. जीव ते कष्टमांथी जरा मुक्त

थवा यत्न करवा जाय छे, परंतु समये समये ते आश्रव कर्मने पुनः पुनः सिंच्या करे छे. हे आत्मन्! ते आश्रव रूप भयंकर आवकने बंध करवा यत्न कर. ते आश्रव रुपी शत्रुओ तारा जीवने शांति थवा देशे नहिं. जो तुं ए महान् शत्रुओनी गति अटकावीश नहीं तो पछी आ भवाटवीना भ्रमणमांथी तारो छुटकारो कदि पण थशे नहि. प्रिय आत्मन्! प्रथम ए आश्रवोने ओलखी लेजे. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग ए मुख्य चार आश्रवो छे. ते चार आश्रवोनो परिवार मोटो छे. तेनी संख्या बेतालीश सुधीनी थाय छे. जो तुं तारा आत्म स्वरुपनी आसपास ज्ञानरुपी मजबूत किल्लो बांधीश नहि तो ते आश्रवोनी अजेय सेना तारा आत्मा उपर चडी आवशे अने तारा जीवनना आत्मगुणरुप सर्वस्वने लुंटी तने अधोगतिमां मुकी देशे. माटे तुं प्रथमथी चेती जा. ते महान् आश्रवनी सेनाने पराभव करवाने माटे तारे एक महान् शक्ति हृदयमां धारण करवी पडशे ते शक्तिनुं नाम समता छे. ते समताना अतुल बळथी आत्मानी गुणलक्ष्मीने लुंटनारा उच्छृंखल आश्रवो पराभूत थइ नाशी

जशे, वळी ते आश्रवसेनाने बळ आपनार इंद्रियोना विषयो छे, तेथी तारे ते विषयोथी दूर रहेवा महान् प्रयत्न आदरवो, अने आश्रवयुक्त पापकर्मनो निरोध करवामां तारा बुद्धिबळनो उपयोग करवो.

हे आत्मन्! तु सम्यक्त्वनो आश्रय करी मिथ्यात्व रुप कदाग्रहने हठावजे अने चित्तनी स्थिरता करी आर्त्तध्यान तथा रौद्रध्याननो पराजय करजे. संयमरुपी तीक्ष्ण खड्ग लइ अविरतिनो निग्रह करजे. क्षमाने धरी राखजे एटले तारी पासे क्रोध आवी शकशे नहिं, नम्रतानो आश्रय लेजे एटले अभिमान दूरज नाशी जशे, उज्वळ सरळतानो प्रकाश पाडजे एटले माया भय पामीने नाशी जशे अने संतोषनो मजबूत सेतु बांधी लेजे एटले लोभरुपी दुस्तर समुद्र रुंधाइ जशे हे भव्य! जो तारे दुर्जय एवा मन, वचन अने कायाना त्रण योगने वश करवा होय तो त्रण गुप्तिरुपी तीक्ष्ण शस्त्रो सदा उगामीने उभो रहेजे. एवी रीते आश्रवनो रोध करवा संवरनी भव्य भावना भाववाथी सर्वज्ञना वचन पर श्रद्धारुप सढ वडे सुंदर अने मजबूत एवुं तारुं जीवनरुप वाहाण शुद्ध

योगरुप चंचळ पवनवडे प्रेराइ आ संसाररुप महासागरना प्रवाहने तरीने मोक्षपुरीमां जइ शकशे. हे आत्मन! तारा अध्यवसाय पवित्र राखजे अने संयमने पुष्टि आपनारा सर्वज्ञना वचनरुप पुष्पना मकरंदथी ते अध्यवसायने सुवासित बनावजे. तेम करवाथी ज्ञान अने चरणरुप गुणपर्याय लक्षणवाळा तारा चेतन स्वरुपने तुं सारी रीते ओळखी शकीश अने शांतसुधारसनुं पान करवाने तु संपूर्ण अधिकारी थइ शकीश.

निर्जरानी महान् शक्ति मेळववाने माटे तपस्या करवी जोइए. तप ए चेतननी निर्मळता करवाने माटे एक अनिवार्य साधन छे निकाचित कर्मरुपी दुर्घट पर्वतने तोडनारुं वज्र छे अने अमानुष्य दिव्य तेजने वधारनार ज्योति छे. जेम प्रज्वलित करेलो अग्नि सुवर्णना शुद्ध स्वरुपने प्रगटावे छे, तेम ते तप आत्मानी साथे लागेली कर्मरुप रजनो क्षय करी तीव्र आत्मज्योतिने प्रगटावे छे. महाराजा भरत विश्वना महान् शत्रुओने जीती शक्या हता अने तेथी चक्रवर्ती पद मेळवी शक्या हता, परंतु अंतरना प्रचंड शत्रुओने जीतवाने माटे तेमने बाह्य अने

आभ्यंतर तपनी महान् शक्ति मेळववी पडी हती, पछी ते शक्ति वडे तेओ खरेखरा आत्मविजयी बन्या हता. हे आत्मन ! तुं तारा हृदयमां निर्जरा भावना प्रगट करी बार प्रकारना तपनुं सेवन करजे. ए तप रुप पवनथी तारा पापरुप मेघनी घटा वींखराइ जशे. तारा आत्म स्वरुप उपर निर्मलता रुप सुधानी वृष्टि थशे एटले तारा मनरुप हंसने अपूर्व आनंद प्राप्त थशे. हे भव्य ! ए बाह्य अने आभ्यंतर तप तारा जीवनना स्वरुपने भव्य बनावी देशे. अनशन वगेरे छ प्रकारना बाह्य तपथी तारा इंद्रिय रुपी अश्वो मन रुप लगामने वश थइ निगृहीत थइ जशे. अने प्रायश्चित्त वगेरे छ प्रकारना आभ्यंतर तपथी तारा आत्म ज्योतिने विशेष प्रकाश मळशे ए महा तपना प्रभावथी तुं दोष शुद्धि करी निर्मल बनी शकीश उत्तम साधु पुरुषोनी सेवा करी उपकारीनो अनृणी थइ शकीश, स्वाध्याय करी ज्ञान भक्ति आचरी शकीश, विनय करी खरो गुणग्राही थइ शकीश अने कायोत्सर्ग करी शारीरिक मूर्छा छोडी शकीश. तेथी तुं ए महान् तप गुण संपादन करवा तत्पर थाके जेथी तुं कर्म रुपी अ-

साध्य रोगोनुं उन्मूलन करी शांतसुधारसनो खरो पिपासु बनी आत्माना गुणोनुं गौरव वधारी शकीश.

आ अनादि अने अनंत विश्व रुपी सुंदर मेहेलने टकावी राखनारा दान, शील, तप अने भाव—ए रुप चार स्तंभो छे. महोपकारी अने दयाना महासागर प्रभुए ए चतुर्विध धर्मनुं स्थापन करीने जगत्ने आलोक तथा परलोकनी सत्य उन्नतिनो सन्मार्ग बताव्यो छे. ए धर्मरुप कल्पवृक्षनी सुखद छायामां रहेनारा प्राणीने ते कल्पवृक्षना मधुर फल प्राप्त थाय छे. समृद्धिवाळुं विशाळ राज्य, सती प्रिया, आनंद दायक पुत्र पौत्रादिकनो परिवार, अनुपम सौंदर्य, विद्वत्ता, प्रतिभा, स्वरमाधुर्य, आरोग्य, गुणाभ्यास, सौजन्य अने सद्बुद्धि—ए बधा ते धर्म कल्पवृक्षना मधुर दिव्य फल छे. महान विपत्तिने समये प्राणीनी रक्षा करवाने माटे ए महान् धर्म योद्धो सदा सज्ज थइने उभो रहे छे. तेवा धर्मने दरेक मनुष्ये प्रेमपूर्वक आदर आपवो जोइए. प्रत्येक मनुष्ये पोताना हृदयमंदिरमां ते धर्मनी भव्य सामग्री भरवी जोइए ए भावगम्य भावना मनुष्यने छेवटे आ जगत्नी स्थूल उपाधि-

मांथी मुक्त करी अध्यात्मना रसिक अने आनंद दायक प्रसंगमां लावी मुके छे. ते धर्मरूप महाराजानो मेलाप थवाथी भव्य जीव सदा निर्भय अने निःशोक थइ आ विश्व उपर महान् विजयी बने छे. क्षमा, सत्य, संतोष अने दया वगेरे उत्तम गुणो ते "महाराजा धर्मनो प्रतापी परिवार छे, जेओ उपर ते महाराजा धर्मनी कृपा थाय छे, तेनी सेवा करवाने ते परिवार सदा हाजर रहे छे. तेवा सर्वोत्तम धर्मने साधवाने माटे हे आत्मन्! तारे सदा तत्पर रहेवुं जोइए."

अहो! जेना प्रभावथी देवताओ पण विस्मय पामी जाय एवी स्वर्गीय संपत्ति प्राप्त थाय छे अने जेनाथी पुनः विशाळ भोगवाळा कुळमां जन्म मेळवी शकाय छे एवी असाधारण परमात्मीय पदवी प्राप्त करी आपनारा बोधिरत्नने कयो मूर्ख जीव न सेवे? अनादि निगोद रूप अंधकूपमां रहेनारा अने सदा जन्म मरणना दुःखथी पीडित थता जीवोनो उद्धार करनारा बोधि रत्ननी उपेक्षा शामाटे करवी? तेने मेळववाने माटे तन अने मनथी प्रयत्न करवोज जोइए. जो चिंतामणि समान मानव-

भव प्राप्त थयो, तो तेनो सदुपयोग करवाने बोधिरत्न-नो आश्रय लेवोज जोइए. जो ए रत्न प्राप्त करवामां प्रमाद करवामां आव्यो तो अमूल्य मानवजीवन तद्दन नकामुं थइ पडशे अने आ संसाररूप अगाढ खाडामां निमग्न थइ अनेक विपत्तिओ भोगववी पडशे. सांप्रत काळ विषम छे. मिथ्यात्वनुं घोर अंधकार चारे तरफ प्रसरी रह्युं छे, मनुष्यनुं हित शेमां छे ? तेना अस्तित्वनो उद्देश शो छे ? जीवननुं फल शुं छे ? धन, समृद्धि, अधि-कार, पदवी, पुत्र, दारा आदि अनेक सांसारिक विषयो तरफ जनसमाज विशेष मोह धरतो जाय छे. पोत पो-तानी रुचिने अनुसरी मनुष्यो परस्पर अनुकूलताना सं-बंध उपजावी रागद्वेष कलह प्रमुख विस्तारी जगतमां अ-नेक दुःख परंपरानो वर्षाद वर्षावे छे. आवा वारीक स-मयमां बोधि रत्न जेवा श्रेयस्कारी रत्ननी गवेषणा थवी मुश्केल छे, तेथी प्रत्येक भव्यात्माए सांप्रतकाळना वि-षम प्रसंगमांथी बचवाने माटे ए बोधि रत्नने धारण करवा प्रयत्न आदरवो जोइए.

आवी आवी उत्तम सद्भावनाओने लइने ते धर्म-

वीर महात्माए शारिरीक अस्वस्थताने गणी न हती तेवी स्थितिमां पण लोच कराव्यो अने संवत्सरीने दिवसे शांत हृदये उपवास कर्यो अने पोताना हृदयमां पूर्वना महान तपस्वीओनी उच्च भावना भावी आ समये तेओ महात्माने श्री शांत सुधारसना पद्यो स्मरण मार्गमां आववां लाग्यां. सत्पुरुषो जेनो वारंवार स्वाद ले छे. तेवी उदासीनता रुप सुधा तरंगिणी तेओश्रीना हृदयने स्नान करावा लागी. तेओश्रीनी शांत वृत्तिमांथी परमात्मिक आनंद सागरना उर्मिओ उछळवा लाग्या. शब्द, रुप, रस, गंध अने स्पर्शमां समतानो अनुभव थवा लाग्यो. अने आत्माने उन्नत स्थाने लइ जनारा शुभ ध्याननां तत्त्वो अंतरमां उत्पन्न थवा लाग्यां. आश्विन मासना आरंभमां तो तेओश्रीने जीवनना निर्वाह जेटलो आहार पण अटकवा लाग्यो.

ते स्थितिमां ते मास पसार थयो पछी कार्त्तिक मासमां केवळ दुग्धाहारी थइ गया. ते समये औषधोपचार पण बंध करवामां आव्यो. ते महात्माने तो औषधने स्थाने नीचेनुं श्रीअध्यात्मकल्पद्रुमनुं पद्य औषधरुप थतुं हतुं.

"चित्तबालक ! मा त्याक्षीरजस्रं भावनौषधीः ।
यत्त्वां दुर्ध्यानभूता न छलयन्ति छलान्विषः॥१॥"

" हे चित्तरुपी बाळक ! तुं भावनारुपी औषधीओने अल्पसमय पण दूर करीश नहिं, जे औषधीओना प्रभावथी छलने शोधनारा दुर्ध्यानरुप पिशाचो तने छेतरी शकशे नहिं." महात्मा उपाध्यायजीए ते प्रमाणे लौकिक औषधोना अनादर करी भावनारुप औषधीओनुं सेवन करवा मांडयुं हतुं. तेओनी ध्यानासक्त मनोवृत्ति उपर द्रव्यानुयोगना विषयो के जेओ आत्मानी साथे संबंध धरावनारा छे, तेओ मनन रुपे प्रवर्त्तवा मांड्या पौद्गलिक अने आत्मिक वस्तु तत्त्वो तेओ महात्माना ज्ञानचक्षुनी समीप खडा थया तेओश्रीने आत्मा अने पौद्गलिक पदार्थोनी भिन्नतानुं यथार्थ भान थइ आव्युं अने आत्मिक ज्ञानने मेळववाना मानसिक अने स्थूल प्रसंगो तद्दन ओछा थवा लाग्या. टुंकामां ते महात्मा पोताना पवित्र जीवनना अंत भागे आध्यात्मिक आनंदनो अनुभव करवा पोतानुं आत्मिक बळ प्रतिदिन विशेष धारण करता जता हता.

महाराजश्रीना मांदगीना समाचार जाणी पूज्यपाद परमगुरु श्रीमद्‌विजयकमलसूरीश्वरजी महाराजा के जेओ चातुर्मासना समयमां बोरसदमां बिराजता हता तेओश्री चातुर्मासनी पूर्णता थवानी साथेज त्यांथी विहार करी खंभातमां पधार्या हता. आवी बीमारीना समयमां पण सूरीश्वरजी महाराजश्रीना दर्शनथी महाराजश्रीने अपार आनंद थतो हतो. आ समये सूरीश्वरजी महाराज पण वारंवार उदात्तस्वरे पोतानी मांगलिकवाणी द्वारा अनुपम शान्ति आपता हता. आ समये पूज्यपाद सूरीश्वरजी महाराजश्रीए पोतानी परमगुरु तरीकेनी खरेखरी फरज बजावी हती. आ समये समाधि राखवामां घणीज सहाय करी हती. आ समये पूज्यपाद श्रीमद् विजयसिद्धि सूरीश्वरजी महाराजश्रीना सुप्रसिद्ध शिष्यरत्न अनुयोगाचार्य श्रीमान् मेघविजयजी गणी विगेरे म्हेसाणाथी विहार करी महाराजश्रीनी सेवाने अर्थे आवी पहोंच्या हता. आ समये लगभग त्रीस मुनिवरो एकत्रित थया हता.

विक्रम संवत् १९७५ ना वर्षना मागसर वदी अष्टमीनो दिनमणि निस्तेज थइ उदित थयो हतो. गगन-

मंडळ उपर किरणोनी माळा झांखी देखाती हती. समुद्रना तीर उपर शांति प्रसरी रही हती. कुद्रते जाणे शोकनो पोशाक पेहेर्यो होय तेवो चारे तरफ देखाव थइ रह्यो हतो.

ए स्तंभतीर्थनी भूमिमां एक भारतना भूषणरूप योगींद्र रविनो अस्त थवानो हतो. ओगणचालीस वर्षना चारित्र पर्यायथी भारतना जैन क्षेत्रोनो विकाश करी अने पोतानी भव्यबुद्धि अने आत्मानी संगीतमय भक्तिनो प्रसाद भारतीय प्रजाने आपी सौराष्ट्रमां प्रगट थयेलो एक आ भूमंडळनो महान् आत्मा, श्रीवीर शासनने दीपाव-नारो एक महान् ज्योतीरूप दीपक देवलोकमां पोतानी दिव्यताने दर्शाववाने चाल्यो गयो स्तंभतीर्थनी पवित्र भूमिमां "जय जय नंदा जय जय भद्रा" ए ध्वनिओनी साथे ते महात्मानुं स्थूल शरीर अग्नितत्त्व साथे मळी गयुं ते समये आवा घोर कलि काळमां तेवा अद्वितीय आत्मानो वियोग थवाथी वडिल मुनिओए, तेओश्रीनी उच्चभावना भरेली भक्तिने, ज्ञानार्थी मुनिओए तेओश्रीना सुबोधक सहवासना अनुपम लाभने शिष्यमुनिओए तेओश्रीनो

उत्तम सेवाना लाभने अने भक्त संघोए तेओश्रीना अपार उपकारोने संभारी संभारी ते महात्माना अनेक सद्गुणोनुं स्मरण कर्युं. आ शोककारक समाचार भारतना अनेक देशोमां प्रसरी गया मोटा मोटा शहेरोमां जैन प्रजाए हडताळो पाडी अने देव वंदनाओ करवा मांडी ते महात्मानी मांदगी सांभळी आसपासना प्रदेशोमांथी आवेला मुनिओए ते महोपकारी महात्मानी समाधिना दर्शन करी योग्य उत्तर क्रिया करी तेओश्रीना काळधर्मने सांभळतांज तेओश्रीना पूर्व परिचयना प्रेमने लइने शास्त्रीजी नर्मदाशंकरे नीचेनां पद्यो रच्यां हतां.

शार्दूलविक्रीडितम्.

" सच्चारित्रसमाचरातिचतुरान् संवेगसंशोभितान्, हृत्सङ्गीतसुगीततीर्थकरसद्भक्तीन् सुसत्त्वान्वितान् । कष्टाचीर्णविहारभारतजनोद्धारप्रवृत्तान् सदा, जातं निःशरणं सुवीरविजयोपाध्यायान् विना भारतम् ॥ १ ॥ "

"उत्तम प्रकारनुं चारित्र पाळवामां अति चतुर, संवे-

गथी सुशोभित, हृदयना भाव भरेला संगीतवडे भगवान् श्रीतीर्थंकरोनी भक्तिने गानारा, महासत्त्ववाळा अने परीषहो सहन करी विहार करीने आ भरतक्षेत्रना भव्य आत्माओनो उद्धार करवामां सदा प्रवृत्त रहेनारा महात्मा श्रीवीरविजयजी उपाध्यायजी विना हवे आ भारत क्षेत्र आजे शरण रहित थइ गयुं छे."

स्रग्धरा.

"येषां सर्वज्ञवाणीसमुचितविधयः सत्यचारित्रधर्मा, येषां संवेगवेग प्ररचितसमतासंयुतं सच्चरित्रम् । यैः सद्वाणीप्रबोधादुपकृतिततयो वर्द्धिता भारतेऽस्मिन्, वीरोपाध्यायपादान् विमलतरगुणान् विस्मरामः कथं तान् ॥२॥"

जेओना सत्य चारित्रना धर्मो श्री सर्वज्ञ प्रभुनी वाणीने अनुसारे रहेला हता, जेओनुं सत् चरित्र संवेगना वेगवडे प्राप्त थयेली समताथी युक्त हतुं अने जेओए पोतानी उत्तमवाणीना उपदेशथी आ भारतक्षेत्र उपर अनेक

उपकारोनी श्रेणीओ करेली छे, तेवा महात्मा उपाध्या-
यजी श्रीवीरविजयजीने अमो शी रीते भुली जइशुं? ॥२॥

श्रीमद् उपाध्यायजीनी जीवन रेखाओ.

श्रीमान उपाध्यायजीना चारित्र जीवननी उज्वळता घणी आकर्षक बनी छे. ते महात्मा ज्यां ज्यां विचर्या छे, त्यां त्यां दिव्य धर्मज्योतिनो सारो प्रकाश पड्यो छे अने तेओश्रीए जीवोने उंडामां उंडु आत्मानुं रहस्य दर्शावी आप्युं छे. तेओश्रीनी वाणीमां कोइ एवो अद्भुत प्रभाव रहेलो हतो के जेना श्रवणथी श्रोताओ तल्लीन थइ जता, ते शक्तिना बळथी तेओश्री श्रोताओना हृदयमां धर्मभावनाना प्रवाहो वेहेवरावता हता. तेओश्री हमेशा प्रसन्नतानी मूर्त्तिरुपे रहेता अने विनय तथा वि-
वेकनी साथे वाणीनो उपयोग करता तेथी जनमंडळ उपर

तेमनी प्रभा सारी पडती अने ते द्वारा व्यवहार अने धर्मना सर्व अंगोने आरोग्य अने बळ अर्पवा माटे तेओ सर्व रीते समर्थ थइ शकता हता. ते महात्मानी प्रकृति शांत अने गंभीर हती तेओश्रीनी आकर्षक भव्य मुद्रा जनमंडळमां प्रेमनुं पोषण करवाने अने भक्तिभावने वधारवाने संपूर्ण समर्थ थइ शकती हती. सत्य, सत्त्व अने दृढता ए त्रण गुणोनी त्रिपुटीनो योग ते महात्माना उन्नत जीवननो मूळ पायो हतो अने ते उपरज तेओश्रीना सर्व जीवन प्रासादनी रचना थइ हती. ते प्रासादनी पवित्र छाया नीचे रही ते महात्माना अनेक शिष्योए अने भक्तोए अनुकंपा, बंधुभाव, पवित्रता, भक्ति, श्रद्धा अने धार्मिक उत्साह प्राप्त कर्यो हतो. तेओश्रीनी मूळ प्रकृति विचारशीळ अने संशोधक हती तेथी तेओ सतत एक विद्यार्थी तरीके रहेता अने पोताना अभ्यासमां वधारो कर्या करता हता. तेमनामां बुद्धि, भक्ति, विवेचक निरीक्षण शक्ति वगेरे गुणो बहु सारा अंशमां जोवामां आवता तेथी तेओ शंका—समाधान उत्तम रीते करी शकता हता. ते साथे तेओमां धार्मिक तत्त्वज्ञान तथा

दिव्य सत्य शोधी प्राप्त करवानी आतुरतामय अभिलाषा सदा रह्याज करती हती. तेओमां पोताना महोपकारी गुरु तरफ पूर्ण भक्ति हती, ते साथे पोताना वडिल वर्ग तरफ पण संपूर्ण पूज्य भाव हतो, तेथी वारंवार तेओश्री तेओना समागमनो अने सेवानो आनंद लेवा जता अने ते आनंदमांज पोताना चारित्र जीवननी कृतार्थता समजता हता.

प्रभु भक्तिना भावोल्लासने प्रगट करवामां तो तेमनी अद्‌भुत शक्ति हती, ते शक्तिनो विकाश करवाना साधन रुपे संगीतनी कळा तेओश्रीने स्वाभाविक रीते प्राप्त थइ हती. ते महात्माना संगीतमां माधुर्य हतुं, ज्यारे ते महात्मा मधुर कंठालापथी भक्तिनां गीतो गाता त्यारे ते स्थळ मधुर ध्वनिथी अने दिव्य वातावरणथी आंदोलित थइ जतुं अने सर्व श्रोतृमंडळ तल्लीन बनी भावोल्लासथी भरपूर थइ जतुं हतुं.

ते महात्मानो शिष्यवर्ग तरफ अपूर्व प्रेम हतो तेओश्रीना शिष्यपरिवारमां मुख्य अने विद्वान् शिष्य पंन्यासजी महाराज श्रीमद् दानविजयजी छे जेम संगीतना सौत

खरो मुख्य गणाय छे, तेवी रीते ते महात्माना उपदेश संगीतथी मुख्य सात शिष्यो थयेला हता. जेओना नाम पंन्यासजी श्रीदानविजयजी महाराज ' ' श्री नयविजयजी ' ' श्री रुपविजयजी ' ' श्री हेतविजयजी ' ' श्री केसरविजयजी ' ' श्री विनयविजयजी ' अने ' श्री मणिविजयजी ' छे. तेओमां ' श्री नयविजयजा ' अने ' श्री रुपविजयजी ' हाल कालधर्मने पाम्या छे. आ सात शिष्योनो परिवार पण वृद्धि पाम्यो छे. पंन्यासजी श्री दानविजयजी ' ने पण छ शिष्यो छे. तेओना नाम श्री प्रेम विजयजी गणी ' श्री सोभाग्यविजयजी ' श्री नायकविजयजी ' ' श्री मंगलविजयजी ' ' श्री उद्योतविजयजी ' अने श्री मेरुविजयजी छे. तेओमां ' श्री सौभाग्यविजयजी' हाल कालधर्मने पामी गया छे. 'श्रीनयविजयजी'ना श्री पद्मविजयजी ' नामना शिष्य छे, अने ' श्री विनय विजयजीने ' श्री चंपकविजयजी ' नामे एक शिष्य छे. ' पंन्यासजी श्रीमान् दानविजयजोना शिष्य ' ' श्री प्रेम विजयजी गणीने 'श्रीरामविजयजी' 'श्री मनोहरविजयजी' अने ' श्री कैवल्यविजयजी ' नामे त्रण शिष्यो छे आ म-

माणे हाल ते महात्मानो परिवार आ भारतभूमि उपर विचरे छे अने ते महात्माना परोपकारोनुं सदा स्मरण करी ते स्वर्गवासीनी धार्मिक सत्कीर्त्तिने प्रसारे छे. ते महात्माना जीवनमांथी शिष्यप्रेमना पाठ शीखवा योग्य हता. तेओश्रीए पोताना शिष्यो-नो साथे जे वर्त्तन चलाव्युं छे, अने तेओनी भक्तिनी भावना स्वीकारी छे, तेवुं वर्त्तन हाल थोडाज गुरुमां दे-खातुं हशे. तेओश्री चारित्र पालनने माटे चुस्त रहवानो बोध शिष्योने आपता अने तेओ समानता, ज्ञान अने उत्साहमां आगळ वधी खरेखरी अनगारता, संस्कृति तथा हृदय प्रेरणा संपादन करे एम तेओ इच्छता ते साथे आध्यात्मिक दृष्टिए विश्वावलोकन करी शांतिनुं अखंड साम्राज्य साधवा माटे प्रयत्न करवा भलामण करता हता. ते उपरांत उच्चभावना, इंद्रियोना विषयो पर समभाव, अने आत्म स्वरुपनी विचारणा ए त्रण तत्त्वो संपादन क-रवा तेमनुं लक्ष सदा खेंचता हता.

ते महात्माना चारित्र जीवनमां केटला एक लौकि-क उन्नतिनां तत्त्वो पण देखातां हतां. अने ते तत्त्वोने

माटे तेओश्री गृहस्थ वर्गने सारो उपदेश आपता हता. गृहस्थावासमां रही कल्याणना मार्गो केवी रीते सधाय छे? ते विषेना तेओश्रीना उपदेशो मनन करवा जेवा हता. गृहस्थावास ए संसारनी परंपराने वधारवानुं मुख्य साधन छे, तोपण जो तेमांथी उच्च वर्त्तन राखी शकाय तो ते भवांतरमां पण चारित्रादिद्वारा मुक्ति पण मेळवी शकाय छे, एम तेओश्री सारा दृष्टांतो आपी सिद्ध करी शकता हता. वर्त्तमान जमानामां गृहस्थोनुं शुं कर्त्तव्य छे, ए विषे ते महात्मा सारुं विवेचन करी समजावता अने कल्याणनी खरी दिशाओ दर्शावी तेयनो प्रेम संपादन करता. तेमनी उपदेश वाणीमां असाधारण माधुर्य अने गौरव हतुं, तेथी तेमना उपदेशनी असर तरत थती हती धर्म अने संसारिक सुधारानी बाबतमां प्राचीन अने नवीन आचारमांथी तेओ सारां तत्त्वो दर्शावी शकता तेथी ते महात्माए घणा आत्माओने मुंझवणमांथी तार्या हता.

आ प्रमाणे ते महात्मानी जीवन रेखाओ के जेओ तेओश्रीना अंतरात्माना आदर्श जेवी छे. ए भावना भ-

रेली भक्ति, ए करुणा अने प्रेम भर्युं हृदय, ए शांत प्र-
भाववाळी बुद्धि, ए चळकतु चारित्राभिमान, ए धार्मिक
उत्साह, ए विशाळ वैराग्य, ए कल्याणकारी सामर्थ्य-
जे क्षणवार पण विसरी शकाता नथो ए अद्वितीय, प्रा
तःस्मरणीय अने वंदनीय आत्मा जे आ विशाळ भारत-
मांथी सदाने माटे अस्त थइ गया. ए कल्याण मूर्त्ति उ-
पाध्यायजीना उद्‌गारो तेओश्रीना उपदेशना महा वाक्यो
अने सत् कार्यो तेओश्रीनी समाधी थया छतां चीरकाळ
रहेशे. जेने माटे नीचेनुं पद्य सदा स्मरणीय थइ पडशे.

" विजयानन्दसूरीणां वीरोपाध्यायसंयुजाम्
अजरामरता नाम्नोर्यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥१॥"

ॐ

॥ गुरु गुण ज्ञान ॥

(१)

घडी धन आजकी प्यारे, गुरु दरशन किये सारे ॥ टेक॥
गुरु है सकल गुण धारक, पापको दूर है कारक ।
ज्ञानके पूरे जो प्रेमी, हमें संसारसे तारे ॥ घडी ॥ १ ॥

गुण पच्चवीस अति सोहे, दरश भविजनका मन मोहे ।
शोभता चन्द्रसे बढकर, महाव्रत पंच द्रढ धारे ॥ घडी ॥२॥
प्रभा चहरेकी बहु सारी, सूर्य सम तेज भी भारी ।
देखकर वादी थरराते, उपाध्याय सर्व गुण धारे ॥ घडी ॥३॥
गुरुजी करत जब भाषण, भवि मन होत आनंग ।
एक दिल प्रेमसे सुनते, नहीं मन चपलता धारे ॥ घडी ॥४॥
विजय श्रीवीर गुरु ऐसे, चन्द्र तारें में है जैसे,
श्री संघ जैनमें चमके, गुरुजी दासको प्यारे ॥ घडी ॥ ५ ॥

गुरु चरण सेवक–रूपचन्द्र, बीकानेर.

मुनि वीरविजय महाराज भविक हितकारी
विद्याके सागर पंचमहाव्रत धारी ॥ टेर ॥
श्री सकल संघसे उपाध्याय पद पाया,
फिर शिष्य वर्गको जैन सिद्धान्त सिखाया,
दुर ध्यान छोडकर शुभ ध्यानको ध्याया,
आश्रवको त्याग, सम्बरमे चित लगाया ।
पच्चवीस गुणोंकरी सोहे गुण भंडारी ॥मुनि० ॥१॥
मुनि पञ्च समिति और तीन गुप्तिके धारक,

चारों कषाय और आठ कर्म संहारक, ।
त्यागी वैरागी महा मन्त्र मन धारक,
जिन देव धर्मके है जगमें प्रचारक ।
शुद्ध संयम पालनहार बडे आचारी ॥ मुनि० ॥२॥
करे षट् काया प्रतिपाल दया व्रत धारा,
मुनि काम क्रोध और लोभ मोहको टारा ।
लेकर तपकी तलवार विषयको मारा,
शुद्ध संयम लेकर त्याग दिया जग सारा ।
सिद्धान्तके ज्ञाता मुनिवर पर उपकारी, ॥मुनि०॥३॥
दश विध पाले यति धर्म सप्त भय टाले,
नव बाड करी मुनि ब्रह्मचर्य व्रत पाले, ।
पञ्च इन्द्रिय वश करी आठ कर्म भय टाले,
शुद्ध तत्त्व प्रकाशी, जैन धर्म उजवाले ।
चारों कषाय और विकथा चार निवारी ॥मुनि०॥४॥
जहां जहां पर मुनिवर विहार कर जाते,
श्री संघमें वहां आनन्द मंगल हो जाते ।
अरु राग द्वेष बल छिनमें गुरु घटाते,
वादी जन कोइ नहीं सामने आते ।

बावीस परिषह सहे गुरु ब्रह्मचारी ॥ मुनि० ॥५॥
मुनि जैनका डंका जगमे खूब बजाया,
श्री वीरका शासन भूतल पर चमकाया।
श्रीजिन आगम और नय निक्षेप मन भाया,
दे करके शुद्ध उपदेश हमें समझाया।
एसे गुरुके गुण गावें, पावे भवपारी ॥ मुनि० ॥६॥
सुनसुन श्री गुरु महाराजकी अमृत वानी,
शुद्ध समकित पावे जगमें कितनेही मानी।
जिन जैनधर्मकी उत्तमता पहचानी।
गुणवान गुणोंकी खानि गुरु है ज्ञानी
मानिकचन्द्र जावे चरण कमलपर वारी ॥मुनि० ॥७॥

चरण रज सेवक **मानिकचन्द शेठ कलकत्ता.**

ॐ शांति शांति शांति.

महोपाध्याय श्रीमद् वीरविजयजी महाराजनुं जीवन चरित्र संपूर्णम् ॥